Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रावणाचार्यविरचित

अर्कप्रकाश

भाषाटीकासहित

टीकाकार

पण्डित देवीसहाय शुक्ल

प्रकाशक

नवलकिशोर बुकडिपो

लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित

सन् १९३५ ई०

नवीं बार]

[सर्वाधिकार रक्षित०

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भूमिका

वैद्यक-शास्त्र में 'अर्कप्रकाश' अपने ढंग का एक निराला ग्रंथ है। इसमें अर्कों के बनाने की विधि, अर्कों की प्रशंसा, प्रत्येक रोग पर अर्क देने का विधान और अनुपान बतलाया गया है। सारांश यह कि इस ग्रंथ में सम्पूर्ण रोगों की चिकित्सा अर्कों के ही द्वारा बतलाई गई है। यह भी कहा गया है कि कल्क, चूर्ण और क्वाथ की अपेक्षा अर्क में अधिक गुण हैं। वास्तव में यह बात है भी ऐसी ही, अर्क औषध का सार है और चूर्ण आदि की अपेक्षा गुणकारक तथा सेवन करने में भी आसान है। हाँ, उसके बनाने में कुछ कठिनाई है अवश्य, और इसी से वैद्य लोग अर्क बहुत कम खींचते हैं, दूसरे प्रकार की औषधों से ही काम चलाते हैं। यदि यह ग्रंथ अपने पास हो तो अर्क खींचने में बड़ी सुविधा हो।

आधुनिक समय में किसी पुस्तक का नाम सुनते ही यह प्रश्न उठता है कि इस पुस्तक का बनानेवाला कौन विद्वान् है और किस देश में किस समय उसका जन्म हुआ। इसी प्रकार और भी अनेक बातें ग्रंथकार के विषय में जानने की उत्कंठा हो जाती है। किन्तु हमारे देश के प्राचीन विद्वान् शायद अपनी प्रसिद्धि नहीं चाहते थे। इसलिए किसी ग्रंथकार ने अपना पूरा परिचय अपने ग्रंथ में नहीं दिया अथवा सम्भव है, उस समय का सभ्य-समाज इस बात को उचित न समझता रहा हो। जो हो, किसी कारण से हो, प्राचीन समय के किसी ग्रंथ से उसके रचयिता का पूरा पता नहीं मिलता। यदि किसी ग्रंथकार ने बड़ी उदारता की, तो अपना और अपने बाप-दादे का नाम अपनी पुस्तक में लिख दिया; पर अपने ग्रंथ बनाने का समय तो किसी ने भी नहीं बतलाया। अनेक ग्रंथ तो ऐसे हैं,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जिनके ग्रंथकारों ने अपना नाम भी नहीं दिया, बल्कि किसी प्राचीन प्रसिद्ध विद्वान् का नाम देकर अपने को गुप्त रक्खा। यही हालत इस ग्रंथ के रचयिता की भी जान पड़ती है। क्योंकि इस ग्रंथ के रचयिता बतलाये गये हैं, लंकाधिपति राक्षसराज रावणाचार्य; किन्तु ऐतिहासिक बातों पर ध्यान देने से यह बात वैसी ही जान पड़ती है, जैसा हम ऊपर कह चुके हैं। क्योंकि इस समय वैद्यक-शास्त्र के सबसे प्राचीन चरक-सुश्रुत आदि जितने ग्रंथ मिलते हैं, उनके रचयिता भी रावण के बाद के ही ठहराये गये हैं, तो फिर यह ग्रंथ, जो चरक-सुश्रुत आदि ग्रंथों से तो प्राचीन कहा नहीं जा सकता, रावण का बनाया हुआ कैसे मान लिया जाय। खैर, बनाया हुआ किसी का भी हो, किन्तु इस ग्रंथ का रचयिता बड़ा अनुभवी विद्वान् था और ग्रंथ बहुत ही उपयोगी बना।

हमारे यहाँ इस ग्रंथ के सात संस्करण हो गये और हजारों की संख्या में बिक गये। इधर कई वर्षों से हम इस विचार में थे कि इस बार इस ग्रंथ को और भी अच्छे ढंग से प्रकाशित करेंगे। यही कारण है कि इस संस्करण के प्रकाशित होने में देर लगी। इस बार प्रत्येक श्लोक के नीचे उसका अनुवाद रख दिया गया है। हाँ, जहाँ कहीं कई श्लोकों से एक विषय की पूर्ति होती है, वहाँ उन श्लोकों को एक साथ रख कर उनके नीचे अनुवाद दिया गया है। इसके सिवा कई अनुभवी वैद्यों की सहायता से इसका सम्पादन किया गया है और जहाँ तक हो सका, हिन्दी इतनी सरल कर दी गई है कि साधारण पढ़े-लिखे लोग भी इससे लाभ उठा सकें।

प्रकाशक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय-सूची

पहला शतक

विषय	पृष्ठ
मन्दोदरी और रावण का संवाद	२
औषधों के भेद	४
पञ्चाङ्ग	५
द्रव्यों के स्वरूप	६
षट् रस	६
मधुर रस	६
अम्ल रस	६
लवण रस	७
तिक्त रस	७
कटु रस	७
कषाय रस	७
पृथिवी आदि पञ्च भूतों के गुण	८
गुरु और स्निग्ध के गुण	८
तीक्ष्ण और रूक्ष के गुण	८
लघु गुण	८
उष्ण और शीत का बल	९
जाङ्गल और अनूप देश की औषधों, दक्षिण और मध्यदेश की औषधों के गुण	९
रस के पाक....	१०
मधुर और अम्लपाक के गुण	१०
कटुपाक के गुण	१०
औषधों का प्रभाव	१०
औषधों के पाँच भेद	११
औषधों में गुणों की न्यूनाधिकता	१२
अर्क की प्रशंसा	१२
अर्क यन्त्र बनाने की मिट्टी	१२

विषय	पृष्ठ
अर्कपात्र बनाने की विधि	१३
जीर्णास्थि मृत्तिकापात्र	१५
छः प्रकार की अग्नि के नाम	१८
धूमाग्नि के लक्षण	१९
दीपाग्नि के लक्षण	१९
मन्दाग्नि के लक्षण	१९
मध्यमाग्नि के लक्षण	१९
खराग्नि के लक्षण	१९
भटाग्नि के लक्षण	१९
अर्क निकालने के लिए अग्नि का समय	२०
अर्क निकालने के लिए ईंधन	२०
अर्क रखने का पात्र	२०
अर्क पीने की विधि	२०
अर्क की प्रशंसा	२१
दूत के वचनों का विचार	२१
आतुरोद्धार चक्र	२३

दूसरा शतक

विषय	पृष्ठ
औषधों के पाँच भेद	२४
अर्क निकालने की विधि	२४
औषधों की परख	२५
दूधवाली औषधों का अर्क निकालने की विधि	२७
पत्तों और नीरस औषधों का अर्क निकालने की विधि	२७
फलों और काष्ठों के अर्क निकालने की विधि	२८

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय	पृष्ठ
पक्के फलों और फूलों के अर्क निकालने की विधि	२९
कायफल आदि काष्ठों के अर्क निकालने की विधि	२९
द्रव पदार्थों के अर्क निकालने की विधि....	३०
अर्क निकालने के समय औषधों के ढक्कन	३०
द्रव पदार्थों के ढक्कन	३०
स्तम्भक द्रव्यों का वर्णन	३१
अर्क की दुर्गन्ध निकालने की विधि	३२
अर्कों को शुद्ध रखने के लिए गन्धक की धूप	३२
वातादि दोषों को दूर करने की धूप	३३
चन्दनादि सुगन्धित वस्तुएँ	३३
द्वादशाङ्ग धूप	३३
दशांग धूप	३४
प्याज और लहसुन की दुर्गन्ध दूर करने की विधि	३४
मांसों के अर्क की प्रशंसा	३६
मांस के तीन भेद	३७
कोमल मांस के अर्क की विधि	३७
कठिन मांस का अर्क निकालने की विधि....	३८
घन मांस का अर्क निकालने की विधि....	३८
शंखद्राव बनाने की विधि	३८
कोमल मांसवाले जीव	४०
कठिन मांसवाले जीव	४०
घन मांसवाले जीव	४०
अन्नादिकों की मदिरा बनाने की विधि....	४१
आरनाल और धान्याम्ल मदिरा	४२
गण्डा की मदिरा	४२
सूक्त मदिरा	४२
अरिष्ट	४२
सुरा	४३
शीत रस	४३
सात्विकी आदि मदिरा	४३
वारुणी मदिरा	४४
मादक द्रव्यों का अर्क	४४
धतूरे आदि के बीजों का अर्क	४४

तीसरा शतक

विषय	पृष्ठ
हड़े का अर्क	४५
बहेड़े का अर्क	४५
आँवला का अर्क	४५
सोंठ का अर्क	४५
अदरक का अर्क	४५
पिप्पली का अर्क	४५
कालीमिर्च का अर्क	४६
पिपरामूल का अर्क	४६
चव्य का अर्क	४६
गजपिप्पली का अर्क	४६
चीत का अर्क	४६
अजवायन का अर्क	४६
अजमोद का अर्क	४६
खुरासानी अजवायन का अर्क	४७
सफ़ेद जीरा का अर्क	४७
काला जीरा का अर्क	४७
कलौंजी का अर्क	४७
धनियाँ का अर्क	४७

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय		पृष्ठ
सौंफ का अर्क	....	४७
सोया का अर्क	....	४७
लालमिर्च का अर्क	....	४७
मेथी का अर्क	....	४७
वनमेथी का अर्क	....	४८
हालों का अर्क	....	४८
हींग का अर्क	....	४८
बच का अर्क	....	४८
खुरासानी वच का अर्क	....	४८
कुलिंजन का अर्क	....	४८
स्थूलग्रंथि नामक कुलिंजन का अर्क		४८
दूसरे देश की बच का अर्क		४८
हाऊबेर का अर्क	....	४९
बड़े हाऊबेर का अर्क	....	४९
बायबिडंग का अर्क	....	४९
तुमरू का अर्क	....	४९
वंशलोचन का अर्क	....	४९
समुद्रफेन का अर्क	....	४९
जीवक का अर्क	....	४९
ऋषभक का अर्क	....	४९
मेदा का अर्क	....	५०
महामेदा का अर्क	....	५०
काकोली का अर्क	....	५०
क्षीरकाकोली का अर्क	....	५०
ऋद्धि का अर्क	....	५०
वृद्धि का अर्क	....	५०
मुलेठी का अर्क	....	५०
जलमुलेठी का अर्क	....	५१
कम्पिला का अर्क	....	५१
अमलतास का अर्क	....	५१
चिरायता का अर्क	....	५१
कुम्भेर का अर्क	....	५१

विषय		पृष्ठ
मैनफल का अर्क	....	५१
रास्ना का अर्क	....	५१
नागदमन का अर्क	....	५२
माईं का अर्क	....	५२
तेजबल का अर्क	....	५२
मालकांगनी का अर्क	....	५२
कूट का अर्क	....	५२
पोहकरमूल का अर्क	....	५२
स्वर्णक्षीरी का अर्क	....	५२
काकड़ासिंगी का अर्क	....	५२
कायफल का अर्क	....	५३
भारंगी का अर्क	....	५३
पाषाणभेद का अर्क	....	५३
कुसुम का अर्क	....	५३
धाय के फूलों का अर्क	....	५३
मँजीठ का अर्क	....	५३
लाख का अर्क	....	५३
हल्दी का अर्क	....	५४
वनहल्दी का अर्क	....	५४
कपूरहल्दी का अर्क	....	५४
दारुहल्दी का अर्क	....	५४
रसौत का अर्क	....	५४
बाकुची का अर्क	....	५४
चकौड़ (पँवार) का अर्क		५४
अतीस का अर्क	....	५४
लोध का अर्क	....	५४
पठानीलोध का अर्क	....	५५
भिलावां का अर्क	....	५५
गुर्च का अर्क	....	५५
बेल का अर्क	....	५५
कुम्भेर का अर्क	....	५५
पान का अर्क....	....	५५

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय	पृष्ठ
पक्के फलों और फूलों के अर्क निकालने की विधि	२६
कायफल आदि काष्ठों के अर्क निकालने की विधि	२६
द्रव पदार्थों के अर्क निकालने की विधि	३०
अर्क निकालने के समय औषधों के ढक्कन	३०
द्रव पदार्थों के ढक्कन	३०
स्तम्भक द्रव्यों का वर्णन	३१
अर्क की दुर्गन्ध निकालने की विधि	३२
अर्कों को शुद्ध रखने के लिए गन्धक की धूप	३२
वातादि दोषों को दूर करने की धूप	३३
चन्दनादि सुगन्धित वस्तुएँ	३३
द्वादशाङ्ग धूप	३३
दशांग धूप	३४
प्याज और लहसुन की दुर्गन्ध दूर करने की विधि	३४
मांसों के अर्क की प्रशंसा	३६
मांस के तीन भेद	३७
कोमल मांस के अर्क की विधि	३७
कठिन मांस का अर्क निकालने की विधि....	३८
घन मांस का अर्क निकालने की विधि....	३८
शंखद्राव बनाने की विधि	३८
कोमल मांसवाले जीव	४०
कठिन मांसवाले जीव	४०
घन मांसवाले जीव	४०
अन्नादिकों की मदिरा बनाने की विधि....	४१
आरनाल और धान्याम्ल मदिरा	४२
शण्डा की मदिरा	४२
सूक्त मदिरा	४२
अरिष्ट	४२
सुरा	४३
शीत रस	४३
सात्विकी आदि मदिरा	४३
वारुणी मदिरा	४४
मादक द्रव्यों का अर्क	४४
धतूरे आदि के बीजों का अर्क	४४

तीसरा शतक

विषय	पृष्ठ
हड़े का अर्क	४५
बहेड़े का अर्क	४५
आँवला का अर्क	४५
सोंठ का अर्क	४५
अदरक का अर्क	४५
पिप्पली का अर्क	४५
कालीमिर्च का अर्क	४६
पिपरामूल का अर्क	४६
चव्य का अर्क	४६
गजपिप्पली का अर्क	४६
चीत का अर्क	४६
अजवायन का अर्क	४६
अजमोद का अर्क	४६
खुरासानी अजवायन का अर्क	४७
सफ़ेद जीरा का अर्क	४७
काला जीरा का अर्क	४७
कलौंजी का अर्क	४७
धनियाँ का अर्क	४७

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय	पृष्ठ
सौंफ का अर्क	४७
सोया का अर्क	४७
लालमिर्च का अर्क	४७
मेथी का अर्क	४७
वनमेथी का अर्क	४८
हालों का अर्क	४८
हींग का अर्क	४८
बच का अर्क	४८
खुरासानी बच का अर्क....	४८
कुलिंजन का अर्क	४८
स्थूलग्रंथि नामक कुलिंजन का अर्क	४८
दूसरे देश की बच का अर्क	४८
हाऊबेर का अर्क	४९
बड़े हाऊबेर का अर्क	४९
वायबिडंग का अर्क	४९
तुमरू का अर्क	४९
वंशलोचन का अर्क	४९
समुद्रफेन का अर्क	४९
जीवक का अर्क	४९
ऋषभक का अर्क	४९
मेदा का अर्क	५०
महामेदा का अर्क	५०
काकोली का अर्क	५०
क्षीरकाकोली का अर्क	५०
ऋद्धि का अर्क	५०
वृद्धि का अर्क	५०
मुलेठी का अर्क	५०
जलमुलेठी का अर्क	५१
कम्पिला का अर्क	५१
अमलतास का अर्क	५१
चिरायता का अर्क	५१
कुम्भेर का अर्क	५१
मैनफल का अर्क	५१
रास्ना का अर्क	५१
नागदमन का अर्क	५२
माईं का अर्क	५२
तेजबल का अर्क	५२
मालकांगनी का अर्क	५२
कूट का अर्क	५२
पोहकरमूल का अर्क	५२
स्वर्णक्षीरी का अर्क	५२
काकड़ासिंगी का अर्क	५२
कायफल का अर्क	५३
भारंगी का अर्क	५३
पाषाणभेद का अर्क	५३
कुसुम का अर्क	५३
धाय के फूलों का अर्क	५३
मँजीठ का अर्क	५३
लाख का अर्क	५३
हल्दी का अर्क	५४
वनहल्दी का अर्क	५४
कपूरहल्दी का अर्क	५४
दारुहल्दी का अर्क	५४
रसौत का अर्क	५४
बाकुची का अर्क	५४
चकौड़ (पँवार) का अर्क	५४
अतीस का अर्क	५४
लोध का अर्क	५४
पठानीलोध का अर्क	५५
भिलावां का अर्क	५५
गुर्च का अर्क	५५
बेल का अर्क	५५
कुम्भेर का अर्क	५५
पान का अर्क....	५५

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
पाटला का अर्क	५५	सिन्दुवार (म्योढ़ी) का अर्क	५६
अरणी का अर्क	५६	निगुंण्डी का अर्क	६०
स्योनाक (अरलू) का अर्क	५६	कुटज (कुड़े) का अर्क	६०
शालिपर्णी (सरवन) का अर्क	५६	करंज का अर्क	६०
पृश्निपर्णी (पिठवन) का अर्क	५६	घृतकरंज का अर्क	६०
छोटी कटेहरी का अर्क	५६	करंजी का अर्क	६०
बड़ी कटेहरी का अर्क	५६	उटंगन का अर्क	६०
गुखुरू का अर्क	५६	घुँघुची का अर्क	६०
जीवन्ती का अर्क	५६	कौंच का अर्क	६०
मुद्गपर्णी का अर्क	५६	मांसरोहिणी का अर्क	६१
माषपर्णी का अर्क	५७	चीढ़ का अर्क	६१
अरंड का अर्क	५७	कटेरी का अर्क	६१
हाऊबेर का अर्क	५७	बेंत का अर्क	६१
मन्दार का अर्क	५७	जलबेंत का अर्क	६१
आक (मदार) का अर्क	५७	समुद्रफल का अर्क	६१
वज्री (थूहर) का अर्क	५७	अंकोल का अर्क	६१
सातला का अर्क	५७	वरियारा का अर्क	६२
कलिहारी का अर्क	५८	कंघी का अर्क	६२
कनेर का अर्क	५८	महाबला (सहदेई) का अर्क	६२
चचेड़ा का अर्क	५८	नागबला (गंगेरन) का अर्क	६२
धतूरा का अर्क	५८	लक्ष्मणा का अर्क	६२
रूसा का अर्क	५८	स्वर्णवल्ली का अर्क	६२
पित्तपापड़ा का अर्क	५८	कपास का अर्क	६२
नीम का अर्क	५८	बाँस का अर्क	६२
बकायन का अर्क	५८	सेवती का अर्क	६२
पारिभद्र का अर्क	५९	नरकुल का अर्क	६३
कचनार का अर्क	५९	मुलेठी का अर्क	६३
सफेद कचनार का अर्क	५९	सफ़ेद निसोत का अर्क	६३
काला सहिंजन का अर्क	५९	सरफोंका का अर्क	६३
लाल सहिंजन का अर्क	५९	जवासा का अर्क	६३
सफ़ेद सहिंजन का अर्क	५९	गोरखमुण्डी का अर्क	६३
घीकुवार का अर्क	५९	अपामार्ग का अर्क	६३

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय	पृष्ठ
लाल अपामार्ग का अर्क	६४
तालमखाना का अर्क	६४
हड़सिंघार का अर्क	६४
लाल पुनर्नवा का अर्क	६४
प्रसारिणी का अर्क	६४
घीकुवार का अर्क	६४
सफ़ेद पुनर्नवा का अर्क	६४
सारिवा का अर्क	६४
भँगरा का अर्क	६४
शणपुष्पी का अर्क	६५
त्रायमाना का अर्क	६५
मूर्वा का अर्क	६५
काकमाची का अर्क	६५
बड़ी इलायची का अर्क	६५
छोटी इलायची का अर्क	६५
काकनासा का अर्क	६५
काकजंघा का अर्क	६५
नागपुष्पी का अर्क	६६
मेढ़ासिंगी का अर्क	६६
हंसपदी का अर्क	६६
सोमवल्ली का अर्क	६६
आकाशबेल का अर्क	६६
पातालगारुड़ी का अर्क	६६
वृन्दा का अर्क	६६
वटपत्री का अर्क	६६
हिंगुपत्री का अर्क	६७
वंशपत्री का अर्क	६७
मछेछी का अर्क	६७
सरहटी का अर्क	६७
शंखपुष्पी का अर्क	६७
पुष्पी का अर्क	६७
लाजवन्ती (छुईमुई) का अर्क	६७
अलंबुषा का अर्क	६८
दूधी का अर्क	६८
भूमिवल्ली का अर्क	६८
सफेद कटेहरी का अर्क	६८
केवड़ा का अर्क	६८
ब्राह्मी का अर्क	६८
ब्रह्ममंडूकी का अर्क	६८
गूमा का अर्क	६८
सूर्यमुखी का अर्क	६९
बाँझककोड़ी का अर्क	६९
मार्कण्डिका का अर्क	६९
देवदाली का अर्क	६९
काले धतूरे का अर्क	६९
गोभी का अर्क	६९
नागपुष्पी का अर्क	६९
बरबेल का अर्क	६९
नकछिकनी का अर्क	७०
कुकरौंधा का अर्क	७०
सुदर्शन का अर्क	७०

चौथा शतक

विषय	पृष्ठ
षट्रस	७१
उन्मत्तपंचक	७१
त्रिसुगंध	७२
चातुर्जात	७२
त्रिफला	७२
त्रिकुटा	७२
चतुरूषण	७३
पंचकोल	७३
षडूषण	७३
चतुर्बीज	७३
अष्टवर्ग	७४
बृहत्पंचमूल	७४

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय	पृष्ठ
पंचमूल	७४
दशमूल	७४
जीवनीयगण	७५
सुगन्धगण	७५
वीरणगण	७६
दुग्धकन्दगण	७६
दन्ती आदि का अर्क	७७
बरगद के फलों का अर्क	७७
पीपल के फलों का अर्क	७७
आम की गुठली का अर्क	७७
तिन्दू का अर्क	७८
दूधवाले वृक्षों का अर्क	७८
फूलों का अर्क	७९
विषों का अर्क	७९
धानों का अर्क	८०
द्विदल अन्नों का अर्क	८०
तेलहन का अर्क	८१
शहद की जातियाँ	८२
ईख की जातियाँ	८३
कांजी वर्ग	८३
सब अन्नों का अर्क	८५
जंगली जीवों के मांस का अर्क	८६
बिलेशय जीवों के अर्क	८७
गुफा में रहनेवाले जीवों का अर्क	८७
वृक्षों पर रहनेवाले जीवों का अर्क	८७
विष्किर पक्षियों का अर्क	८८
प्रतुद पक्षियों का अर्क	८८
प्रसर जीवों का अर्क	८८
ग्राम्य पशुओं का अर्क	८९
कूलेचर जीवों का अर्क	८९
प्लवसंज्ञक पक्षियों का अर्क	८९
कोशस्थ जीवों का अर्क	८९

विषय	पृष्ठ
पैरवाले जलजीवों का अर्क	९०
मछली (मादा) का अर्क	९०
मछली (नर) का अर्क	९०
मनुष्य के मांस का अर्क	९०
अण्डों का अर्क	९१

पाँचवाँ शतक

विषय	पृष्ठ
ज्वरस्तम्भन औषध	९२
शीतज्वर की औषध	९२
विषमज्वर की औषध	९२
सन्निपात की औषध	९३
आमातिसार की औषध....	९३
पक्वातिसार की औषध	९३
रक्तातिसार की औषध	९३
प्रवाहिका की औषध	९४
संग्रहणी की औषध	९४
महारोग की औषध	९४
बालग्रहशान्ति धूप	९४
मन्दाग्नि की औषध	९५
विसूचिका की औषध	९६
अजीर्ण की औषध	९६
विषमाग्नि की औषध	९६
गरिष्ठ भोजन पचाने की औषध	९६
कृमिनाशक अर्क	९७
खटमल, मच्छर भगाने की औषध	९७
पाण्डुरोग की औषध	९८
कामलारोग की औषध....	९८
मिट्टी खाने से उत्पन्न पांडुरोग की औषध	९८
कुम्भकामला की औषध	९८
हलीमक रोग की औषध	९९
रक्तपित्त की औषध	९९

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय	पृष्ठ
कंठदाह, पित्तश्लेष्म और नकसीर की औषध	९९
कंठदाह और पित्तश्लेष्मकीऔषध	९९
अम्लपित्त की औषध	१००
राजयक्ष्मा की औषध	१००
अध्वशोष की औषध	१००
व्रणशोथ की औषध	१०१
उरःक्षत की औषध	१०१
दारुण कफ की औषध	१०१
क्षय और कास की औषध	१०१
सूखी खाँसी की औषध....	१०२
श्वास की औषध	१०२
हिचकी की औषध	१०२
स्वरभंग की औषध	१०२
मधुर स्वर की औषध	१०३
अरुचि की औषध	१०३
वमन की औषध	१०३
प्यास दूर करने की औषध	१०३
मुखशोष की औषध	१०४
क्षय आदि रोगों की औषध	१०४
तृषा और वमन की औषध	१०४
मूर्च्छा रोग की औषध....	१०५
नशा दूर करने की औषध	१०५
आलस्य दूर करने की औषध	१०५
निद्रा दूर करने की औषध	१०६
मदात्यय की औषध	१०६
धतूरे का नशा दूर करनेकीऔषध	१०६
अनेक प्रकार के नशा दूर करने की औषध	१०६
कटेहरी का अर्क	१०७
उन्माद रोग की औषध	१०७
भूतोन्माद की औषध	१०८
मिरगी की औषध	१०८
बहरापन की औषध	१०८
अफारा की औषध	१०८
गठियाबाई की औषध	१०९
वातनाशक औषध	१०९
ऊरुस्तम्भ की औषध	१०९
आमवात की औषध	११०
पित्तरोग की औषध	११०
वमन, विरेचन और कफ रोग की औषध	११०
साध्यासाध्य शूल की औषध	११०
पक्तिशूल की औषध	११०
उदावर्त रोग की औषध	१११
अफारा रोग की औषध	१११
हृद् रोग की औषध	१११
गुल्म रोग की औषध	१११
रक्तगुल्म की औषध	११२
प्लीहा की औषध	११२
यकृत् की औषध	११२
मूत्रकृच्छ्र की औषध	११२
मूत्राघात की औषध	११३
अश्मरी रोग की औषध	११३
प्रमेह रोग की औषध	११३
शरीरकीदुर्गंधदूरकरनेकीऔषध	११४
पौष्टिक औषध	११४
कुष्ठ रोग की औषध	११४
परिसिध्म रोग की औषध	११४
पामा रोग की औषध	११५
दाद की औषध	११५
छठा शतक	
गलगण्ड की औषध	११६
गंडमाला की औषध....	११६

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय	पृष्ठ
ग्रन्थि रोग की औषध	११६
अर्बुदरोग की औषध	११६
श्लीपद रोग की औषध	११७
विद्रधि रोग की औषध	११७
वात के शोथ की औषध	११८
पित्तरक्त के शोथ की औषध	११८
कफज शोथ की औषध....	११८
व्रणशोथ की औषध	११८
फोड़ा पकाने की औषध	११९
टूटी हड्डी की औषध	१२१
रक्तविकार की औषध	१२२
कोष्ठशुद्धि की औषध	१२२
नासूर की औषध	१२२
भगन्दर रोग की औषध	१२२
उपदंश की औषध ...	१२३
शूक रोग की औषध	१२३
विसर्प रोग की औषध....	१२३
स्नायु रोग की औषध	१२३
विस्फोटक की औषध	१२४
विस्फोटक के दाह की औषध	१२४
फिरंग रोग की औषध....	१२४
मसूरिका रोग की औषध	१२५
शीतला की उत्पत्ति	१३१
शीतलाष्टक	१३१
शीतलोपचार	१३४

सातवाँ शतक

विषय	पृष्ठ
बाल काले करने की औषध	१३७
इन्द्रलुप्त की औषध	१३७
मुहासों की औषध	१३८
झाईं की औषध	१३८
बद की औषध	१३८
लिंगोत्थ की औषध	१३८
गुदकंडू की औषध	१३९
गुदभ्रंश की औषध	१३९
सूर्यावर्त की औषध	१३९
आधाशीशी की औषध	१३९
सिरदर्द की औषध	१३९
पैरों के खरुवे की औषध	१४०
चर्मकील की औषध	१४०
अभिष्यन्द की औषध	१४०
नेत्र-रोग की औषध	१४१
रतौंधी की औषध	१४३
कान के रोगों की औषध	१४३
नेत्रस्राव तथा अन्य नेत्र रोगों की औषध	१४४
पीनस आदि अनेक रोगों की औषध	१४५
नासिका रोग की औषध	१४५
निद्रा की अधिकता दूर करने की औषध	१४६
नेत्राञ्जन	१४६
मुख के रोगों की औषध	१४७
विषों के हटाने की औषध	१४९
सर्प के विष की औषध	१५०
बिच्छू के विष की औषध	१५०
कुत्ते के विष की औषध....	१५०
मकड़ी के विष की औषध	१५१
चूहे के विष की औषध....	१५१
खनखजूरे के विष की औषध	१५१
चींटी के विष की औषध	१५१
प्रदर रोग की औषध	१५१
सोम रोग की औषध	१५२
बहुमूत्र की औषध	१५२

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय	पृष्ठ
योनि के रोगों की औषध	१५२
स्कन्दापस्मार की औषध	१५३
बालकों के ज्वरातिसार की औषध	१५४
बालकों के आमातिसार की औषध	१५५
बालकों के अनेक रोगों की औषध	१५५
बालकों का मूत्र रुक जाने की औषध	१५५
वाजीकरण औषध	१५६
वीर्य्यस्तम्भन की औषध....	१५७

आठवाँ शतक

विषय	पृष्ठ
आकर्षणविधि	१५६
विद्वेषणविधि	१६१
उच्चाटनविधि	१६२
स्तम्भनविधि	१६३
कौतुकविधि	१६४
मारणविधि	१६५
अदृश्यविधि....	१६६
मोहनविधि....	१६७
अग्निस्तम्भविधि	१६८
जलस्तम्भविधि	१६९
उन्मत्तकरणविधि	१७०
दूरदेशगमनविधि	१७१
आवेशविधि	१७२
सम्भोगसन्धिविधि	१७३
भूख बढ़ाने की विधि	१७४
निराहारविधि	१७५
चोरभयनिवारणविधि	१७५
सर्व कार्य सिद्धि करने की विधि	१७७

नवाँ शतक

विषय	पृष्ठ
शिरापोषकगण	१७९
वामनगण	१७९
रञ्जनगण	१७९
नेत्र्यगण	१८०
त्वच्यगण	१८०
उपविषगण	१८०
जलपुष्पगण....	१८०
कन्दगण	१८१
लवणगण	१८१
क्षारगण	१८२
अम्लगण	१८२
फलगण	१८२
शालिगण	१८४
शिम्बीधान्यगण	१८४
क्षुद्रधान्यगण	१८५
पत्रशाकगण....	१८५
पुष्पशाकगण	१८६
फलशाकगण....	१८६
विलेशयगण....	१८६
गुहाशयगण	१८७
पर्णमृगगण....	१८७
विष्किरगण....	१८७
प्रतुदगण	१८७
प्रसहगण	१८८
ग्राम्यपशु	१८८
कूलेचर पशु....	१८८
प्लवजीव	१८८
कोशस्थजीव	१८८
पैरवाले जलजीव	१८९
मछली की जातियाँ	१८९
विरेचनगण	१८९

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय			पृष्ठ
पाचकगण	....	....	१८९
उष्णगण	....	....	१९०
दीपनगण	....	....	१९०
पौष्टिकगण	....	....	१९०
वातघ्नगण	....	....	१९०
कृमिहागण	....	....	१९१
तृणगण	....	....	१९१
प्रसरगण	....	....	१९१
वृक्षगण	....	....	१९२
गुल्मगण	....	....	१९२
लतागण	....	....	१९३
पुष्पगण	....	....	१९३
दुग्धगण	....	....	१९४
धूपगण	....	....	१९४
सुगन्धगण	....	....	१९४
दुग्धादिगण	....	....	१९५
धातुगण	....	....	१९६
उपधातुगण	....	....	१९६
रस	....	....	१९६
उपरस	....	....	१९७
रत्नवर्ग	....	....	१९७
उपरत्नवर्ग	....	....	१९७

दसवाँ शतक

विषय		पृष्ठ
उत्तम सोने की परख	....	१९८
धातुओं के शोधन और मारण की विधि	....	१९८
सुवर्णभस्म के गुण	....	२००
चाँदी की परख	....	२००
चाँदी की भस्म के गुण	....	२०१
श्रेष्ठ ताँबा की परख	....	२०१
ताँबा की भस्म के गुण	....	२०२
श्रेष्ठ राँगा की परख	....	२०२
राँगा की भस्म के गुण	....	२०३
श्रेष्ठ जस्ता की परख	....	२०३
जस्ता की भस्म के गुण		२०३
श्रेष्ठ सीसा की परख	....	२०४
सीसा की भस्म के गुण		२०४
लोहसार	....	२०५
लोहभस्म बनाने की विधि		२०५
उपधातुओं के शोधन और मारण की विधि	....	२०६
सिन्दूर के शोधन की विधि		२०७
पारा शुद्ध करने की विधि		२१०
शिगरफ शुद्ध करने की विधि		२११
गंधक शुद्ध करने की विधि		२१२
अभ्रक शुद्ध करने की विधि		२१३
हरताल शुद्ध करने की विधि		२१३
हरताल के अनुपान की विधि		२१५
मैनसिल शुद्ध करने की विधि		२१६
खपरिया शुद्ध करने की विधि		२१६
उपरस शुद्ध करने की विधि		२१६
रत्नों की मारण विधि	....	२१७
विषों के शुद्ध करने की विधि		२१७
उपविषों के शुद्ध करने की विधि		२१८

इति

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अर्कप्रकाश

भाषाटीका सहित

पहला शतक

ओषधीपतिभालाय यामिनीपतिमूर्त्तये ।
कालकालाय नीलाय पार्वतीपतये नमः ॥ १ ॥

नत्वा गजाननाम्बेशान् रव्याद्यांश्च नवग्रहान् ।
लोकपाञ्छुभदिक्पालानथ देवांश्च सर्वशः ॥ १ ॥
शुक्लदेवीसहायेन नारनौलनिवासिना ।
क्रियतेऽर्कप्रकाशस्य भाषा मञ्जुमनोरमा ॥ २ ॥

जिनके मस्तक पर ओषधियों का पति चन्द्रमा विराजमान है और जिनकी चन्द्रमा के समान श्वेतवर्ण मनोहर मूर्त्ति है, उन काल के संहारक, नीलकंठ, पार्वती के पति भगवान् शंकर को नमस्कार है॥१॥

गर्भभारपरिक्रान्ता कन्या मन्दोदरी शुभा ।
रावणं परिपप्रच्छ पूजान्ते तुष्टमानसम् ॥ २ ॥

गर्भ के भार से पीड़ित मन्दोदरी नाम की कन्या (यहाँ कन्या शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया कि इसकी गिनती पाँच कन्याओं में है) रावण की स्त्री ने एक बार पूजा से निश्चिन्त और प्रसन्न-चित्त अपने स्वामी रावण से पूछा ॥ २ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मन्दोदर्युवाच--

स्वामिन्दैत्यसुराराध्य चतुर्वेदविशारद ।
सदाणिमाद्याप्तकाम भुवनत्रयपालक ॥ ३ ॥
इदं शुक्रममोघं ते यदाऽऽरभ्योदरे स्थितम् ।
तदाऽऽरभ्य न शक्नोमि वक्तुं वक्तुमना मनाक् ॥ ४ ॥

हे स्वामिन्, हे दानवों और दैत्यों के पूज्य, चारों वेदों के विद्वान्, अणिमादिक आठों सिद्धियों द्वारा सफलमनोरथ, तीनों लोकों के रक्षक, जबसे आपका अमोघ (निष्फल न होनेवाला) वीर्य मेरे गर्भ में स्थित हुआ है, तभी से मैं आपसे कुछ पूछना चाहती हूँ, किन्तु पाड़ा के मारे कुछ कह नहीं सकती ॥ ३—४ ॥

दुःखं रोगश्च कालश्च त्वत्प्रसादान्मनागपि ।
रक्षोगणा न स्पृशन्ति त्वेषां पीडा कथं मम ॥ ५ ॥

आपके प्रसन्न होने पर दुःख, रोग, काल और राक्षसगण स्पर्श भी नहीं कर सकते, फिर भला यह ज़रा-सी पीड़ा मुझे क्यों सता रही है ? ॥ ५ ॥

उपायं ब्रूहि मे नाथ गर्भिण्या हि यथोचितम् ।
यथा विवर्द्धते गर्भो जायते च बलं मम ॥ ६ ॥

हे नाथ, मुझ गर्भवती को कोई ऐसा श्रेष्ठ उपाय बतलाइए, जिससे मेरा गर्भ पुष्ट हो और शरीर में बल बढ़े ॥ ६ ॥

रावण उवाच--

एकदा हि मया पृष्टा पार्वती प्रीतमानसा ।
उमे ते हि जगन्मातस्तव देहोद्भवाः सुताः ॥ ७ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कथं नहि गणेशाद्याः सदृशास्तव बालकाः ।
तिष्ठन्ति नाऽनुरूपास्ते कारणं ब्रूहि मे शिवे ॥ ८ ॥

रावण ने कहा—हे प्रिये, मैंने एक बार प्रसन्नचित्त पार्वती से प्रश्न किया कि हे जगदम्बे, आपके शरीर से उत्पन्न गणेश आदि आपके अनुरूप और आपके समान दुर्बल क्यों नहीं हैं, इसका क्या कारण है, कृपा करके मुझे बतलाइए ॥ ७–८ ॥

श्रीदेव्युवाच—

कामिन्योऽनङ्गनाशाय जायन्ते बालकाः सुत ।
भार्यापि वृद्धा भवति तरुण्यपि सुते सति ॥ ९ ॥

पार्वती ने उत्तर दिया—बेटा, कामिनियों के काम का नाश करने के लिए सन्तान उत्पन्न होती है। युवती स्त्री भी सन्तान होने से बूढ़ी-सी हो जाती हैं ॥ ९ ॥

एवं सदाशिवं रन्तुं सदैवाहं कुमारिका ।
गणेशस्कन्दनन्द्याद्याःकल्पितामानसाःसुताः॥ १० ॥

मैं हमेशा नियम से रहती हूँ, इसी से शिवजी की सेवा करने के लिए सदा कुमारी-सी बनी रहती हूँ। गणेश, स्कन्द और नन्दी आदि मेरे पुत्र मन की कल्पना से उत्पन्न हुए हैं ॥ १० ॥

रावण उवाच—

नमस्तुभ्यं मया किं हि संसाराकृष्टचेतसा ।
विवाहं न करिष्यामि प्रत्युत स्यां कुमारकः॥ ११ ॥
इति मद्वचनं श्रुत्वा पार्वती वाक्यमब्रवीत् ।
निर्विण्णो भव मा पुत्र कुरु राज्यं चिरं स्थिरम्॥ १२ ॥

तब मैंने कहा—हे माता, आपको प्रणाम है। मुझ संसारी जीव से कुछ नहीं हो सकता, इसलिए अब मैं अपना विवाह नहीं करूँगा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कुमार ही रहूँगा। मेरी यह बात सुनकर पार्वतीजी ने उत्तर दिया—हे पुत्र, तू दुखी न हो, तू चक्रवर्ती राजा होकर बहुत दिनों तक राज्य कर ॥ ११–१२ ॥

मया सह कृतेर्ष्येयं विष्णुपत्न्यतिचञ्चला ।
त्वया गृहे समानेया स्थाप्या वै बन्धनेऽरिवत् ॥ १३ ॥

मुझसे ईर्ष्या करनेवाली अति चंचला, विष्णु की पत्नी, जो पृथिवी पर अवतार लेकर सीता नाम से प्रसिद्ध होगी, उसे तू अपने घर में लाकर शत्रु की तरह क़ैद रखना ॥ १३ ॥

तयोन्मत्ताः सुराः सर्वे निर्जेतव्या महाबलाः ।
मम प्रकृतिदेहस्थरोमभ्यः शतशोऽभवन् ॥ १४ ॥
ओषध्यस्तद्बलादेवं त्वं त्रिश्वं जय बालक ।
इत्युक्त्वा मामकथयत्पार्वतीमहिमानकम् ॥ १५ ॥

उसी लक्ष्मी के प्रभाव से उन्मत्त महापराक्रमी देवताओं को भी तू जीत लेगा। मेरे शरीर के रोओं से सैकड़ों ओषधियाँ उत्पन्न हुई हैं, उनको खाकर तू बड़ा बलवान् हो जायगा और तीनों लोकों को परास्त करेगा। पार्वतीजी ने यों कहकर मुझे औषधों के बनाने की विधि बतला दी ॥ १४–१५ ॥

दिव्यौषधीनां प्रकल्पः कथितः प्रीतया तया ।
तमहं सम्प्रवक्ष्यामि शृणुष्वावहिता प्रिये ॥ १६ ॥

हे प्रिये, पार्वती ने प्रसन्न होकर मुझे औषधों के बनाने की जो विधि बतलाई थी वह मैं तुमसे कहता हूँ, ध्यान देकर सुनो ॥ १६ ॥

ओषधियों के भेद—

ओषध्यः पञ्चधा ख्याता लता गुल्माश्च शाखिनः ।
पादपाः प्रसराश्चेति तासां वक्ष्यामि लक्षणम् ॥ १७ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ओषधियाँ पाँच प्रकार की हैं—लता, गुल्म, शाखी, पादप और प्रसर। अब उनके लक्षण भी बतलाता हूँ, सुनो ॥ १७ ॥

गुडूच्याद्या लताः प्रोक्ता गुल्माः पर्पटकादयः ।
आम्राद्याःशाखिनोज्ञेयावटाश्वत्थादिपादपाः ॥१८॥
कण्टकार्यादिकाः सर्वाः प्रसरा इति कीर्त्तिताः ।
तासां पञ्चैव चाङ्गानि प्रबलानि यथाक्रमम् ॥ १९ ॥

गुर्च आदि ओषधियाँ लता कहलाती हैं, पित्तपापड़ा आदि गुल्म, आम आदि के वृक्ष शाखी और बरगद, पीपल आदि पादप कहलाते हैं ॥ १८ ॥ भटकटैया आदि की प्रसर संज्ञा है। इन ओषधियों के पाँच अंग क्रमशः एक-से-एक बढ़कर बलवान् हैं ॥ १९ ॥

पञ्चाङ्ग

पत्रं पुष्पं वल्कलं च फलं मूलं क्रमेण च ।
अनुक्ते बलमेतेषामुष्णमङ्के यथोचितम् ॥ २० ॥

पत्तों से फूल, फूलों से छाल, छाल से फल और फल से जड़ अधिक बलवान् होती है ॥ २० ॥

तालीसादेस्तु पत्राणि सुमनो धातकीमुखात् ।
न्यग्रोधादेस्त्वचो ग्राह्याः फलं स्यात्त्रिफलादितः २१

तालीस आदि वृक्षों के पत्ते, धाय आदि वृक्षों के फूल, बरगद और पीपल आदि वृक्षों की छाल तथा हड़, बहेड़ा और आँवला आदि के फल लेना चाहिए ॥ २१ ॥

पञ्चाङ्गुलादेर्मूलानि ह्यनुक्ते परिकल्पयेत् ।
खदिरासनकादीनां सारोऽपि परिगृह्यते ॥ २२ ॥

जहाँ पत्ते, फूल, फल और जड़ का भेद न बतलाकर केवल वृक्ष का ही नाम लिखा हो वहाँ एरंड आदि वृक्षों की जड़ लेनी चाहिए

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

और खैर तथा विजयसार आदि वृक्षों का सार लेना चाहिए ॥ २२ ॥

द्रव्यों के स्वरूप

रसो गुणस्तथा वीर्यं विपाकः शक्तिरेव च ।
पञ्चानां यः समाहारस्तद्द्रव्यमिति कीर्त्यते ॥ २३ ॥

रस, गुण, बल, विपाक और शक्ति, जिसमें ये पाँचों गुण हों उसे द्रव्य कहते हैं ॥ २३ ॥

षट्रस

स्वाद्वम्लौ लवणस्तिक्तः कटुकश्च कषायकः ।
अमी षट् च रसाः ख्याता निर्बलोऽत्र परःपरः ॥ २४ ॥

रस छः प्रकार के हैं——मधुर, अम्ल, लवण, तिक्त, कटु और कषाय । ये क्रमशः एक की अपेक्षा दूसरे निर्बल हैं ॥ २४ ॥

मधुर रस

मधुरः पिच्छिलः शीतो धातुस्तन्यबलप्रदः ।
चक्षुष्यो वातपित्तादीन् कुर्यात्त्वक्तथो मलकृमीन् २५

मधुर रस चिकना और शीतल है । स्तनों में दूध, धातु और बल का बढ़ानेवाला, आँखों के लिए लाभदायक तथा वात और पित्त का नाश करनेवाला है । इससे त्वचा में मल और कीड़े उत्पन्न होते हैं २५.

अम्ल रस

अम्लोष्णोन्तर्बहिःशीतो रुच्यः पित्तकफास्रकः ।
विबन्धानाहदृष्टिघ्नो दन्ताक्षिभ्रूनिकोचनः ॥ २६ ॥

अम्ल रस पहले ठंडा और पीछे गरम होता है । यह रुचिकारक तथा पित्त, कफ और रुधिर का बढ़ानेवाला है । इससे मल-मूत्र का रुकना और अफारा दूर हो जाता ह । दाँत, आँख और भौंह को हानि पहुँचाता है ॥ २६ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लवण रस

लवणश्शोधनो रुच्यः पाचनः कफपित्तहा ।
प्रायो वातहरः कायशैथिल्यमृदुकारकः ॥ २७ ॥

लवण रस शोधन करनेवाला, रोचक और पाचक है। कफ, पित्त तथा वात का नाश करके शरीर को शिथिल और कोमल बना देता है ॥ २७ ॥

तिक्त रस

तिक्तः शीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफाञ्जयेत् ।
रुच्यः स्वयमरोचिष्णुः कण्ठस्तन्यावशोधकः॥ २८॥

तिक्त रस सर्दी, प्यास, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त और कफ को दूर करता है। रुचि को बढ़ाता है किंतु स्वयं स्वादिष्ठ नहीं है। गले को साफ़ करता है और स्तनों के दूध को शुद्ध करता है ॥ २८ ॥

कटु रस

कटुरूक्षस्तन्यमेदःश्लेष्मकण्डूविषापहः ।
वातपित्तकफाग्नेयः सोक्षिपाचनरोचकः ॥ २९ ॥

कटु रस रूखा है, छाती का मेद हटाता है। श्लेष्मा खुजली और विष को दूर करता है। वात, पित्त और कफ का नाश करता है। तथा शोषक, पाचक और रुचिकारक है ॥ २९ ॥

कषाय रस

कषायः कृमिकण्डूघ्नः कफशैथिल्यनाशनः ।
वातव्याधिहरः सूक्ष्मो सोतियुक्तोक्षिरोगकृत् ॥ ३० ॥

कषाय रस कीड़े और खाज को दूर करता है। कफ की शिथिलता को नष्ट करता है। वायु की पीड़ा दूर करता है। इसका अधिक सेवन करने से आँखों में रोग उत्पन्न हो जाते हैं ॥ ३० ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पृथिवी आदि पंचभूतों के गुण

गुरुः स्निग्धस्तीक्ष्णरूक्षौ लघुरेते गुणाः स्मृताः ।
पञ्चभूतेषु तिष्ठन्ति आधिक्यादुपलक्षतः ॥ ३१ ॥

गुरु (भारी) स्निग्ध (चिकना) तीक्ष्ण (तीखा) रूक्ष (रूखा) और लघु (हलका) ये पाँच गुण क्रम से पृथिवी आदि पाँच भूतों में होते हैं ॥ ३१ ॥

गुरु और स्निग्ध के गुण

गुरुर्वातहरः पुष्टिश्लेष्मकृच्चिरपाचकः ।
स्निग्धो वातहरः श्लेष्मकारी वृष्यो बलप्रदः ॥३२॥

गुरु गुण वात का नाश करनेवाला, पुष्टिकारक, कफ को बढ़ानेवाला और देर में पचानेवाला है । स्निग्ध गुण वात का हरनेवाला और कफ, बल तथा वीर्य का बढ़ानेवाला हैं ॥ ३२ ॥

तीक्ष्ण और रूक्ष के गुण

तीक्ष्णम्पित्तकरं प्रोक्तं लेखनं कफवातहृत् ।
रूक्षं समीरणकरं परं कफहरं मतम् ॥ ३३ ॥

तीक्ष्ण गुण पित्त को बढ़ाता, मल को उखाड़ता और कफ तथा वात को नष्ट करता है । रूक्ष गुण वात को बढ़ाता और कफ का नाश करता है ॥ ३३ ॥

लघु गुण

लघुपथ्यपरम्प्रोक्तं कफघ्नं लघुपाकि च ।
पृथिव्यादिगुणाधिक्याद् गुणं द्रव्ये प्रकल्पयेत् ३४

लघु गुण पथ्य, कफ का नाशक और शीघ्र पचानेवाला है । इस प्रकार पृथिवी आदि गुणों का निश्चय करके औषधियों को काम में लाना चाहिए ॥ ३४ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उष्ण और शीत का बल

उष्णं शीतं द्विधा वीर्यं तत्कालाद्युपलक्षयेत् ।
स्थलादपि तयोर्योगादयोगान्मध्यमन्तु तत् ॥३५॥

उष्ण और शीत ये दो प्रकार के बल हैं। इन दोनों बलों और समय को भी देख लेना चाहिए। स्थान के बल से भी इनका संयोग होने से बल अधिक हो जाता है और संयोग के बिना इनका बल सम रहता है ॥ ३५ ॥

जाङ्गल और अनूप देश की औषधों के गुण

सर्वं जाङ्गलसम्भूतं प्रायो भवति पित्तहृत् ।
आनूपसम्भवं सर्वं प्रायः कफहरं स्मृतम् ॥ ३६ ॥

जांगल देश में उत्पन्न ओषधियाँ प्रायः पित्त को हरती हैं और अनूप देश में उत्पन्न सब औषधें कफ को दूर करती हैं ॥ ३६ ॥

दक्षिण और मध्य देश की औषधों के गुण

तत्कालोष्णं दक्षिणजं परिणामे तु शीतलम् ।
धनदाशासमुद्भूतं विपरीततया स्मृतम् ॥ ३७ ॥

दक्षिण देश में उत्पन्न ओषधियाँ तत्काल तो गरम होती हैं और कुछ देर बाद ठंडी हो जाती हैं। उत्तर देश में उत्पन्न हुई ओषधियों के गुण इससे विपरीत होते हैं, अर्थात् वे तत्काल ठंढी और बाद में गरम हो जाती हैं ॥ ३७ ॥

अन्तर्वेदिभवं सर्वं यथोक्तगुणमादिशेत् ।
विपाकस्तु त्रिधा प्रोक्तः स्वाद्वम्लकटुकात्मकः॥३८॥

मध्यदेश में उत्पन्न ओषधियों में ऊपर कहे हुए सब गुण होते हैं। अब रसों का विपाक कहते हैं। विपाक तीन प्रकार के होते हैं—मधुर, अम्ल और कटु ॥ ३८ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रस के पाक

क्रमाधीनबलो ज्ञेयो मधुरो मधुरः कटुः ।
पचत्यम्लोऽम्लमितरे रसाः कटुकपाकिनः ॥ ३९ ॥

मधुर, अम्ल और कटु, ये तीन रस क्रमशः एक की अपेक्षा दूसरा बलहीन होता है । मधुर रस पहले मीठा होता है फिर पाक-वश से कटु हो जाता है । अम्ल पकने पर खट्टा ही रहता है, बाकी चार रस पाक के वश कड़ुये हो जाते हैं ॥ ३९ ॥

मधुर और अम्ल पाक के गुण

श्लेष्मकृन्मधुरः पाके वातपित्तहरो मतः ।
अम्लस्तु कुरुते पित्तं वातश्लेष्मगदापहः ॥ ४० ॥

मधुर रस पकने पर कफ को बढ़ाता और वात-पित्त को नष्ट करता है । अम्ल रस पकने पर भी पित्त को बढ़ाता और वात तथा कफ के रोगों का नाश करता है ॥ ४० ॥

कटु पाक के गुण

कटुः करोति पवनं कफपित्तं च नाशयेत् ।
विशेष एव रसतो विपाकानां प्रदर्शितः ॥ ४१ ॥

कटु रस पकने पर वात को बढ़ाता और पित्त तथा कफ का नाश करता है । ये रस पाकों के रस से अधिक दिखाये गये हैं ॥ ४१ ॥

औषधों का प्रभाव

रसादिसाम्ये यत्कर्मविशिष्टन्तु प्रभावजम् ।
दन्तीरसेन तुल्येऽपि चित्रकस्य विरेचति ॥ ४२ ॥

रसादिकों की समता में द्रव्यों के जो विशेष काम हैं वे उनके प्रभाव से उत्पन्न होते हैं, जैसे वज्रदन्ती और चीत के रस एक समान हैं, किन्तु ये दोनों औषधें एक में मिलाने से रेचन हो जाती हैं ॥४२॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मधुना चाथ मृद्वीका घृतं क्षीरेण दीपनम् ।
प्रभावस्तु यथा धात्री लकुचस्य रसादिभिः ॥४३॥
समापि कुरुते दोषत्रितयस्य विनाशनम् ।
क्वचित्तु केवलं द्रव्यं कर्म कुर्यात्स्वभावतः ॥ ४४ ॥
ज्वरं हन्ति शिरोबद्धा सहदेवीजटा यथा ।
धृता निवारयेल्लोहं पुष्यार्के किल मूलिका ॥ ४५ ॥

इसी प्रकार मुलेठी के योग से दाख (मुनक्का) और घी के योग से दूध में दीपन शक्ति बढ़ जाती है। आँवला और बड़हर में एक समान रस है, परन्तु इन दोनों का योग तीनों दोषों का नाश करता है। कहीं औषध केवल एक प्रभाव से ही काम करती है, जैसे सहदेई की जड़ मस्तक पर बाँध देने से ज्वर दूर हो जाता है और पुष्य नक्षत्र में अंकोल वृक्ष की जड़ धारण करने से शस्त्रबाधा दूर हो जाती है ॥ ४३–४५ ॥

औषधों के पाँच भेद

द्रव्यकल्पः पञ्चधा स्यात्कल्कचूर्णं रसं तथा ।
तैलमर्कं क्रमाज्ज्ञेयं यथोत्तरगुणं प्रिये ॥ ४६ ॥

औषधें पाँच प्रकार से बनाई जाती हैं—१ कल्क (खली के समान कुटी हुई) २–चूर्ण (पिसी हुई) ३–रस (पतली) ४–तैल (तेल में पकाई हुई) ५–अर्क। हे प्रिये, इनमें क्रमशः एक की अपेक्षा दूसरी औषध अधिक गुणदायक है, अर्थात् कल्क से चूर्ण, चूर्ण से रस, रस से तेल और तेल से (सबसे) अर्क में अधिक गुण हैं ॥ ४६ ॥

पृथग्द्वयंशे सन्निपाते सङ्करेऽसाध्यरोगिणि ।
क्रमादेते प्रयोक्तव्याः कालमग्निं निरीक्ष्य च ॥४७॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सन्निपात, तीनों दोषों से उत्पन्न हुए रोग तथा अन्य असाध्य रोगों में क्रम से ये औषधें देनी चाहिए। औषध देते समय अग्नि और समय का विचार अवश्य कर लेना चाहिए॥ ४७॥

ओषधियों में गुणों की न्यूनाधिकता

आद्ये गुणे गुणाः सर्वे द्वितीये ह्यल्पतः स्मृताः।
तृतीये शीघ्रकारित्वं चतुर्थो नहि दोषकृत्॥ ४८॥
पञ्चमं दोषरहितं गुणसङ्गप्रकाशकम्।
पञ्चमस्य तु सामर्थ्यं स्वयम्पञ्चाननोऽब्रवीत्॥४९॥

कल्प में सम्पूर्ण गुण हैं, चूर्ण में कल्क की अपेक्षा कम गुण हैं। रस में शीघ्रताकारी गुण है। तेल दोषकारक नहीं है। अर्क तो दोष-रहित, गुणों का प्रकाश करनेवाला और सबसे श्रेष्ठ है। अर्क की प्रशंसा भगवान् शंकर ने अपने मुँह से की है॥ ४८–४९॥

अर्क की प्रशंसा

वर्षाणां तु सहस्रेण कथितोऽहर्निशं मया।
सम्पूर्णतां न जायेत कल्पोऽर्कस्य दशानन॥ ५०॥

शिवजी ने कहा था कि हे दशानन, मैंने हजारों वर्ष तक दिन-रात औषधों का वर्णन किया, किन्तु तब भी अर्क का वर्णन समाप्त नहीं हुआ॥ ५०॥

पुंवारे पुरुषर्क्षे च दिवार्को यस्तु निर्मितः।
रमणीषु प्रदातव्यो विलोमात्पुंसि योजयेत्॥ ५१॥

जो अर्क पुरुषवार, पुरुषनक्षत्र और दिन में बनाया जाय वह स्त्रियों को देना चाहिए। और जो स्त्रीवार, स्त्रीनक्षत्र और रात में बनाया जाय वह पुरुषों को देना चाहिए॥ ५१॥

अर्क-यन्त्र बनाने की मिट्टी

लोहचूर्णं गैरिकं च स्फटिका कृष्णमृत्तिका।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मृत्तिकास्थिभवं चूर्णं काचं कीकसजं रजः ॥५२॥
एतानि समभागानि सर्वतुल्या च मृत्तिका।
भृंशनीया पञ्चमूत्रैर्गवाश्वमहिषोद्भवैः ॥ ५३ ॥
गजाजसम्भवाभ्यां च सटितं तद्विशोषयेत्।
यावद्गन्धविनाशः स्यात्तावत्सम्मर्दयेच्च ताः॥५४॥

लोह का चूर्ण, गेरू, फिटकरी, काली मिट्टी, लाल मिट्टी, हड्डी का चूर्ण, काँच और कसीस का चूर्ण इन सबको बराबर लेकर सबके बराबर मिट्टी मिलावे। फिर उसे गाय, घोड़ा, भैंस, हाथी और बकरी के मूत्र में सानकर धूप में सुखावे। जब तक मूत्रों की दुर्गन्धि दूर न हो जाय तब तक उसे सुखाता रहे। इस प्रकार मिट्टी तैयार करे ॥ ५२—५४॥

अर्कपात्र बनाने की विधि

लघुहस्तः कुलालोऽस्य कुर्याद्यन्त्रं सुनिर्मलम्।
यथेष्टां स्थालिकां कुर्यात्त्र्यङ्गुलां प्रान्तसारिकाम् ५५
पृथुब्रध्नोदराकारां द्व्यङ्गुलां सन्धिवेष्टिताम्।
सारिकान्ते तु परिधिं त्र्यङ्गुलोत्सेधशोभिताम् ॥५६॥
विनिर्मायाथ सार्यन्ते यथा शिल्पविनिर्मितम्।
छिद्रं कृत्वानलन्दद्याद्गजशुण्डासमं सुधीः ॥ ५७ ॥
सारिका परिधेरन्तस्तस्य कुर्यात्पिधानकम्।
अर्द्धनिम्बूफलसमं परिधेस्तस्य चान्ततः ॥ ५८ ॥
वेदाङ्गुलं मस्तकोर्ध्वं कार्यन्तोयस्य धारणे।
समर्थां तस्य नलिकां कुर्यात्तोयविमोचनीम् ॥ ५९ ॥
तस्यैवान्तरतो लेप्या घनाजीर्णास्थिमृत्तिका।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अथवा श्वेतकाचं च सर्वदोषापनुत्तये ॥ ६० ॥

बुद्धिमान् कुम्हार द्वारा उस मिट्टी का एक यन्त्र (गोल पात्र) बनवावे। उसके मुँहरे की उँचाई तीन अंगुल से कम न हो। उस यन्त्र (गोल पात्र सूर्यमण्डल की तरह) का जितना बड़ा मुँह हो, उसका ढक्कन मिलाने के लिए उसे भी ठीक उतना ही बड़ा बनावे और उस ढक्कन में तीन अंगुल की औंठ हो, जो उस पात्र में डाल देने से ठीक चपक जावे। ऐसा बनावे जिसमें भाप न निकले। इसके लिए पुरानी हड्डियों से बनी हुई उसी मिट्टी की बत्ती बनाकर उस ढक्कन और पात्र की औंठ में लगा दे। जब ढक्कन को ऊपर से दाबा जायगा तब वह मिट्टी बाहर को निकलेगी, उसको मुँह के चारों ओर सब तरफ़ से बराबर लेस दे, ताकि भाप न निकल सके। ऊपरवाले ढक्कन में एक गोल छेद करावे। उस छेद में एक बाँस का पोला हाथी की सूँड़ की तरह का, अर्थात् दो टुकड़ों से बना हो, एक टुकड़ा छोटा हो दूसरा उसका दूना हो, उन दोनों टुकड़ों को कुहिनी की तरह तिरछा काटकर एक में ऐसा बाँधे कि बिलकुल भाप न निकले अर्थात् बाध से बाँस को खूब कसकर ऊपर से मुलतानी मिट्टी लेप दे। छोटा नल जो टेढ़ा है उसे ढक्कन में चार-पाँच अंगुल भीतर करके ऊपर से कपड़मिट्टी लगादे। बड़े डंडे के नीचे अर्क का बरतन रख दे ताकि ढक्कन में आई हुई भाप इस नल द्वारा बरतन में आ जाय और यह पात्र ठंढे जल में रक्खे। ढक्कन के ऊपर के किनारे की औंठ कुछ ऊपर को भी उठी हो। उसमें दो तरफ टोंटी लगी हो। छोटी टोंटी में डाट लगी रहे। ढक्कन में जल भर दिया जायगा ताकि नीचे बरतन में से उठी हुई भाप इस ढक्कन को गरम करके उड़ न सके। जब जल गरम हो जाय तब डाट खींचकर गरम जल निकाल दे और ठंढा जल भर दे। दूसरी टोंटी अर्क पात्र में लगा दे ॥ ५५—६०॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जीर्णास्थिमृत्तिकापात्र

अथ वक्ष्ये तु जीर्णास्थिमृत्तिकाकरणं प्रिये ।
शिलाजतुस्थले कुर्य्याद्दीर्घं गर्त्तं मनोहरम् ॥ ६१ ॥
निक्षिपेत्तत्र नानास्थिसञ्चयं द्विचतुष्पदाम् ।
स्वर्जिक्षारं महाक्षारं मृत्क्षारं लवणानि च ॥ ६२ ॥
गन्धकोष्णजलं क्षेप्यं नानामूत्राणि तत्र च ।
एवं कृत्वा मासषट्कं दद्यात्पाषाणमृत्तिकाम् ६३
पङ्कास्थ्यूर्ध्वं तदूर्ध्वन्तु कुर्याद्बहिष्टिकाः शुभाः ।
त्रिवर्षाज्जायते सर्वमेकीभूतं द्रवन्मयम् ॥ ६४ ॥

हे प्रिये, जीर्णास्थिमृत्तिका बनाने की विधि कहता हूँ । जहाँ शिलाजीत पैदा होता हो वहाँ एक बड़ा गड्ढा खोदकर उसमें द्विपद (दो पैरवाले) और चतुष्पद (चार पैरवाले) जीवों की हड्डियाँ डालकर ऊपर से सज्जी क्षार, महाक्षार, मृत्तिकाक्षार, सब नमक, गन्धक, गरम जल और अनेक मूत्र डालकर छः महीने तक वैसे ही रहने दे । बाद को ऊपर से पत्थर मिट्टी डाल देवे, ऊपर से कीचड़ लेसकर ईंटें फैला दे । इस प्रकार तीन वर्ष पड़ा रहने से यह सब एकसाँ हो जाता है ॥ ६१–६४ ॥

ततो निष्पिष्य तच्चूर्णं कृत्वा पात्राणि निर्मयेत् ।
प्रशस्तंभोजनंतत्र सूचयेद्दूषणं द्रुतम् ॥ ६५ ॥
महाविषस्य संयोगात्तस्य भङ्गः प्रजायते ।
सूचीविषादिसंयोगात्तस्य स्फोटा भवन्ति हि ॥ ६६ ॥
तत्र क्षिप्तं क्षुद्रविषं पात्रं कृष्णं करोति च ।
एवं ज्ञात्वा तत्र दद्यान्न कदाचिद्विषादिकम् ॥ ६७ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उस एक समान मिट्टी को निकाल महीन कर बरतन बनवावे। उस मिट्टी से बने हुए पात्र में भोजन दूषित नहीं होता अर्थात् उसमें भोजन की परीक्षा हो जाती है। यदि भोजन में महाविष का संयोग हो तो उस पात्र के टुकड़े हो जाते हैं। सूची विष (दूषी विष, एक प्रकार का विष) के गिरने से पात्र में छाले (बुद्बुदे) उठ आते हैं। जीर्ण मृत्तिका के पात्र में क्षुद्र विष के रखने से पात्र काला हो जाता है। ऐसा जानकर उसमें कभी विष का संयोग न होने दे। इस मिट्टी के पात्र में खाद्य पदार्थों की परीक्षा हो जाती है ॥६५—६७॥

विषादीनामर्कसिद्धौ कुर्यात्पात्रं तु लोहजम्।
स्वर्णजं रौप्यकं वापि कुर्यात्पात्रमकल्मषम् ॥६८॥
अथवा ताम्रजं वापि ह्यन्तर्वङ्गविलेपनम्।
पात्रन्तु बुद्ध्या कुर्वीत कषायो न भवेद्रसः ॥६९॥

यदि विषादिकों का अर्क निकालना हो तो शुद्ध सुन्दर लोहा, सोना, चाँदी अथवा ताँबा का पात्र बनवाकर उसमें कलई करा लेवे (यदि ताँबे में कलई न होगी तो वस्तु कसैली हो जायगी) ॥६८—६९॥

द्रव्यान्तरस्य संयोगादर्कं तैलं च गुर्विणः।
सर्वेषां निःसरत्येवं पाषाणस्य तु किं पुनः ॥७०॥

उत्तम द्रव्यों के योग से सब वस्तुओं का तेल या अर्क निकलता है चाहे भारी पत्थर ही क्यों न हो, तो और वस्तु क्या है ॥ ७० ॥

अनग्न्यर्कस्तथा तैलं गन्धतैलादिसम्भवम्।
वेधकं सर्वधातूनां देहस्यापि च पुष्टिदम् ॥ ७१ ॥

अग्नि की सहायता के विना तैयार किया हुआ अर्क, तेल अथवा गन्धक का तेल मनुष्य के लिए विशेष लाभकारी है। ये सब धातुओं के वेधक हैं, और शरीर को अत्यन्त पुष्ट करते हैं ॥ ७१ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यस्तैलकरणे दक्षश्चार्कनिस्सारणे पटुः ।
तस्य सेवा भवेन्नित्यं रोगैश्च न स बाध्यते ॥ ७२॥

जो मनुष्य तेल निकालने में चतुर और अर्क निकालने में सावधान है उसकी सदा सर्वत्र सेवा होती है और उसके शरीर को कोई रोगादिक नहीं सताते ॥ ७२ ॥

कुत्सितार्कस्तु यामे स्याद् द्वियामाभ्यां तु मध्यमः ।
त्रिभिर्यामैर्भवेच्छ्रेष्ठस्त्वर्कोऽमितगुणप्रदः ॥ ७३ ॥

जो अर्क एक पहर में तैयार हो वह कुत्सित अर्थात् न्यून कहाता है, जो दो पहर में तैयार हो वह मध्यम और जो तीन पहर में तैयार हो वह उत्तम है तथा अनेक गुणों को देता है ॥ ७३ ॥

पेया अर्क

द्रव्यादधिकसौगन्ध्यं यस्मिन्नर्के प्रदृश्यते ।
जीर्णास्थिपात्रसंक्षिप्तो द्रव्यवर्णः प्रदृश्यते ॥७४॥

जिस वस्तु से अर्क निकाला जाय उससे अधिक सुगन्ध अर्क में हो या जीर्ण मृत्तिका के पात्र में डालकर परीक्षा करने से अपने रंग का बना रहे तो अत्युत्तम जानना ॥ ७४ ॥

शङ्खकुन्देन्दुधवलोऽन्यथा पात्रान्तरस्थितः ।
जिह्वोपरिगतः स्वादुं दद्याद्द्रव्यभवन्तु यः ॥
तमेवार्कं विजानीयादन्यस्तु स्याद्रसादिवत्॥७५॥

शंख, कुन्द तथा चन्द्रमा के समान श्वेत पात्र में रक्खा हुआ अर्क जिह्वा से परखने पर अपने द्रव्य का स्वादु देवे तो अर्क समझना अन्यथा अर्क पानी के समान (रस) समझना ॥ ७५ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कृत्वा सुगन्धिमेतस्थ ह्यर्कपुष्पादिभिः सुधीः ।
गुणाय पश्चात्सेवेत त्वन्यथापगुणो भवेत् ॥ ७६ ॥

दुर्गन्धित अर्क हो तो उसको पुष्पों से सुगन्धित कर सेवन करने से गुण करता है ॥ ७६ ॥

दुर्गन्धं भक्षयेदर्कं यदि मोहात्कथञ्चन ॥ ७७ ॥
तदास्य जायते ग्लानिर्वान्तमालस्यकं तथा ।
तद्दोषस्य विनाशाय कुर्याद्वान्तमतन्द्रितः ॥ ७८ ॥

दुर्गन्ध युक्त अर्क पीनेवाले को विकार करता है। जो द्रव्य के लोभ या आलस्य से दुर्गन्धित अर्क पी जावे तो ग्लानि उत्पन्न हो, कय होती है, आलस्य बढ़ता है। इसके दोष दूर करने का यही उपाय है कि चतुरता से कय ही करावे ॥ ७७-७८ ॥

दीपोद्भवप्रसूनानामिपबेत्कथ पलं जलम् ।
अर्कदुर्गन्धिविभ्रष्टो मालत्या दुस्तृषार्दितः ॥७९॥

अर्क की दुर्गन्ध से उठे हुए रोग की शान्ति के लिए मालता और चँबेली आदि के खिले हुए फूलों का एक पल अर्क पीना चाहिए ॥ ७९ ॥

छः प्रकार की अग्नि के नाम

अर्कनिष्कासनार्थाय क्रमाद्देयाः षडग्नयः ।
धूमाग्निश्चैव मन्दाग्निर्दीपाग्निर्मध्यमस्तथा ॥
खराग्निश्च भटाग्निश्च तेषां वक्ष्यामि लक्षणम् ८०

अर्क निकालने के लिए छः प्रकार की अग्नि से काम लेना चाहिए। वे छः अग्नि ये हैं १ धूमाग्नि, २ मन्दाग्नि, ३ दीपाग्नि, ४ मध्यमाग्नि, ५ खराग्नि और ६ भटाग्नि इनके लक्षण कहते हैं ॥ ८० ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

धूमाग्नि के लक्षण

विज्वालो यो धूमशिखो धूमाग्निः स उदाहृतः ८१

जिस अग्नि में विना ज्योति के बहुत ऊचा धुआँ उठे उसे धूमाग्नि कहते हैं ॥ ८१ ॥

दीपाग्नि के लक्षण

द्वाभ्यां तस्य चतुर्थाभ्यां योऽग्निर्दीपाग्निरुच्यते ।

उस धुएँवाली अग्नि को चौगुना करने से दीपक के समान जो लव निकलती है उसे दीपाग्नि कहते हैं ।

मन्दाग्नि के लक्षण

चतुरंशेन तेनैव मन्दाग्निः स प्रकीर्तितः ॥ ८२ ॥

दीपाग्नि को चौगुना जलाने से मन्दाग्नि कहलाती है ॥ ८२ ॥

मध्यमाग्नि के लक्षण

अर्द्धीकृताभ्यां द्वाभ्यां तु मध्यमाग्निरुदाहृतः ।

दीपाग्नि तथा मन्दाग्नि के बीच की ज्योतिवाली अग्नि को मध्यमाग्नि कहते हैं ।

खराग्नि के लक्षण

अर्द्धैस्तैः पञ्चभिः प्रोक्तः खराग्निः सर्वकर्म्मसु॥८३॥

पूर्ण अग्नि का पाँचवाँ हिस्सा खराग्नि कहलाता है । यह अग्नि सब कामों में लाने योग्य होता है ॥ ८३ ॥

भटाग्नि के लक्षण

मस्तकावधिपात्रस्य चतुर्दिक्षु क्रमेण च ।
प्रसरन्ति यदा ज्वालाः स भटाग्निरुदीरितः॥८४॥

जिस अग्नि की लौ पात्र के ऊपर तक चारों ओर से निकलती है उसे भटाग्नि कहते हैं ॥ ८४ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अर्क निकालने के लिए अग्नि का समय

सार्द्धयामं च यामं च यामार्द्धं च मुहूर्त्तकम् ।
मुहूर्त्तमात्रमित्येवमर्कार्थं वह्नयः स्मृताः ॥ ८५ ॥

अब अर्क निकालने के लिए अग्नि जलाने का समय बतलाते हैं। पहले डेढ़ पहर, दूसरे एक पहर, तीसरे आधा पहर, चौथे दो घड़ी ॥ ८५ ॥

अर्क निकालने के लिए ईंधन

ससारमतिशुष्कं यं मुष्टिमध्ये समेष्यति ।
तत्काष्ठं ग्राह्यमित्याहुः खदिरादिसमुद्भवम् ॥ ८६ ॥

अर्क निकालने के लिए ईंधन बहुत सूखा और भारी होना चाहिए। हलका और घुना न हो। खैर की लकड़ी इसके लिए बहुत अच्छी होती है ॥ ८६ ॥

अर्क रखने का पात्र

जीर्णास्थिपात्रे गृह्णीयादर्कं वा काचसम्भवे ।
पाषाणकेऽथवा पात्रे ह्यभावे मृन्मये न्यसेत् ॥ ८७ ॥

ऊपर कहे हुए जीर्णास्थि पात्र में उस अर्क को रक्खे अथवा काँच या पत्थर के पात्र में रक्खे, यदि यह बर्तन न हों तो मिट्टी के बर्तन में रख दे ॥ ८७ ॥

अर्क पीने की विधि

पिबेदर्कमनिर्वार्य पीत्वा ताम्बूलभक्षणम् ।
कुर्य्याद्भुक्तताम्बूलो लवङ्गं भक्षयेत्तु च ॥ ८८ ॥

अर्क पीने के बाद पान खा लेना चाहिए। यदि पान न मिल सके तो लौंग खा ले ॥ ८८ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अर्क की प्रशंसा

ये ये द्रव्यगुणाः प्रोक्ताः सर्वे तेऽर्कं समाश्रिताः ।
सेवेतार्कं श्रियस्तस्माद्राजा परमधार्मिकः ॥ ८९ ॥

जिन औषधियों में जो गुण होते हैं वही उन औषधियों के अर्क में भी होते हैं । इसलिए जो मनुष्य इसका सेवन करते हैं, उनको बड़ा लाभ होता है ॥ ८९ ॥

मर्दनादिषु सर्वत्र द्रव्यं तैलं प्रयोजयेत् ।
अर्क एव प्रयोक्तव्यो भक्षणे न तु भोजने ॥ ९० ॥

औषधों का तेल केवल शरीर में मलने के काम आता है । उसे पीना नहीं चाहिए । पीने के लिये अर्क उत्तम होता है ॥ ९० ॥

स्वस्थेन रोगिणां वापि याचितोऽर्कश्च येन वा ।
ज्ञात्वा तल्लक्षणं दद्यादन्यथा ब्रह्महा भवेत् ॥ ९१ ॥

स्वस्थ मनुष्य, अथवा रोगी मनुष्य या कोई भी मनुष्य यदि वैद्य से अर्क माँगे तो उसके लक्षण देखकर अर्क अवश्य देना चाहिए । जो वैद्य माँगने से अर्क नहीं देता उसे ब्रह्महत्या का पाप लगता है ॥ ९१ ॥

दूत के वचनों का विचार

वर्णस्वराणां प्रमितिं दूतोक्तानां हि कारयेत् ।
एकयुक्तां द्विगुणितो त्रिभिर्भागं समाहरेत् ॥ ९२ ॥
एकशेषे गुणश्शीघ्रं द्विशेषे वर्द्धते गदः ।
त्रिशेषे मरणं वाच्यं स्वार्थं याचयतेऽथवा ॥ ९३ ॥
अर्कं तदेतद्विज्ञाय दद्याद्योग्यं न चान्यथा ।
गदिना तु यदा दूतः प्रेषितस्तद्विचारयेत् ॥ ९४ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रोगी का भेजा हुआ दूत वैद्य के पास आकर जो कुछ कहे उसके सब अक्षर स्वर सहित गिन लेना चाहिए। फिर उसमें एक अंक और जोड़कर उसका दूना करदे। उसमें तीन का भाग देने से जितने अंक बचें उनसे रोगी के अच्छे होने या न होने का विचार कर ले। यदि एक अंक बचे तो समझ ले कि औषध तत्काल गुण करेगी। दो अंक बचें तो रोग बढ़ेगा और तीन अंक बचने से रोगी की मृत्यु हो जायगी। इस बात का विचार करके अर्क देना चाहिए। इसका विचार किये बिना अर्क न दे। रोगी का दूत आने पर इतना और विचार लेना चाहिए सो कहता हूँ॥ ९२-९४॥

नपुंसकान्त्यैरूनास्तु स्वरा एकादश प्रिये।
वर्णास्तत्संख्यका लेख्याः कचटाद्यास्तु तत्स्थले ९५॥
एकादशसु कोष्ठेषु क्रमादङ्कांश्च विन्यसेत्।
रसास्त्रयोद्वयं वेदाः पर्वता ऋतवः कृताः॥ ९६॥
वह्नयः पृथिवी शून्यं चन्द्रमाश्च ह्यतिक्रमात्।
विहाय जीवदूतस्य नामाक्षरसुयोजनम्॥ ९७॥
एकमेवातुरे युक्त्वा द्वयोरष्टावशेषितम्।
कृत्वाङ्कयोगं गदिनोऽधिकशेषे शुभं भवेत्॥९८॥
समशेषे दीर्घरोगो न्यूनशेषे तदा मृतिः।
एतद्विचार्य दातव्यमन्यदप्यौषधं बुधैः॥ ९९॥
चक्रद्वयं तु योऽज्ञात्वा दद्यादर्कं विमोहितः।
जायते तद्यपयशस्तत्र चापि मृते सति॥ १००॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हे प्रिये, ग्यारह स्वर ग्यारह कोष्ठों में लिखे। उनके नीचे क्रम से क, च, ट, त, प, य, श, क्ष, त्र, ज्ञ, छं ये ग्यारह अक्षर लिखे। फिर इन अक्षरों के नीचे क्रम से ६, ३, २, ४, ८, ६, ४, ३, १ और शून्य ० लिख दे। दूत के नाम के अक्षर स्वर समेत गिने और उसी प्रकार रोगी के नाम के अक्षर गिन ले। उनमें एक और जोड़कर आठ का भाग दे। बाकी जो बचें उनको देखे कि किसके अंक अधिक हैं। रोगी के अंक अधिक हों तो शुभ समझिये, दोनों के बराबर हों तो रोग की वृद्धि और रोगी के अक्षर कम हों तो रोगी की मृत्यु समझे। और भी ग्रन्थों में रोगीचक्र हैं उनको विचार कर औषध देना चाहिए। जो वैद्य इसका विचार किये बिना लोभवश औषध दे देता है वह इस लोक और परलोक में अपयश का भागी होता है॥ ९५–१००॥

आतुरोद्धारचक्रमेकादशकोष्ठेषु

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	कोष्ठसं०
अ	इ	उ	ऋ	लृ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	स्वर
क	च	ट	त	प	य	श	क्ष	त्र	ज्ञ	छं	वर्ण
ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष	०	०	०	०	वर्ण
ग	ज	ड	द	ब	ल	स	०	०	०	०	वर्ण
घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह	०	०	०	०	वर्ण
ङ	ञ	ण	न	म	०	०	०	०	०	०	वर्ण
६	३	२	४	८	६	४	३	१	०	०	अंक ११

इति पहला शतक समाप्त।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दूसरा शतक

अथातः संप्रवक्ष्यामि ह्यर्कनिस्सारणं प्रिये ।
पञ्चप्रकारद्रव्यस्य कुर्यान्निष्कासनं बुधः ॥ १ ॥

औषधों के पाँच भेद

अत्यन्तकठिनं चाद्यं कठिनं च द्वितीयकम् ।
आर्द्रं तृतीयमुद्दिष्टं चतुर्थं पल्वलं भवेत् ॥ २ ॥

अर्क निकालने की विधि

पञ्चमं तु द्रवद्रव्यं तेषां विधिरथोच्यते ।
बुसवच्चूर्णयेद्द्रव्यमत्यन्तकठिनं तु वै ॥ ३ ॥
द्विगुणं निक्षिपेत्तोये छायायां स्थापयेत्तु तत् ।
यावच्छुष्कं भवेत्तोयं द्रव्यं स्याच्छिथिलं तथा ॥४॥
ततः पुनः क्षिपेत्तोयं पूर्वद्रव्यं समं भिषक् ।
कृत्वाष्टप्रहरैस्तप्तं सूर्यचन्द्रकरैरलम् ॥ ५ ॥
संपूज्य गणपं सूर्यं भैरवं कुलदेवताम् ।
निक्षिपेदर्कयन्त्रे तच्छित्वास्यार्कं समाहरेत् ॥ ६ ॥

रावण ने कहा हे प्रिये ! अब मैं अर्क निकालने की विधि बतलाता हूँ । बुद्धिमान् वैद्य पाँच प्रकार की औषधों से अर्क निकाले ॥ १ ॥ उन पाँच प्रकार की औषधों में पहली अत्यन्त कठिन, दूसरी कठिन, तीसरी गीली, चौथी ढीली और पाँचवीं पतली अर्थात् टपकनेवाली है । अब उनके अर्क निकालने की विधि बतलाता हूँ, सुनो । अत्यन्त

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कठिन औषध का अर्क निकालना हो तो उसको कूटकर भूसे के समान कर ले। २—३। फिर उसे उसके दूने पानी में डालकर छाया में रख दे। जब उसमें का जल सूख जाय तब फिर उतना ही पानी डाल दे। ४। फिर उसे आठ पहर तक धूप और चाँदनी में रक्खे, अर्थात् चार पहर दिन को धूप में और चार पहर चन्द्रमा की चाँदनी में रक्खे। ५। उसके बाद गणेश, सूर्य, भैरव और कुलदेवता की पूजा करके उस औषध को अर्क निकालने के पात्र में भरकर उसका अर्क निकाल ले। ६।

वर्षाधिकं तु यद्द्रव्यमत्यन्तकठिनं च यत्।
चन्दनादीनि सर्वाणि ह्यत्यन्तकठिनानि हि ॥ ७ ॥

जो औषध एक वर्ष से अधिक की पुरानी होगई हो और बहुत कठिन हो, जैसे चन्दन आदि, उसके अर्क निकालने की यही विधि है। ७।

औषधों की परख

कीटैर्भुक्तं घुणैर्भुक्तं यच्च गन्धविवर्जितम्।
रहितं च रसेनापि नार्क कर्मणि योजयेत् ॥ ८ ॥

जिस औषध में कीड़े अथवा घुन लग गये हों और जिसमें रस न रह गया हो वह औषध अर्क निकालने के काम की नहीं रह जाती। ८।

यथार्के संस्थितं द्रव्यं कुर्याद्भोक्तुस्तथा वपुः।
अर्कं तरुणभैषज्यं तस्मात्संयोजयेत्प्रिये ॥ ९ ॥

जैसी ही उत्तम औषधों का अर्क निकाला जायगा वैसा ही वह पीनेवाले का शरीर पुष्ट करेगा। इसलिए उत्तम औषधों का अर्क निकालना चाहिए। ९।

जवान्यजाजीत्रिकुटभूनिम्बादिकमौषधम्।
ज्ञेयं तत्कठिनं द्रव्यं तदर्कस्य विधिं शृणु ॥१०॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अजवायन, कालाजीरा, त्रिकुट (सोंठ, मिर्च, पीपल) और चिरायता आदि जो कठिन औषधें हैं उनके अर्क निकालने की विधि सुनो । १० ।

द्विगुणं निक्षिपेत्तोयं द्रव्ये हि कठिने प्रिये ।
अष्टप्रहरकं तं च कुर्यात्पर्यायमेककम् ॥ ११ ॥

हे प्रिये, जिस औषध का अर्क निकालना हो उसे पहले उसके दूने पानी में डालकर चार पहर धूप में और चार पहर चाँदनी में रक्खे । ११ ।

रक्षेद्द्रव्यं द्विगुणितं दृष्ट्वा देशं तु कालकम् ।
पश्चाद्दत्त्वार्कयन्त्रे तदर्कं निष्कासयेच्छनैः ॥ १२ ॥

देश और काल का विचार करके यदि आवश्यकता समझे तो उसके दूने समय, अर्थात् आठ पहर धूप और आठ पहर चाँदनी में रक्खे । फिर उसे अर्क निकालने के पात्र में भरकर उसका अर्क निकाल ले । १२ ।

आर्द्रं द्रव्यं द्विधा प्रोक्तं सरसं नीरसं तथा ।
सदुग्धं गुप्तरसकं द्विधा नीरसमुच्यते ॥ १३ ॥

गीली औषधें दो प्रकार की होती हैं । एक रसीली, दूसरी नीरस । एक दूध सहित और दूसरी गुप्तरस । उनमें नीरस के भी दो भेद हैं । १३ ।

वास्तुकं सार्षपं शाकं निर्गुण्ड्यैरण्डमार्कवम् ।
धत्तूराद्यमिदं सर्वमार्द्रं सरसमुच्यते ॥ १४ ॥

बथुआ, सरसों का शाक, सम्हालू, अरण्ड, भृंगराज और धतूरा,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ये औषधें गीली और रसीली हैं। इनके अर्क निकालने की विधि बतलाता हूँ। १४।

एषां नालांश्चूर्णयित्वा त्रिंशांशं निक्षिपेज्जलम्।
मुहूर्त्तमुष्णे संस्थाप्य ग्राह्योऽर्को विबुधोत्तमैः ॥१५॥

इनके डंठलों को कूटकर बीस गुने पानी में डाल दे। फिर दो घड़ी धूप में रखकर पात्र में भर दे और इनका अर्क निकाल ले। १५।

पत्तों और निरस औषधों के अर्क निकालने की विधि

पत्राणि च शतांशेन तुल्यतोयेन सेचयेत्।
दद्याद्घटीमर्ककरे ततोऽर्कं कलयेच्छनैः ॥ १६ ॥

पत्तों का अर्क निकालना हो तो उनको सौगुने पानी में डालकर एक घड़ी धूप में रक्खे। उसके बाद उनका अर्क खींच ले। १६।

वटाश्वत्थकरीराद्यमार्द्रद्रव्यं तु नीरसम्।
विंशांशं निक्षिपेत्तोयं यामं घर्मञ्च धारयेत् ॥१७॥
ततो निष्कासयेदर्कं क्रमवृद्ध्यग्निनोक्तवत्।

बरगद, पीपल और करीर (बाँस का अँखुआ) ये गीले और नीरस द्रव्य हैं। इनका अर्क निकालना हो तो इनको बीस गुने पानी में डालकर एक पहर तक धूप में रक्खे। १७। फिर उसी प्रकार के अग्नि द्वारा, जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है, अर्क निकाले।

दूधवाली औषधों के अर्क निकालने की विधि

सदुग्धं तु द्विधा प्रोक्तं मृदुतीक्ष्णमितिक्रमात् ॥१८॥

जिन औषधों में दूध होता है वे दो प्रकार की हैं। एक वे जिनका दूध मृदु होता है और दूसरी वे जिनका दूध तीक्ष्ण होता है। १८।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शातलावज्रसेहुण्डशौरिण्याद्यास्तु तीक्ष्णकाः ।
खण्डानि तेषां कृत्वाऽथ निक्षिपेदुष्णके जले ॥१९॥
दिनत्रये तु निष्कास्य तोयं दद्याच्च कुट्टयेत् ।
यावन्न दृश्यते दुग्धं दद्यात्तोयं दशांशकम् ।
शनैर्निष्कासयेदर्कं स तु तीक्ष्णार्कसंज्ञकः ॥ २० ॥

सेहुँड़, थूहर और सोरली आदि तीक्ष्ण कड़े दूधवाली औषधों के टुकड़े-टुकड़े करके गरम पानी में छोड़ दे। १९। तीन दिन के बाद उसे पानी से निकालकर पानी डाल-डालकर कूट डाले। जब उसमें दूध न देख पड़े तब उसका दश भाग पानी डालकर अर्क निकाल ले। इस अर्क का नाम तीक्ष्ण अर्क है। २०।

दुग्धिकार्कक्षिरिण्याद्यामृदुदुग्धाः प्रकीर्त्तिताः॥२१॥
जले चतुर्गुणे दद्यात्तान् घर्मे विनिवेशयेत् ।
यावज्जलस्योष्णता स्यात्ततो यन्त्रे विनिक्षिपेत् ।
शनैर्निष्कासयेदर्कं ततोऽर्को मृदुसंज्ञकः ॥२२॥

दूधी, मदार और खिरनी, ये मृदु दूधवाली औषधें हैं। २१। इन औषधों में चौगुना पानी डालकर धूप में रख दे। जब वह पानी गरम हो जाय तब औषध समेत उसे पात्र में भरकर उसका अर्क निकाल ले। यह मृदु अर्क है। २२।

फलों और काष्ठों के अर्क निकालने की विधि

खण्डीकृत्वैव चाम्राणां फलानां मृदुपाकिनाम् ।
सरसानां च गृह्णीयादर्कं तोयेन वर्जितम् ॥ २३ ॥

फलों का अर्क निकालना हो तो पक्के और रसीले फल लेकर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उनके टुकड़े-टुकड़े करके उनका अर्क निकाल ले। फलों में पानी न मिलाना चाहिए। २३।

काष्ठोदुम्बरिकादीनामार्द्राणां दारुभागिनाम् ॥२४॥
कृत्वा स्वल्पानि खण्डानि अशीत्यंशं प्रदापयेत्।
पृथक् पृथक् चतुर्वारं स्वर्जिक्षारं च सैन्धवम् ॥२५॥
दत्त्वा विमर्दयेत्सर्वं चत्वारिंशांशकं जलम्।
क्षिप्त्वा तत्कलशे घर्मे यामार्द्धेनोष्णता भवेत्।
ततो यन्त्रे हि तद्दत्त्वा गृह्णीयादर्कमुत्तमम् ॥ २६ ॥

गूलर आदि की लकड़ी का अर्क निकालना हो तो उनकी गीली लकड़ी लेकर टुकड़े-टुकड़े कर ले और उनका अस्सीवाँ हिस्सा पानी डालकर फिर उनमें अलग-अलग चार बार करके सज्जी और सेंधा-नमक मिलावे। उसे दोनों हाथों से मले और फिर चालीसवाँ हिस्सा पानी मिलाकर चार घड़ी तक धूप में रक्खे। जब वह पानी गरम हो जाय तब उसे पात्र में भरकर उसका अर्क निकाल ले। २४—२६।

पक्के फलों और फूलों के अर्क निकालने की विधि

अतिपक्वफलानां तु वितोयं चार्कमाहरेत्।
पुष्पार्कार्थं षोडशांशजलं पुष्पेषु चार्पयेत् ॥ २७ ॥

बहुत घुले हुए और रसीले फलों का अर्क निकालना हो तो बिना पानी मिलाये ही उनका अर्क निकालना चाहिए। फूलों का अर्क निकालना हो तो उनका सोलहवाँ हिस्सा पानी मिलाकर पात्र में भरकर अर्क निकाल ले। २७।

कायफल आदि काष्ठों के अर्क निकालने की विधि

अथवा कट्फलादीनि चिह्निकादीनि यानि च २८

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रक्षेप्यान्युदके तानि बहुधा दोषशान्तये ।
ततश्चत्वारिंशदंशं जलं दत्त्वा समाहरेत् ॥ २९ ॥

कायफल और चीड़ के काठ का अर्क निकालना हो तो उनको कई बार पानी में भिगोवे और सुखावे । जबतक उनकी गन्ध न दूर हो जाय तबतक इसी प्रकार भिगोता और सुखाता रहे । गन्ध निकल जाने पर चालीसवाँ हिस्सा पानी छोड़कर अर्क निकाल ले । २८—२९ ।

द्रव पदार्थों के अर्क निकालने की विधि

तदर्कमथ च द्रावद्रव्यार्कोपाय उच्यते ॥ ३० ॥

अब द्रवद्रव्यों के अर्क निकालने का उपाय कहते हैं । ३० ।

अर्क निकालने के समय औषधों के ढकन

द्रवद्रव्यक्षेपणे च प्रोच्यते बाधकल्पना ।
पिधानानि विचित्राणि तेषामन्तो न विद्यते ॥ ३१ ॥

द्रव द्रव्यों में उबाल आने के दोष दूर करने के लिए उनके ढकने के उपाय कहते हैं । उनके ढकने की बहुत तरकीबें हैं और उनका बहुत विस्तार है । ३१ ।

शतपत्रप्रसूनैर्वा जात्युत्थैर्मालतीभवैः ।
पारिजातैः केतकिजैर्वा पिधानं समाचरेत् ॥ ३२ ॥

कमल, चमेली, मालती, पारिजात और केतकी आदि के फूलों से द्रव द्रव्यों को ढकना चाहिए । ३२ ।

द्रवपदार्थों के ढकन

दुग्धे दध्न्यथवा तक्रे क्षौद्रं तैले च सर्पिषि ।
मूत्रादौ देयतोये च चम्बेल्यादिपिधानकम् ॥ ३३ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दूध, दही, मट्ठा, शहद, तेल, घी और मूत्र आदि का अर्क निकालने के समय उनको चमेली के फूलों से ढकना चाहिए। ३३।

स्तम्भक द्रव्यों का वर्णन

कान्तयायससत्त्वस्य कृतं पात्रमनुत्तमम्।
निष्कासयेदेवमर्कं द्रवद्रव्यस्य नान्यथा ॥ ३४ ॥

कान्तीसार और लोहसत मिलाकर जो उत्तम पात्र बनाया जाता है उसमें द्रव पदार्थों का अर्क निकालना चाहिए। ३४।

अथ च स्तम्भकं द्रव्यं दध्नो हि नवनीतकम्।
दृढबिल्वो जलस्थोक्तो मधूच्छिष्टं तु सर्पिषः ॥ ३५॥

दही को रोकनेवाला मक्खन, जल को रोकनेवाली बेलगिरी और घी रोकनेवाला शहद है। ३५।

गोकण्टकस्तु दुग्धस्य तथा मद्यस्य कीचकम्।
तैलस्य तस्य पिण्याकं सर्वं घृतसमन्वितम् ॥३६॥
यन्त्रे दत्त्वा द्रवद्रव्यं यथास्थालीनिवेशनम्।
तथा स्थलं स्थापयित्वा द्रव्यैर्यन्त्रं प्रपूरयेत् ॥३७॥
आच्छाद्य सारिकैः पूर्णां स्थालीं कुर्यादधोमुखीम्।
तथा चाकर्षितः सर्वो द्रवः फेनं परित्यजेत् ॥३८॥

दूध को रोकनेवाला गोखुरू, मद्य को रोकनेवाला बाँस का सार और तेल को रोकनेवाली खली है। इनका वर्णन द्रवद्रव्यों के ढकने के लिए किया गया है। ये सब वस्तुएँ घी के साथ यन्त्र में रक्खे और द्रव्यों को यथायोग्य थाली में रख ले, जिसमें पतलेपन के कारण बह न जायँ। ३६–३७। फिर सब द्रव्यों को यन्त्र में भर कर थाली

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

का मुँह नीचे करके उसे अच्छी तरह ढक दे और इसी प्रकार से द्रव द्रव्यों का अर्क खींच ले । ३८ ।

अर्क की दुर्गंध निकालने की विधि

दुर्गन्धियों भवेदर्कस्तं कुर्यात्सुचगन्धकम् ।
सर्वेषामेव मांसानां दुर्गन्धानां च सर्वशः ॥३६॥
घृताभ्यक्ताहिङ्गुजीरमेथिकाराजिकाकृताः ।
नवीनायां हण्डिकायां दद्याद्धूपं पुनः पुनः ॥४०॥
तत्र दद्यात्तदर्कन्तु यथा दुर्गन्धता व्रजेत् ।
तथा पुनः पुनः कार्यं जायते गन्धवारणम् ।
आयाति रोचको गन्धः स भवेद्वह्निदीपनम् ॥४१॥

जिस अर्क में दुर्गन्धि आती हो, जैसे दुर्गन्धित मांस आदि का अर्क हो, तो उसे सुगन्धित कर लेना चाहिए । ३९ । हींग, जीरा, मेथी और राई का चूर्ण घी में मिलाकर, नई हांडी में रखकर; कई बार धूप देने से अर्क की दुर्गन्धि दूर होजाती है । ४० । जब तक उस अर्क की दुर्गन्धि दूर न हो जाय तब तक बारबार इसी प्रकार धूप देता रहे । इस धूप से दुर्गन्धि निकल जायगी और अर्क सुगन्धित होजायगा । यह अर्क जठराग्नि को बढ़ाता है । ४१ ।

अर्क को शुद्ध रखने के लिए गन्धक की धूप

सर्वेष्वर्कप्रयोगेषु गन्धपाषाणवासना ।
अर्काणान्तु प्रदातव्या ते भवत्यर्कसम्भवाः ॥४२॥

सब अर्कों में गन्धक की धूप अवश्य देनी चाहिए । इसकी धूप देने से अर्क श्रेष्ठ हो जाते हैं । ४२ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वातादि दोषों को दूर करने की धूप

सर्वत्र वातरोगेषु महिषाक्षादिवासना ।
महिषाक्षं तथा रालं निर्यासः सरलस्य च ॥ ४३ ॥
कृष्णागुरुलवङ्गश्च महिषाक्षादिपञ्चकम् ।
सर्वेषु पित्तरोगेषु चन्दनादिकवासनाम् ॥
सर्वेषु कफरोगेषु जटामांस्यादिवासनाम् ॥ ४४ ॥

सब प्रकार के वातनाशक अर्कों में भैंसिया गूगुल की धूप देनी चाहिए । गूगुल, राल, सर्जरस, काला अगरु और लौंग, इनको महिषाक्ष आदि पंचक कहते हैं । वातनाशक अर्कों में इनकी धूप देनी चाहिए । पित्तनाशक अर्कों में चन्दन आदि की और कफनाशक अर्कों में जटामांसी की धूप देनी चाहिए । ४३–४४ ।

चन्दनादि सुगन्धित वस्तुएँ

चन्दनं च तथोशीरं कर्पूरो गन्धवाकुची ।
एलाकचूरिणीधूली सप्तैते चन्दनादयः ॥ ४५ ॥

चन्दन, खस, कपूर, वाकुची, इलायची, कचूर और धमासा ये सात चन्दनादि हैं । ४५ ।

जटामांसी नखं पत्री लवङ्गं तगरं रसः ।
शिलायागन्धपाषाणः सप्त मांस्यादिका अमी ॥ ४६ ॥

जटामांसी, नखी, तेजपात, लौंग, तगर, रसकपूर और गन्धक ये सात जटामांस्यादि हैं । ४६ ।

द्वादशांग धूप

वासयेद्द्वादशाङ्गेन त्रिदोषघ्नेन चार्ककम् ।
नश्यन्ति येन धूपेन उपग्रहपिशाचकाः ॥ ४७ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तीनों दोषों को दूर करनेवाली द्वादशाङ्ग नाम की धूप से सब अर्कों को सुगन्धित करना चाहिए। इस धूप से नवग्रह और पिशाच आदि की बाधा भी शान्त हो जाती है। ४७।

दशांग धूप

पञ्चांशो गन्धपाषाणस्तावन्महिषगुग्गुलुः।
चतुरांशं चन्दनं च जटामांसी च तावती॥ ४८॥
त्रिभागः सर्जकः क्षारस्तावदेव हि रालकम्॥
उशीरन्तु द्विभागं स्याद् घृतमष्टनखं समम्॥४६॥
कर्पूरो मृगनाभिश्च एकभागौ प्रकीर्त्तितौ।
एषो दशाङ्गधूपस्तु रुद्रस्यापि मनो हरेत्॥ ५०॥

अब दशाङ्गधूप की औषधें बताते हैं। गन्धक पाँचभाग, गूगुल पाँच भाग, चन्दन चारभाग, जटामांसी चारभाग, सज्जी और राल तीन तीन भाग, खस दो भाग, घी अट्ठाइस भाग, कपूर और कस्तूरी एक एक भाग लेकर दशाङ्गधूप तैयार करे। यह धूप शिवजी के भी मन को मोहित कर देती है। ४८-५०।

प्याज और लहसुन की दुर्गन्ध दूर करने की विधि

पलाण्डुलशुनादीनां निर्गन्धीकरणं शृणु।
उत्पाद्यान्तर्विषं सम्यक् तक्रमध्ये विनिक्षिपेत्॥५१॥
पर्यायमेकमत्यम्ले मध्येऽस्मिन् विरसे सति।
दद्यान्निष्काश्यान्यतक्रं कुर्यात्तच्चाष्टयामकम्॥५२॥

अब लहसुन और प्याज की दुर्गन्धि दूर करने का उपाय बताता हूँ, सुनो। लहसुन और प्याज का छिल्का निकालकर फिर उसे खट्टे मट्ठा (छाँछ) में छोड़ दे। आठ पहर के बाद मट्ठा से निकालकर सुखावे

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

और फिर उसे खट्टे मट्ठा में छोड़े। आठ पहर मट्ठा में रखने से जब वह नीरस होजाय तब उसे मट्ठा से निकाल कर सुखा ले। सूख जाने पर फिर उसे आठ पहर तक मट्ठे में रक्खे। ५१-५२।

द्रोणपुष्पीरसेष्वेव मूर्वापत्ररसेऽपि वा।
त्रिपर्यायोत्तरं तत्तु रसोनं क्षालयेत्सुधीः ॥ ५३ ॥
हरिद्राराजिकातोये स्थाप्यं पर्यायमेककम्।
उष्णोदकेन संक्षाल्य पर्यायं वासयेत्ततः ॥ ५४ ॥
सहस्रपत्रैः पुष्पैर्वा अभावे पल्लवैरपि।
आलोडयेद्दशांशेन पञ्चांशेन च मस्तुना ॥ ५५ ॥
युक्तं कृत्वा याममात्रं स्थापयेत्प्रकटातपे।
ततो निष्काशयेदर्कं जात्यादिकपिधानितम् ॥५६॥
तस्यार्कस्य सुगन्धेन एकदा मोहितो हरः।
को जानाति रसोनस्य ह्यर्कोऽयमिति भूतले ॥५७॥

फिर मट्ठे से निकालकर उसे गूमा या मूर्वा के पत्तों के रससे तीन बार धोवे। ५३। फिर हल्दी और राई के पानी में भिगोकर रख दे। उसके बाद गरम पानी से धोकर आठ पहर तक कमल के फूलों में रक्खे। ५४। यदि कमल के फूल न मिल सकें तो कमल के पत्तों में रक्खे। उसके बाद दसवें या पाँचवें हिस्से दही के तोर में घोटे। ५५। फिर एक पहर तक तेज धूप में रक्खा रहने दे और फिर चमेली के फूलों से ढककर अर्क निकाल ले। ५६। वह अर्क अत्यन्त सुगन्धित होता है। उसे कोई नहीं कह सकता कि यह प्याज और लहसुन का अर्क है। इसकी सुगन्धि से एक बार शिवजी भी मोहित हो गये थे। ५७।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मांसों के अर्क की प्रशंसा

एकतः सर्व एवार्कः मांसार्कस्तु तथैकतः ।
मया स्वर्गो गृहीतस्तु प्राप्तं तत्र च मामृतम् ॥५८॥
तदा प्रोक्ता शिवस्याग्रे मम धिग्जीवनं प्रभो ।
नीता वाथ प्रयुक्ता वा सुधा देवैर्मया तु सा ॥५६॥
न दृष्टा तत्र देवेश शिरश्छेदं करोम्यहम् ।
ततः प्रसन्नो गिरिशो वाक्यं मां प्रति सोऽब्रवीत् ६०
दत्तं मया समस्तं ते देवावध्यत्वमेव च ।
किन्ते कार्यं तु सुधया सुधातेऽधिकरोचनम् ॥ ६१॥
संप्रवक्ष्यामि मांसार्कं मद्यमर्कं तथैव च ।
द्रव्याणां विजयादीनां लभ्यते यैः सुखं महत्॥ ६२॥

एक ओर सब औषधों के अर्क और एक ओर मांस का अर्क है अर्थात् केवल मांस का अर्क ही सब अर्कों के समान गुणदायक है । स्वर्ग को जीत लेने पर जब मुझे अमृत न प्राप्त हुआ तब मैंने शिवजी के पास जाकर उनसे कहा कि मेरे जीवन को धिक्कार है। अमृत को तो देवता पहले ही चुरा ले गये और उन्होंने आपस में बाँटकर उसे पी लिया। मैंने आँखों से भी अमृत को नहीं देखा इसलिये हे देवेश, अब मैं अपना शिर काट डालूँगा तब शिवजी ने प्रसन्न होकर मुझसे कहा कि हे दशानन, मैंने तुझे सब देवताओं से अवध्य किया है और वरदान दिया है कि तुझे कोई मार न सकेगा । फिर तू अमृत लेकर क्या करेगा ? मैं तुझको अमृत से भी बढ़कर रुचिकर मांस का अर्क और मदिरा का अर्क बतलाता हूँ। उसे पीकर तू विजयी होगा और सब प्रकार के द्रव्यों द्वारा अनेक सुख भोग करेगा। ५८-६२ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मांस के तीन भेद

मांसं तु त्रिविधं ज्ञेयं मृदुलं कठिनं घनम् ।
तेषामर्कं यथा प्रोक्तं यन्त्रान्निष्काशयेच्छनैः॥ ६३॥

मांस तीन प्रकार के होते हैं—कोमल, कठिन और घन । अर्क निकालने की जो विधि पहले बतलाई जा चुकी है उसी प्रकार यन्त्र द्वारा मांस का भी अर्क निकाल ले । ६३ ।

कोमल मांस के अर्क की विधि

मृदुलं यद्भवेन्मांसं चत्वारिंशांशकं पटुः ।
स्थूलखण्डीकृते तस्मिन् दत्त्वा तत्क्षालयेज्जलैः॥ ६४॥
षष्ठ्यंशेनाष्टगन्धेन तद्विलोड्य च निक्षिपेत् ।
रसमिक्षोरष्टमांशं तदभावे पयः क्षिपेत् ॥ ६५ ॥
जातीपत्रं लवङ्गं च त्वगेला नागकेशरम् ।
मरिचं मृगनाभिश्च विदुर्गन्धाष्टकं त्विदम् ॥ ६६॥
कार्यं पुष्पपिधानाद्यमर्कं निष्काशयेत्ततः ।
जायतेऽसौ महास्वादुः सुधाशयरसः प्रिये ॥ ६७॥

कोमल मांस के बड़े-बड़े टुकड़े करके उसका चालीसवाँ हिस्सा नमक मिला दे, फिर उसको पानी से धोवे । ६४ । उसके बाद उसका छठा हिस्सा अष्टगन्ध और आठवाँ हिस्सा ईख का रस मिलावे । यदि ईख का रस न मिल सके तो दूध मिला दे । ६५ । जावित्री, लौंग, दालचीनी, इलायची, नागकेसर, काली मिर्च और कस्तूरी । ये अष्टगन्ध हैं । ६६ । यन्त्र के मुँहपर सुगन्धित फूलों का ढक्कन देकर यत्न से उसका अर्क निकाल ले । यह अर्क बड़ा स्वादिष्ठ और अमृत के समान गुणदायक होता है । ६७ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कठिन मांस का अर्क निकालने की विधि

दृढमांसस्य खण्डानि लघून्येव प्रकल्पयेत् ।
दद्याच्च तुवरं तत्र लवणं प्रोक्तमादिकम् ॥ ६८ ॥
क्षालयेदारनालेन त्रिवारं कोष्णवारिणा ।
क्षालयेत्सप्तवाराणि हरेदर्कं तु पूर्ववत् ॥ ६९ ॥

कठिन मांस के छोटे-छोटे टुकड़े करके उसमें कषायरस और नमक छोड़कर कांजी से तीन बार धोवे । उसके बाद सात बार गरम पानी से धोकर यन्त्र में भर दे और पूर्वोक्त रीति से उसका अर्क निकाल ले । ६८—६९ ।

घन मांस का अर्क निकालने की विधि

घनमांसस्य खण्डानि कुर्यादतिलघूनि च ।
आलोड्य शङ्खद्रावेण क्षालयेत्पयसा पुनः ॥ ७० ॥
सप्तवाराणि लवणं क्षालयेद्वासयेत्पुनः ।
तद्दत्त्वा यन्त्रमध्ये तु हरेत्पूर्ववदर्ककम् ॥ ७१ ॥

घन मांस के छोटे-छोटे टुकड़े करके उसमें शंखद्राव छोड़कर उसे खूब हिलावे । फिर सात बार पानी से धोकर उसमें नमक मिला दे । इस प्रकार सात बार नमक मिलाकर और सात बार पानी से धोकर यन्त्र में भर दे और उसका अर्क निकाल ले । ७०—७१ ।

शंखद्राव बनाने की विधि

स्वर्जिक्षारं यवक्षारं श्वेतक्षारं च टङ्कणम् ।
सौभाग्यं क्षारकं सौरं क्षारं शङ्खभवं तथा ॥७२॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अर्कसेहुण्डपालाशक्षारश्च तुवरी तथा।
अपामार्गभवं क्षारं तथाष्टौ लवणानि च ॥ ७३ ॥

सज्जी, जवाखार, सफ़ेद खार और सुहागा इनका नाम सौभाग्यक्षार है। सोरा-खार, शंखक्षार, मदार का खार, सेहुँड का खार, ढाक का खार, तुवरीखार, अपामार्ग का खार और आठों नमक।७२–७३।

लवणाष्टकमेतच्च सैन्धवञ्च सुवर्चलम्।
विडं समुद्रसंजातमुद्भिजं रोमकं गडम् ॥ ७४ ॥
कृत्वा सर्वाणि चैकत्र निम्बूनीरेण भावयेत्।
एकविंशतिवाराणि काचकुप्यां निवेशयेत् ॥ ७५ ॥
नखांशनिम्बुकरसैः सर्वमार्द्रीकृतं तु तत्।
अधःसच्छिद्रपिठरी मध्ये कुप्पीं निवेशयेत् ॥ ७६ ॥
मृदुकर्पटसंयुक्तां सहेदग्निं यथाविधि।
तस्याग्रे कुप्पिका योज्या दीर्घकण्ठा मनोहरा॥७७॥
सा कुप्पिका जले स्थाप्या मेलयेच्च द्वयोर्मुखम्।
जलमुष्णं यथा न स्यात्तथैवोपरिपूरिका ॥ ७८ ॥
अग्नयः क्रमतो देया यामं यामं च पञ्चमम्।
अनेनैव प्रकारेण क्षाराकार्णां समुद्भवः ॥ ७९ ॥
दद्यादस्थीनि मांसानि शङ्खशुक्त्यादिकान्यपि।
सर्वाण्यपि विलीयन्ते शङ्खद्रावे न संशयः ॥ ८० ॥

आठ प्रकार के नमक ये हैं। सेंधा, सौवर्चल, विडलवण, समुद्रलवण, उद्भिजलवण, रोमकलवण, गडलवण और खारी लवण। इन सबको

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

एकत्र करके इक्कीस बार नींबू के रस में भावना दे, फिर उसे बोतल में भरकर उसका बीसवाँ हिस्सा नींबू का रस छोड़कर उसे गीला ही जिसके नीचे छेद निकला हो ऐसी अँगीठी में रख दे। हलके अन्दाज़ की कपड़मिट्टी कर दे, जो फूटै नहीं और अग्नि भी सह ले। उसके नीचे कुप्पिका (अर्क लेने का पात्र) छोटे मुँह और ऊँचे गले का और सुन्दर हो। उस कुप्पी को जल में रखकर दोनों का मुँह आपस में मिला दे, जिससे बोतल की गरमी से कुप्पिका का जल गरम न हो। इस युक्ति से पूर्वोक्त के क्रम से पाँच पहर आँच दे। इसी प्रकार से क्षारार्क बनता है। उसमें हाड़, मांस, शंख, सीपी और कौड़ी आदि जो कुछ भी डाले सो गलकर पानी के समान हो जायगा। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। ७४–८०।

कोमल मांसवाले जीव

पारावताजचटकाः शशशूकरटिट्टिभाः।
क्षुद्रमत्स्यादिकाः सर्वे मांसेषु मृदुलाः स्मृताः ८१॥

कबूतर, बकरा, चटक (गौरैया), शश (खरगोश), सुअर, टिट्टिभ और छोटी मछली आदि जीवों का मांस कोमल होता है। ८१।

कठिन मांसवाले जीव

मृगरोहीतकाद्याश्च मत्स्याः शल्लकिशम्बराः।
एते कठिनमांसाः स्युर्जीवास्तु जलचारिणः॥८२॥

हिरन, रोहित आदि मछली, शल्लकी और शम्बर (एक प्रकार की मछली) इन जीवों का मांस कठिन होता है। ८२।

घन मांसवाले जीव

गजकुम्भीरघण्टाद्याः सगन्धाः कर्करादयः।
गोधागोश्वालुलायाद्या घनमांसाः प्रकीर्तिताः८३॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हाथी, कुम्भीर, घड़ियाल और केकड़ा आदि, गोधा, गोह, कुत्ता और भैंसा आदि का मांस वन मांस है। ८३।

अन्नादिकों की मदिरा बनाने की विधि

अन्नादिसम्भवो योऽर्कस्तन्मद्यं परिकीर्तितम्।
तस्य भेदान्प्रवक्ष्यामि सटितात्तत्समुद्धरेत् ॥८४॥
तद्वासनानिवृत्त्यर्थमष्टगन्धं प्रयोजयेत्।
पूर्वोक्तैर्धूपयेद्धूपैर्जायते गन्धवर्जितम् ॥ ८५ ॥

अन्न आदि से निकाले हुए अर्क को मद्य कहते हैं। अब उसके भेद बतलाता हूँ। सब प्रकार की मदिराओं को सुगन्धित करने के लिए अष्टगन्ध का प्रयोग करे अथवा पूर्वोक्त द्रव्यों की धूप दे। धूप देने से मदिरा की दुर्गन्ध दूर हो जाती है। ८४—८५।

अर्द्धं तत्र जलं देयं सिद्धे देयोऽष्टगन्धकः।
तुषोदकं यवैरामैः स्वतुषैः शकलीकृतैः ॥ ८६ ॥
सौवीरं तु यवैश्चैवं निस्तुषैः शकलीकृतैः।
गोधूमैरपि सौवीरं जायते स्वल्पमादकम् ॥ ८७ ॥

उसमें आधा पानी मिला कर तैयार करे। उसके बाद अष्टगन्ध मिलावे तो बहुत उत्तम है। कच्चे जौ छिलके समेत कूटकर यन्त्र में भरकर मदिरा निकाल ले। उस मदिरा को तुषोदक कहते हैं। जौ के छिलके निकालकर जो अर्क खींचा जाता है उसे सौवार मदिरा कहते हैं। गेहूँ की भी सौवीर मदिरा बनाई जाती है, परंतु उसमें नशा कम होता है। ८६—८७।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आरनाल और धान्याम्ल मदिरा

आरनालं तु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषीकृतैः ।
धान्याम्लं शालिचूर्णादिकोद्रवादिकृतं भवेत् ॥ ८८ ॥

कच्चे गेहूँ का छिलका निकालकर जो मदिरा खींची जाती है, उसका नाम आरनाल है। धान के चावल का आटा और कोदों की जो मदिरा निकाली जाती है उसे धान्याम्ल मदिरा कहते हैं। ८८।

शण्डा की मदिरा

शण्डाकी राजिकायुक्तैः स्यान्मूलकदलद्रवैः ।
सर्षपस्वरसैर्वापि शालिपिष्टिकसंयुतैः ॥ ८९ ॥

राई, मूली और सरसों के पत्तों का रस चावलों की पिट्ठीमें मिलाकर जो मदिरा खींची जाती है उसे शण्डाकी मदिरा कहते हैं। ८९।

सूक्त मदिरा

कन्दमूलफलादींश्च सस्नेहलवणानि च ।
एकीकृतस्तु योऽर्कः स्यात्स सूक्तमभिधीयते ॥ ९० ॥

कन्दमूल फल के रस में नमक मिलाकर जो मदिरा निकाली जाती है उसे सूक्त कहते हैं। ९०।

अरिष्ट

पक्वौषधाम्बुसंसिद्धो योऽर्कः स स्यादरिष्टकम् ।
अरिष्टं लघुपाकेन सर्व्वतो हि गुणाधिकम् ॥ ९१ ॥

पकी हुई औषध में जल मिलाकर जो अर्क खींचा जाता है उसे अरिष्ट कहते हैं। हल्के पाक से जो अरिष्ट तैयार किया जाता है वह बड़ा गुणदायक होता है। ९१।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सुरा

शालिपेठकपिष्ट्यादि कृतो योऽर्कः सुरा तु सा।
पुनर्नवाशिवापिष्टैर्विहिता वारुणी स्मृता ॥ ६२ ॥

चावल और पेठा की पिट्ठी से जो अर्क निकाला जाता है उसे सुरा कहते हैं। पुनर्नवा और हड़ की पिट्ठी से जो अर्क निकाला जाता है उसका नाम वारुणी है। ६२।

शीतरस

इक्षोः पक्वैरसैस्सिद्धश्शीधुः पक्वरसश्च सः।
आमैस्तैरेव यः सिद्धः स च शीतरसः स्मृतः॥ ६३॥

ईख का पका हुआ रस जो सिद्ध किया जाता है उसे सीधु अथवा पक्वरस कहते हैं। ईख के कच्चे रस से निकाला हुआ अर्क शीतरस कहलाता है। ६३।

सात्त्विकी आदि मदिरा

पर्यायाद्यो भवेन्मद्यस्तामसो राक्षसप्रियः।
मण्डादिराजसो ज्ञेयस्ततो वै सात्त्विको भवेत् ॥ ६४॥
सात्त्विकं गीतहासादौ राजसं साहसादिके।
तामसं निन्द्यकर्माणि निद्रां च बहुधाचरेत् ॥ ६५॥

कई बार के खींचे हुए अर्क को तामस कहते हैं। यह अर्क राक्षसों को बहुत प्रिय है। मण्ड अर्थात् माँड़ आदि राजसी अर्क कहलाते हैं उससे भी कम अर्थात् जिससे चेष्टा बदले उसे सात्त्विक कहते हैं। नाचने, गाने और हँसी-खेल आदि के समय सात्त्विक अर्क पीना चाहिए और युद्ध आदि साहस के कामों में राजसी अर्क पीना उचित है। निन्दित कामों के करने और सोने के समय तामस अर्क पीना चाहिए। ६४–६५।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वारुणी मदिरा

पुनर्नवाशिलापिष्टैर्वारुणी विहिता स्मृता ।
संहितैस्तालखर्जूररसैर्या सापि वारुणी ॥ ६६ ॥
सुरावद्वारुणी लघ्वी पीनसाध्मानशूलनुत् ।
ग्राहिणी शोथगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रजित् ॥६७॥

पुनर्नवा को शिलपर पीसकर जो मदिरा तैयार की जाती है उसे भी वारुणी कहते हैं। कोई कोई वैद्य ताड़ और खजूर आदि के रस को भी वारुणी कहते हैं। वारुणी में सुरा के समान गुण हैं। यह हल्की होती है और पीनस, आध्मान, शूल, सूजन, गुल्म, बवासीर, संग्रहणी तथा मूत्रकृच्छ्र को नष्ट करती है। ९६–९७।

मादक द्रव्यों का अर्क

भङ्गादिमत्तद्रव्याणां यवानीपादयोगतः ।
अर्कं निष्काशयेद्धीमान् वर्द्धकः स्यान्मदस्य सः ६८

भाँग आदि नशीली औषधों में उनकी चौथाई अजवायन मिलाकर जो अर्क निकाला जाता है उसमें नशा अधिक होता है। ९८।

धतूरे आदि के बीजों का अर्क

धत्तूरादिकबीजानि क्षिप्त्वा पयसि धापयेत् ।
कण्ठशोषविबन्धादिरहितोऽर्को भवेत्स हि ॥६६॥

धतूरे के बीजों में दूध मिलाकर जो अर्क खींचा जाता है, वह कण्ठरोग और विबन्ध आदि रोगों का नाश करता है। ९९।

इति दूसरा शतक समाप्त

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तीसरा शतक

रावण उवाच

अथातः संप्रवक्ष्यामि केवलार्कगुणान् प्रिये ।

रावण ने कहा—हे प्रिय, अब मैं अर्कों के गुण बतलाता हूँ, सुनो ।

हड़ का अर्क

हरीतक्याः शूलकृच्छ्रकामलानाहनाशनः ॥ १ ॥

हड़ का अर्क शूल, मूत्रकृच्छ्र, कामला और अनाह रोग अर्थात् अफारा को नष्ट करता है । १ ।

विभीतकस्य तृट्छर्दिकफकासविनाशनः ।

बहेड़े का अर्क प्यास, वमन, कफ और खाँसी को दूर करता है ।

आमलस्य त्रिदोषास्रपित्तमेहान्विनाशयेत् ॥ २ ॥

आँवले का अर्क त्रिदोष, रक्तपित्त और प्रमेह को नष्ट करता है । २ ।

शुण्ठ्या विबन्धामवातशूलश्वासबलासहृत् ।

सोंठ का अर्क मल की रुकावट, आमवात, शूल, श्वास और कफ का नाश करनेवाला है ।

आर्द्रकस्य ज्वरं दाहं हरेद्रुच्योऽग्निदीप्तिकृत् ॥३॥

अदरक का अर्क ज्वर और दाह को नष्ट करता है तथा रुचि और जठराग्नि को बढ़ाता है । ३ ।

पिप्पल्याः श्वासकासामवातार्शोज्वरशूलहृत् ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पिप्पली का अर्क श्वास, खाँसी, आमवात, बवासीर, ज्वर और शूल का विनाश करता है ।

मरिचस्य श्वासकृमीन् हरेत्सर्वान् गदानपि ॥ ४ ॥

काली मिर्च का अर्क श्वास, कृमि और सब रोगों को नष्ट करता है । ४ ।

ग्रन्थिकस्य प्लीहगुल्मकफवातोदरापहः ।

पिपरामूल का अर्क प्लीहा, गुल्म, कफ, वात और पेट के सब रोगों को दूर करता है ।

चव्यार्कोत्थं तु रुचिकृद्विशेषाद् गुदजापहः ॥ ५ ॥

चव्य का अर्क रुचि को वढ़ाता और विशेषकर गुदा के रोगों को नष्ट करता है । ५ ।

अर्कस्तु गजपिप्पल्या वातश्लेष्माग्निमान्द्यहृत् ।

गजपिप्पली का अर्क वात, कफ और मन्दाग्नि को नष्ट करता है ।

चित्रकस्याग्निकृत्कासग्रहणीकृमिनाशनः ॥ ६ ॥

चित्रक (चीत) का अर्क जठराग्नि को वढ़ाता और खाँसी, संग्रहणी तथा कृमि रोग का नाश करता है । ६ ।

यवान्याः पाचनो रुच्यो दीपनस्त्रिकशूलहृत् ।

अजवायन का अर्क पाचन, दीपन और रुचि को बढ़ानेवाला है । त्रिक (कमर की पीड़ा) और शूल रोग को भी नष्ट करता है ।

अजमोदोद्भवो वातकफहा बस्तिशोधनः ॥ ७ ॥

अजमोद का अर्क वात और कफ का विनाश करनेवाला तथा वस्ति स्थान का शोधक है । ७ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पारसीकयवान्यास्तु ग्राहीपाचनमादनः ।

खुरासानी अजवायन का अर्क भूख को बढ़ानेवाला, पाचन और मदकारक है ।

जीरकस्य तु संग्राही गर्भाशयविशुद्धिकृत् ॥ ८ ॥

जीरा का अर्क मल को बाँधता है और कोष्ठ शुद्ध करता है । ८ ।

कृष्णजीरस्य चक्षुष्यो गुल्मच्छर्द्यतिसारजित् ।

काले जीरे का अर्क आँखों के लिए लाभदायक और गुल्म, वमन और अतिसार रोग को नष्ट करता है ।

कारव्या बलकृद्दोष्यो ज्वरघ्नः पाचनो रसः ॥ ९ ॥

कलौंजी का अर्क बल बढ़ानेवाला, ज्वरनाशक और पाचक है । ९ ।

धान्यकस्य तृषादाहवमिश्वासत्रिदोषहृत् ।

धनियाँ का अर्क प्यास, जलन, वमन, श्वास और तीनों दोषों (वात, पित्त, कफ) को नष्ट करता है ।

मिस्या ज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत् ॥ १० ॥

सौंफ का अर्क ज्वर, वात, कफ, व्रण, शूल और नेत्ररोग को दूर करता है । १० ।

मिश्रेयाया वह्निमान्द्ययोनिशूलकृमीन् हरेत् ।

मिश्रेया (सोया) का अर्क मन्दाग्नि, योनिशूल और कृमिरोग को नष्ट करता है ।

ज्वालामरीचकस्यापस्मारभूतत्रिदोषहृत् ॥ ११ ॥

लालमिर्च का अर्क मृगीरोग, भूत-प्रेत और त्रिदोष को दूर करनेवाला है । ११ ।

मेथिकायाः श्लेष्मवातज्वरामकफनाशनः ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मेथी का अर्क कफ, वात, ज्वर, आम और श्लेष्मा को नष्ट करता है।

वनमेथ्याः सर्वरोगान् हरेत्कुञ्जरवाजिनाम् ॥१२॥

वनमेथी का अर्क हाथी और घोड़े के सब रोगों का नाश करता है। १२।

चन्द्रसूरस्य हिक्कास्रग्वातहत्पुष्टिवर्द्धनः।

चन्द्रसूर (हालों) का अर्क हिचकी और रक्तवात को नष्ट करता है तथा शरीर को पुष्ट करता है।

हिङ्गुनः पाचनो रुच्यः कृमिशूलोदरापहः ॥ १३ ॥

हींग का अर्क पाचन और रुचि का बढ़ानेवाला है तथा कृमिरोग, शूल और उदररोग को नष्ट करता है। १३।

वचाया वह्निवमिकृद्विबन्धाध्मानशूलहृत्।

वच का अर्क जठराग्नि बढ़ानेवाला, वमन करानेवाला तथा विबन्ध, अफारा और शूलरोग का नाशक है।

पारसीकवचायास्तु भूतोन्मादबलं हरेत् ॥ १४ ॥

ख़ुरासानी वच का अर्क भूत, उन्माद और बल का हरनेवाला है १४

कुलिञ्जनस्य स्वरकृत् हृत्कण्ठमुखशोधनः।

कुलिंजन का अर्क स्वर को बढ़ानेवाला तथा हृदय, कण्ठ और मुख को शुद्ध करनेवाला है।

स्थूलग्रन्थिभवश्चार्को विशेषात्कफकासनुत् ॥१५॥

स्थूलग्रन्थि नामक कुलिंजन का अर्क कफ और खाँसी को दूर करता है ॥ १५ ॥

द्वीपान्तरवचायास्तु हरेच्छूलं फिराङ्गिकम्।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दूसरे द्वीपों में उत्पन्न हुई वच का अर्क शूल और फिरंग रोग को नष्ट करता है।

वपुषाया हरेत् प्लीहां विषं मेहञ्च दारुणम् ॥ १६ ॥

हबुषायाः समीरार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृत् ।

हबुषा और वपुषा दो हाऊबेर होते हैं उनमें वपुषा का अर्क प्लीह, विष और प्रमेह को नष्ट करता है। १६। तथा हबुषा का अर्क वात, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म और शूलरोग को नाश करता है।

विडङ्गार्कोदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत् ॥ १७ ॥

वायबिडंग का अर्क पेट के रोग, कफ, कृमि, वात और विबन्ध को नष्ट करता है। १७।

तुम्बरो गुरुताश्वासप्लीहोदरकृमीन् हरेत् ।

तुम्बर का अर्क शरीर के भारीपन, श्वास, प्लीहा, गुल्म और कृमि रोग को नाश करता हैं।

वंशलोचनजस्तृष्णाक्षयकासज्वरान् हरेत् ॥ १८ ॥

वंशलोचन का अर्क प्यास, क्षयरोग, खाँसी और ज्वर का नाश करनेवाला है। १८।

समुद्रफेनजः शीतो लेखनः कफहृत्सरः ।

समुद्रफेन का अर्क शीतल और दस्तावर है तथा कफ का नाश करता है।

जीवकोत्थः शुक्रकफबलकृच्छीतलः समः ॥ १९ ॥

जीवक का अर्क वीर्य, कफ और बल का बढ़ानेवाला तथा शीतल है। १९।

ऋषभः पित्तदाहास्त्रकासवातक्षयापहः ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ऋषभक का अर्क पित्त, दाह, रुधिरविकार, खाँसी, वात और क्षयरोग को नष्ट करता है।

महामेदोद्भवोऽर्कस्तु वृष्यः स्तन्यकफापहः ॥२०॥

मेदा का अर्क बल और स्तनों में दूध बढ़ानेवाला तथा कफ का नाश करनेवाला है। २०।

महामेदोद्भवः शीतो रक्तवातज्वरप्रणुत्।

महामेदा का अर्क शीतल होता है और रक्तवात तथा ज्वर को नष्ट करता है।

काकोल्याः प्रायशः शीतः पित्तशोथज्वरापहः॥२१॥

काकोली का अर्क वीर्य को बढ़ानेवाला, शीतल और पित्त, शोथ तथा ज्वर को दूर करता है। २१।

क्षीरकाकोलिकाजातो बृंहणो दाहवातहा।

क्षीरकाकोली का अर्क बल बढ़ानेवाला तथा दाह और वात को नष्ट करनेवाला है।

ऋद्ध्या बल्यस्त्रिदोषघ्नो रक्तपित्तविनाशनः॥ २२॥

ऋद्धि का अर्क बलकारक, त्रिदोषनाशक और रक्तपित्त को दूर करनेवाला है। २२।

वृद्ध्या गर्भप्रदः शीतः क्षतकासक्षयापहः।

वृद्धि का अर्क गर्भ धारण करानेवाला और शीतल है तथा व्रण, खाँसी और क्षयरोग का नाश करनेवाला है।

मधुपर्ण्याः केशकरः स्वर्यः पित्तानिलास्त्रजित् २३

मुलहटी का अर्क बालों को बढ़ानेवाला, स्वर को शुद्ध करनेवाला तथा पित्त, वात और रक्तविकार का नाश करनेवाला है। २३।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जलयष्ट्या विषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहः ।

जलमुलहटी का अर्क विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षयरोग को नष्ट करता है ।

कम्पिलस्य विरेकी स्यान्मेहानाहविकारनुत् ॥२४॥

कम्पिला का अर्क दस्तावर होता है और प्रमेह तथा अफारा को दूर करता है । २४ ।

आरग्वधस्य पित्तास्रवातोदावर्त्तशूलनुत् ।
कण्डूमेहश्वासकासकृमिकुष्ठज्वरापहः ॥ २५ ॥

अमिलतास का अर्क रक्तपित्त, वात, उदावर्त्त, शूल, खुजली, प्रमेह, श्वास, खाँसी, कृमिरोग, कुष्ठरोग और सम्पूर्ण ज्वरों को नष्ट करता है । २५ ।

भूनिम्बस्य तृषाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत् ।

चिरायता का अर्क प्यास, कुष्ठरोग, ज्वर और कृमि रोग को नष्ट करता है ।

भद्रायार्कस्तु पित्तास्रकृकृमिवीसर्पकुष्ठनुत् ॥२६॥

कुम्भेर का अर्क पित्त, रक्तविकार, कृमिरोग और फैलनेवाले कुष्ठ रोग का नाश करता है । २६ ।

मदनोत्थश्छर्दिनेत्रचातुर्थिकज्वरादिहृत् ।

मैनफल का अर्क वमन, नेत्ररोग और चौथिया ज्वर को दूर करता है ।

रास्नोद्भवः समीराद्यवातशूलोदरापहः ॥ २७ ॥

रास्ना का अर्क वात, रक्तवात, शूल और उदररोग को नष्ट करता है । २७ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नागभिन्नोद्भवो भोगिलूताद्याखुविकारनुत् ।

नागदमन का अर्क साँप, मकड़ी और चूहे के विष को दूर करता है ।

माचिकाजस्तु पित्तास्रपकातीसारहा लघु ॥ २८ ॥

माई का अर्क रक्तपित्त और रक्तातीसार को दूर करता है तथा हल्का है । २८ ।

तेजस्विन्याः श्वासकासकफहृद्वह्निदीपनः ।

तेजबल का अर्क श्वास, खाँसी और कफ का नाशक है तथा जठराग्नि को बढ़ाता है ।

ज्योतिष्मत्या वान्तिकरो वह्निबुद्धिस्मृतिप्रदः॥२६॥

मालकाँगनी का अर्क वमनकारक, जठराग्नि को बढ़ानेवाला और बुद्धि तथा स्मरणशक्ति को देनेवाला है । २६ ।

कुष्ठस्य हन्ति वातास्रकासकुष्ठमरुत्कफान् ।

कूट का अर्क वात-रक्त, खाँसी, कुष्ठरोग, वात और कफ को नष्ट करता है ।

पौष्करस्यारुचिश्वासान् विशेषात्पार्श्वशूलनुत् ३०

पुष्करमूल का अर्क अरुचि, श्वास और विशेष कर पसली के शूल को नष्ट करता है । ३० ।

हेमाह्वाया एष वान्तिकरः कण्डूविनाशनः ।

स्वर्णक्षीरी का अर्क दस्तावर, वमन करानेवाला और खुजली को नष्ट करनेवाला है ।

शृङ्ग्या हरेदूर्ध्ववातहिक्कातृष्णाक्षयज्वरान् ॥ ३१ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

काकड़ासींगी का अर्क ऊर्ध्ववात, हिचकी, प्यास, क्षयरोग और ज्वर का नाश करता है । ३१ ।

कट्फलोत्थः श्वासकासप्रमेहार्शोऽरुचिर्हरेत् ।

कायफल का अर्क श्वास, खाँसी, प्रमेह, बवासीर और अरुचि को दूर करता है ।

भार्ग्यां हरेत्कफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ॥ ३२ ॥

भारंगी का अर्क कफ, श्वास, पीनस, ज्वर और वातरोग को नष्ट करता है । ३२ ।

पाषाणभेदजो योनिरोगकृच्छ्राश्मगुल्महा ।

पाषाणभेद का अर्क योनिरोग, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और गुल्म रोग का नाश करता है ।

कौसुम्भजो वर्णकरो रक्तपित्तकफापहः ॥ ३३ ॥

कुसुम का अर्क शरीर के वर्ण को सुन्दर करता है और रक्तपित्त तथा कफ का नाश करता है । ३३ ।

धातकीजस्तृषाशीतविषकृमिविसर्पजित् ।

धाय के फूलों का अर्क प्यास, शीतलता, विष, कृमि और विसर्प रोग को नष्ट करता है ।

माञ्जिष्ठजो विषश्लेष्मरक्तातीसारकुष्ठहा ॥ ३४ ॥

मँजीठ का अर्क विष, कफ, रक्तातीसार और कुष्ठरोग को नष्ट करता है । ३४ ।

लाक्षाजः कृमिवीसर्पव्रणोरःक्षतकुष्ठहा ।

लाख का अर्क कृमि, विसर्प, व्रण, छाती का घाव और कुष्ठरोग को नष्ट करता है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हरिद्राया मेहशोथत्वग्दोषव्रणपाण्डुनुत् ॥ ३५ ॥

हल्दी का अर्क प्रमेह, शोथ, त्वचा के रोग, व्रण और पाण्डुरोग का विनाश करता है । ३५ ।

आरण्यकहरिद्रायाः कुष्ठवातास्रनाशनः ।

वनहल्दी का अर्क कुष्ठरोग और वातरक्त का नाश करता है ।

कर्पूरकहरिद्रायाः सर्व्वकण्डूविनाशनः ॥ ३६ ॥

कपूरहल्दी का अर्क सब प्रकार की खुजली को दूर करता है ।३६।

दार्व्या विशेषतो लेपान्नेत्रकर्णस्य रोगनुत् ।

दारुहल्दी का अर्क विशेष करके लेप करने से आँख और कान के रोगों को दूर करता है ।

रसाञ्जनोद्भवो नेत्रविकारव्रणदोषहृत् ॥ ३७ ॥

रसौत का अर्क नेत्रविकार और व्रण को दूर करता है । ३७ ।

वाकुच्याः कृमिविष्टम्भपाण्डुशोथकफापहान् ।

बाकुची का अर्क कृमि, विष्टम्भ, पाण्डुरोग, शोथ और कफ का नाश करता है ।

प्रपुन्नाटस्य हन्त्येव कण्डूदद्रूविषानिलान् ॥ ३८ ॥

पँवार (चकउड़) का अर्क खुजली, दाद, विष और वातरोग को नष्ट करता है । ३८ ।

विषाजो दीप्तिकृच्चार्कः कफपित्तातिसारहा ।

अतीस का अर्क जठराग्नि को बढ़ाता है और कफ तथा अतीसार को दूर करता है ।

लोध्रजः शीतलो ग्राही चक्षुष्यः कफपित्तनुत् ॥३९॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लोध का अर्क शीतल, मल को रोकनेवाला, आँखों के लिए लाभदायक और कफ तथा पित्त का नाशक है। ३९।

बृहत्पत्रोद्भवो नेत्रोदरातीसर शोथहृत्।

पठानीलोध का अर्क नेत्ररोग, ज्वर, अतिसार और शोथ को नष्ट करता है।

भल्लातकोद्भवो हन्याज्ज्वरोदरकृमिव्रणान् ॥४०॥

भिलावें का अर्क ज्वर, उदररोग, कृमि और व्रण का नाश करनेवाला है। ४०।

गुडूच्या दीपनः श्वासकासपाण्डुज्वरापहः।

गुर्च का अर्क जठराग्नि को बढ़ाता है और श्वास, खाँसी, पाण्डुरोग तथा ज्वर को नष्ट करता है।

बैल्वः श्लेष्महरो बल्यो लघुरूक्षश्च पाचनः ॥४१॥

बेल का अर्क कफ का नाश करता है, बल को बढ़ाता है, हलका, रूखा और पाचक है। ४१।

कुम्भारीजो भ्रमतृषाशूलाशोंविषदाहनुत्।

कुम्भेर का अर्क भ्रम, प्यास, शूल, बवासीर, विष और दाह को दूर करता है।

ताम्बूल्या मुखदौर्गन्ध्यमलवान्तश्रमापहः ॥४२॥

पान का अर्क मुख की दुर्गन्धि, मल, वायु और श्रम को दूर करता है। ४२।

पाटल्याश्छर्दिशोथास्त्रत्रिदोषारुचिदाहहा।

पाटला का अर्क वमन, शोथ, रुधिरविकार, प्यास और अरुचि को दूर करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अग्निमन्थोद्भवः शोथकृमिपाण्डुबलासनुत् ॥ ४३॥

अरणी का अर्क शोथ, कृमि, पाण्डुरोग और कफ को दूर करता है। ४३।

श्योनाकजस्तु गुल्मार्शः कृमिहृद्रुचिदीप्तिकृत् ।

अरलू का अर्क गुल्म, बवासीर और कृमि को नष्ट करता है तथा रुचि और जठराग्नि को बढ़ाता है।

शालिपर्ण्याः क्षतकृमिज्वरच्छर्द्यतिसारहा ॥ ४४ ॥

शालिपर्णी (सरवन) का अर्क व्रण, कृमि, ज्वर, छर्दि और अतीसार को दूर करता है। ४४।

पृष्ठपर्ण्या ज्वरश्वासरक्तातीसारदाहजित् ।

पृष्टिपर्णी (पिठवन) का अर्क ज्वर, श्वास, रक्तातीसार और दाह को नष्ट करता है।

वार्ताक्यर्को ज्वरालस्यमलारोचकशूलहा ॥ ४५ ॥

वार्ताकी (छोटी कटेहरी) का अर्क ज्वर, आलस्य, मल, अरुचि और शूल को नष्ट करता है। ४५।

कण्टकार्या गर्भकरः पाचनः कफकासहा ।

बड़ी कटेहरी का अर्क गर्भ धारण करानेवाला, पाचन और कफ तथा खाँसी का नाश करनेवाला है।

गोक्षुरस्याश्मरीमेहकृच्छ्रहृद्रोगवातहा ॥ ४६ ॥

गोखुरू का अर्क पथरी, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग और वात-रोग नष्ट करता है। ४६।

जीवन्त्याः श्वासहन्नेत्रदोषत्रितयनाशनः ।

जीवन्ती का अर्क श्वास, नेत्ररोग और त्रिदोष का नाश करता है।

मुद्गपर्ण्याः शोथदाहग्रहण्यर्शोऽतिसारजित् ॥४७॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मुद्गपर्णी का अर्क शोथ, दाह, संग्रहणी, बवासीर और अतिसार को नष्ट करता है। ४७।

माषपर्ण्याः शुक्रकरो वातपित्तज्वरास्रजित्।

माषपर्णी का अर्क वीर्य बढ़ानेवाला और वात, पित्त, ज्वर तथा रक्तविकार का नाशक है।

पञ्चाङ्गुलोद्भवः शूलशिरःपीडोदरापहा ॥ ४८ ॥

अरण्ड का अर्क शूल, शिर की पीड़ा और उदररोग को नष्ट करता है। ४८।

हवुषोत्थो वृद्धकासश्वासकुष्ठाममारुतान्।

हाऊबेर का अर्क श्वास, खाँसी, कुष्ठरोग और आमवात को दूर करता है।

मन्दारजो वातकुष्ठकण्डूव्रणविषापहा ॥ ४९ ॥

मन्दार का अर्क वात, कुष्ठ, खुजली, व्रण और विष को दूर करता है। ४९।

अर्कार्कः प्लीहगुल्मार्शः श्लेष्मोदरकृशं हरेत्।

आक (मदार) का अर्क प्लीहा, गुल्म, बवासीर, कफ, उदररोग और कृमि को नष्ट करता है।

वज्रीजो लेपतो हन्याद् व्रणशोथोदरज्वरान् ॥ ५० ॥

वज्री या वज्रदन्ती (थूहर) का अर्क उदररोग और ज्वर का नाश करता है। इसका लेप करने से व्रण और शोथ को लाभ होता है। ५०।

शातलोत्थः कफानाहपित्तोदावर्तशोथहा।

सातला का अर्क कफ, अफारा, पित्त, उदावर्त और शोथ का नाशक है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लाङ्गल्या लेपतो हन्याच्छोफार्शोव्रणरुग्जितः॥५१॥

लाङ्गली (करिहारी) का अर्क लेप करने से शोथ, बवासीर और व्रण को दूर करता है। ५१।

करवीरोद्भवो नेत्रकोपकुष्ठव्रणापहः।

कनेर का अर्क आँखों की सूजन, कुष्ठ रोग और व्रण को नष्ट करता है।

चाण्डालोत्थस्तु विषवद्भक्षणे लेपने महत् ॥ ५२ ॥

चांडाल (चचेड़ा) का अर्क पीने में तो जहर के समान है किन्तु लेप करने से बड़ा लाभ करता है। ५२।

धत्तूरजो हरेल्लेख्याः यूकाकृमिविषादिकम्।

धतूरे का अर्क लेप करने से जुआँ, कृमि और विष आदि को नष्ट करता है।

वासोद्भवो ज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः ॥ ५३ ॥

रूसा का अर्क ज्वर, वमन, प्रमेह, कुष्ठरोग और क्षयरोग को नष्ट करता है। ५३।

पर्पटो हन्ति पित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान्।

पित्तपापड़े का अर्क रक्तपित्त, भ्रम, तृषा, कफ और ज्वर का नाश करता है।

निम्बजः श्रमतृट्कासज्वरारुचिकृमिप्रणुत् ॥ ५४ ॥

नीम का अर्क श्रम, तृषा, खाँसी, ज्वर, अरुचि और कृमि को दूर करता है। ५४।

महानिम्बोद्भवो गुल्ममूषकाविषनाशनः।

बकायन का अर्क गुल्मरोग और चूहे के विष को दूर करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोथमेदकृमिप्रणुत् ॥ ५५ ॥

पारिभद्र का अर्क वात, कफ, शोथ, मेदरोग और कृमि को नष्ट करता है । ५५ ।

काञ्चनारो गण्डमालां गुदभ्रंशव्रणापहः ।

कचनार का अर्क गंडमाला, गुदभ्रंश और व्रण का नाश करता है ।

कोविदारस्तु पित्तास्रप्रदरक्षयकासहा ॥ ५६ ॥

सफेद कचनार का अर्क रक्तपित्त, प्रदर, क्षय और खाँसी को नष्ट करता है । ५६ ।

सौभाञ्जनार्को रुचिकृच्छुक्रलो ग्राहिदीपनः ।

सहिंजन का अर्क रुचि को बढ़ाता है, वीर्य उत्पन्न करता है, मल को बाँधता है और जठराग्नि की वृद्धि करता है ।

मधुशिग्रूद्भवो हन्याद्विद्रधिश्वयथुकृमीन् ॥ ५७ ॥

लाल सहिंजन का अर्क विद्रधिरोग, शोथ और कृमि का नाश करता है । ५७ ।

शिग्रुजो विषहृन्नेत्र्यानस्येनस्याक्षिरोगहृत् ।

सफेद सहिंजन का अर्क विष को दूर करनेवाला, नेत्रों को लाभ पहुँचानेवाला और नस्य लेने से सिर की पीड़ा दूर करनेवाला है ।

गिरिकन्याकुष्ठशूलशोथव्रणविषापहः ॥ ५८ ॥

घीकुवार का अर्क कुष्ठरोग, शूल, शोथ, व्रण और विष को नष्ट करता है ॥ ५८ ॥

सिन्दुवारोद्भवो हन्ति शूलशोथाममारुतान् ।

सिन्दुवार (म्योड़ी) का अर्क शूल, शोथ और आमवात को नष्ट करता है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

निर्गुण्ड्यर्को हरेज्जन्तुव्रणकुष्ठारुचिर्लघुः ॥ ५६ ॥

निर्गुंडी का अर्क कृमि, व्रण, कुष्ठरोग और अरुचि को नष्ट करता है तथा हल्का होता है । ५९ ।

कौटजो दीपनः शीतः कफतृष्णामकुष्ठजित् ।

कुटज का अर्क दीपन और शीतल है तथा कफ, तृषा, आमरोग और कुष्ठरोग का नाशक है ।

करञ्जः कफगुल्मार्शोव्रणकृमिरुजापहः ॥ ६० ॥

करंज का अर्क गुल्म, कफ, बवासीर, व्रण और कृमि को नष्ट करता है । ६० ।

घृतकारञ्जको भेदी वातार्शःकृमिकुष्ठजित् ।

घृतकरंज का अर्क वात, बवासीर और कुष्ठरोग का नाश करता है ।

करञ्ज्या वमिवातार्शःकृमिकुष्ठप्रमेहजित् ॥६१॥

करंजी का अर्क वमन, वात, बवासीर, कृमि, कुष्ठ और प्रमेह को नष्ट करता है । ६१ ।

उच्चटार्कः केशकरो वातपित्तज्वरापहः ।

उटंगन का अर्क केशों को बढ़ाता है तथा वात, पित्त और ज्वर का नाश करता है ।

गुञ्जायाश्च हरेच्छ्वासमुखशोषभ्रमज्वरान् ॥ ६२ ॥

घुँघुची का अर्क श्वास, मुखशोथ, भ्रम और ज्वर को नष्ट करता है । ६२ ।

कपिकच्छूद्भवो वृष्यो बृंहणो वाजिकर्मकृत् ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कौंच का अर्क शरीर को पुष्ट करता है, बल को बढ़ाता है और वाजीकरण-शक्ति उत्पन्न करता है।

मांसरोहिण्युद्भवस्तु वृष्यो दोषत्रयापहः ॥ ६३ ॥

मांसरोहिणी का अर्क वीर्य को बढ़ाता है और तीनों दोषों को नष्ट करता है। ६३।

चिह्लजः कुरुते पुष्टिं तत्फलं मारयेज्जनान्।

चीढ़ का अर्क धातु को पुष्ट करता है। उसके फल विष के समान होते हैं, जिनके खाने से मृत्यु हो जाती है।

कण्टकार्या दीपनश्च श्लेष्मशोथहरोऽरुचिः ॥ ६४ ॥

कटेरी का अर्क दीपन है तथा कफ, शोथ और अरुचि को नष्ट करता है। ६४।

वेतसो हरते दाहं शोथार्शोयोनिरुग्व्रणान्।

वेंत का अर्क दाह, शोथ, बवासीर, योनि के रोग और व्रण को नष्ट करता है।

जलवेतसजो ग्राही शीतो वातप्रकोपनः ॥ ६५ ॥

जलवेंत का अर्क मल को बाँधता है। शीतल होता है और वायु को कुपित करता है। ६५।

हिज्जलार्कस्तु हरते चराचरविषं स्फुटम्।

समुद्रफल का अर्क चर, अचर दोनों प्रकार के विष को दूर करता है।

अङ्कोटकस्तु शूलामशोथग्रहविषापहः ॥ ६६ ॥

अंकोल का अर्क शूल, आँव, शोथ, मल की रुकावट और विष को दूर करता है। ६६।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बलार्को ग्राहिवातास्रपित्तास्रक्षतनाशनः ।

बरियारा का अर्क ग्राही (मल को बाँधनेवाला) तथा वात-रक्त, रक्त-पित्त और व्रण को नष्ट करता है ।

अतिपूर्वबलार्कस्तु मूत्रातीसारनाशनः ॥ ६७ ॥

कंघी का अर्क मूत्र की अधिकता को दूर करता है । ६७ ।

महाबलार्को हरते कृच्छ्रघात्यनुलोमनः ।

महाबला (सहदेई) का अर्क मूत्रकृच्छ्र और वात को नष्ट करता है तथा अनुलोमी है ।

नागपूर्वबलार्कश्च मूर्च्छामोहहरः परः ॥ ६८ ॥

नागबला (गंगेरन) का अर्क मोह और मूर्च्छा को दूर करता है । ६८ ।

लक्ष्मणार्कश्च सेवेद्वै बन्ध्यापि लभते सुतम् ।

लक्ष्मणा का अर्क बाँझ स्त्री को भी पुत्र पैदा करानेवाला है ।

स्वर्णवल्ल्याः शिरःपीडात्रिदोषान् हन्ति दुग्धदा ६९

स्वर्णवल्ली का अर्क सिर की पीड़ा और त्रिदोष को नष्ट करता है तथा दूध को बढ़ाता है । ६९ ।

कार्पासोऽर्कः शिरःशङ्खकर्णरोगान्विनाशयेत् ।

कपास का अर्क सिर, कनपटी और कान के रोगों को नष्ट करता है ।

वंशजः कफपित्तघ्नः कुष्ठास्रव्रणशोथजित् ॥ ७० ॥

बाँस का अर्क कफ, पित्त, कुष्ठ, रक्तविकार, व्रण और शोथ का नाश करता है । ७० ।

तरुण्यर्कः सरः शीतस्तुवरः श्रमदाहहृत् ।
वान्तितृट् पित्तरोगघ्नो मुखरोगविनाशनः ॥७१॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सेवती का अर्क दस्तावर, शीतल और कसैला है तथा श्रम, दाह, वमन, तृषा, पित्त, और मुखरोग का नाशक है। ७१।

नालार्को बस्तियोन्यार्तिं दाहपित्तविसर्पहृत्।

नल का अर्क वस्ति और योनि की पीड़ा, दाह, पित्त और विसर्प को नष्ट करता है।

यष्ट्या जयेज्ज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः॥ ७२॥

मुलेहठी का अर्क ज्वर, वमन, कुष्ठरोग, अतीसार और हृदय के रोग को नष्ट करता है। ७२।

श्वेतत्रिवृद्भवोऽप्यर्को पित्तशोथोदरापहः।

सफेद निसोत का अर्क पित्त, शोथ और उदर के रोगों को नष्ट करता है।

शरपुङ्खोद्भवः प्लीहान् गुल्मव्रणविषापहः॥ ७३॥

सरफोंका का अर्क प्लीहा, गुल्म, व्रण और विष को नष्ट करता है। ७३।

यवासजो मदभ्रान्तिपित्तास्रकुष्ठकासजित्।

जवासा का अर्क मद, भ्रान्ति, रक्तपित्त, कुष्ठरोग और खाँसी को दूर करता है।

मुण्डजोऽत्यन्तबलकृत्प्लीहमेहानिलार्तिजित् ७४

गोरखमुंडी का अर्क बलकारक है तथा प्लीहा, प्रमेह और वात का नाश करता है। ७४।

अपामार्गभवश्छर्दिकफमेदोऽनिलापहः।

अपामार्ग (लटजीरा) का अर्क वमन, कफ, मेद और वातरोग को नष्ट करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आरक्तापामार्गभवो धातुस्तम्भनकारकः ॥ ७५ ॥

लाल अपामार्ग का अर्क वीर्य का स्तम्भन करता है। ७५।

कोकिलाक्षिभवः शीघ्रं सेकाच्छोथान्निवारयेत्।

तालमखाना का अर्क लेप करने से सूजन और फोड़े को शीघ्र लाभ करता है।

अस्थिसंहारकायास्तु भग्नसन्धानकृच्छिवे ॥७६॥

हड़संहार का अर्क घाव को शीघ्र भरता है। ७६।

पुनर्नवायाः रक्ताया ग्राही पित्तास्रनाशनः।

लाल पुनर्नवा का अर्क मल को बाँधता है और रक्तपित्त का नाश करता है।

प्रसारिण्या वातहरो वृष्यः सन्धानकृत्सरः ॥७७॥

प्रसारिणी का अर्क वातरोग को नष्ट करता है, बलकारक है और घाव को शीघ्र भरता है। ७७।

कुमारिकाया ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटकाञ्जयेत्।

घीकुवार का अर्क गाँठ और आग से जले हुए फफोलों को लाभ पहुँचाता है।

पुनर्नवायाः श्वेतायाः सर्वनेत्रामयापहः ॥ ७८ ॥

सफेद पुनर्नवा का अर्क सब प्रकार के नेत्ररोग को नष्ट करता है। ७८।

सारिवाया वह्निमान्द्यकासामविषनाशनः।

सारिवा का अर्क मन्दाग्नि, ख़ाँसी और आँव को दूर करता है।

भृङ्गराजस्य जातोऽर्कः केशस्त्वचयः शिरोर्त्तिहृत् ७६

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भृंगराज (भँगरा) का अर्क बालों को बढ़ाता है, त्वचा को कोमल करता है और सिर की पीड़ा को नष्ट करता है । ७९ ।

शणपुष्पीलतायास्तु अर्कः पित्तकफापहः ।

शणपुष्पी का अर्क पित्त और कफ का नाशक है ।

त्रायन्त्यर्कः शूलविषविलेपीज्वरनाशनः ॥ ८० ॥

त्रायमान का अर्क शूल, विष और विलेपीज्वर का नाश करता है । ८० ।

मूर्वाया मेहरोगघ्नः कण्डूकुष्ठज्वरापहः ।

मूर्वा का अर्क प्रमेह, खुजली, कुष्ठरोग और ज्वर का नाश करता है ।

काकमाच्या नेत्रहितश्छर्दिहृद्रोगनाशनः ॥ ८१ ॥

काकमाची का अर्क आँखों को लाभ करता है तथा वमन और हृदयरोग को नष्ट करता है । ८१ ।

एलार्कः कटुकः पाके रसे तिक्तोऽग्निकृल्लघुः ।

बड़ी इलायची का अर्क पाक में कड़ुवा, रस में चरपरा, जठराग्नि बढ़ानेवाला और हल्का है ।

सूक्ष्मैलार्कः पित्तकफं विशेषान्मूत्रकृच्छ्रनुत् ॥ ८२ ॥

छोटी इलायची का अर्क पित्त, कफ और विशेषकर मूत्रकृच्छ्र को नष्ट करनेवाला है । ८२ ।

काकनासाभवो वामी शोथार्शश्चित्रकुष्ठनुत् ।

काकनासा का अर्क वमन कराता है तथा शोथ, बवासीर और श्वेत कुष्ठ को दूर करता है ।

काकजङ्घोद्भवो हन्याज्ज्वरकण्डूविषकृमीन् ॥ ८३ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

काकजंघा का अर्क ज्वर, खुजली, विष और कृमि को दूर करता है। ८३।

नागिन्यास्तु हरेच्छूलयोनिदोषवमिकृमीन्।

नागपुष्पी का अर्क शूल, योनिदोष, वमन और कृमि को नष्ट करता है।

मेषशृङ्ग्याः श्वासकासव्रणश्लेष्माक्षिशूलहा ॥८४॥

मेढ़ासिंगी का अर्क श्वास, खाँसी, व्रण, कफ और आँखों की पीड़ा को दूर करता है। ८४।

हंसपद्या हन्ति लूतां भूतरक्तविषव्रणान्।

हंसपदी का अर्क मकड़ी, भूत, रुधिरविकार, व्रण और विष को दूर करता है।

सोमवल्ल्यास्त्रिदोषघ्नो क्षीरकृच्च रसायनः ॥८५॥

सोमवल्ली का अर्क त्रिदोषनाशक और रसायन है इससे दूध भी बढ़ता है। ८५।

आकाशवल्ल्याः शीतोऽर्कः पित्तश्लेष्मामनाशनः।

आकाशबेलि का अर्क शीतल है तथा कफ और आमरोग को नष्ट करता है।

पातालगारुडीजार्को वृष्यः पवननाशनः ॥ ८६ ॥

पातालगारुड़ी का अर्क वीर्य को बढ़ाता है और वातरोग को नष्ट करता है। ८६।

वृन्दा वृक्षोद्भवोऽर्कस्तु विषरक्षोव्रणापहः।

वृन्दा का अर्क विष, भूतबाधा और व्रण को नष्ट करता है।

वटपत्रीभवश्चोष्णो योनिमूत्रगदापहः ॥ ८७ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वटपत्री का अर्क गरम है, योनिरोग और मूत्ररोग को नष्ट करता है। ८७।

हिंगुपत्र्या विबन्धार्शःश्लेष्मगुल्मानिलापहः।

हिंगुपत्री का अर्क विबन्ध, बवासीर, कफ, गुल्म और वातरोग का नाश करता है।

वंशपत्र्याः पाचनोष्णो हृद्वस्तिगदसंघहृत् ॥८८॥

वंशपत्री का अर्क पाचन और गरम है तथा हृदय और बस्ति के रोगों को नष्ट करता है। ८८।

मत्स्याद्यर्को ग्राहिशीतकुष्ठपित्तकफास्रजित्।

मछेछी का अर्क कब्ज़ करता है, शीतल है, तथा कुष्ठ, पित्त, कफ और रक्तविकार का नाश करता है।

सर्पाक्ष्या रोपणः सर्पवृश्चिकोद्भवदंशहृत् ॥८९॥

सरहटी का अर्क साँप और बिच्छू के विष को दूर करता है तथा घाव को शीघ्र भरता है। ८९।

शङ्खपुष्प्या विषहरः स्मृतिकान्तिबलाग्निदः।

शंखपुष्पी का अर्क विष को नष्ट करता है और कान्ति, स्मरण-शक्ति, बल तथा अग्नि को बढ़ाता है।

अर्कपुष्प्याः कृमिश्लेष्ममेहचित्रविकारनुत् ॥९०॥

अर्कपुष्पी का अर्क कृमि, कफ, प्रमेह और चित्ती का विकार (सेंहुवा) नष्ट करता है। ९०।

लज्जालुकाया भगरुग्रक्तपित्तातिसारहृत्।

लाजवन्ती (छुईमुई) का अर्क योनिरोग, रक्तपित्त और अतिसार को नष्ट करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अलम्बुषासंभवोऽर्कः कृमिपित्तकफापहः ॥६१॥

अलम्बुषा का अर्क कृमि, पित्त और कफ का नाश करता है । ६१ ।

दुग्धिकायाः कफकरो वृष्यः स्तम्भी कृमिप्रणुत् ।

दूधी का अर्क कफ को बढ़ाता है, वीर्य का स्तम्भन करता है, बलकारक, और कृमिनाशक है ।

भूमिवल्ल्याः कासतृष्णाकफपाण्डूरुजापहः ॥६२॥

भूमिबल्ली का अर्क खाँसी, प्यास, कफ और पाण्डुरोग को नष्ट करता है । ६२ ।

कण्टकार्या गर्भकरः पाचनः कफकासहृत् ।

सफेद कटेहरी का अर्क गर्भ धारण करनेवाला और पाचक है तथा कफ और खाँसी को दूर करता है ।

केतक्याः पित्तदाहघ्नश्चक्षुष्योन्मादहृत्सरः ॥६३॥

केवड़ा का अर्क पित्त और दाह का नाशक, आँखों को लाभदायक, उन्मादरोग को नष्ट करनेवाला और दस्तावर है । ६३ ।

ब्राह्मया बुद्धिप्रदश्चार्कः षण्मासाभ्यासतः कविः ।

ब्राह्मी का अर्क बुद्धि को बढ़ाता है, छः महीने इसका सेवन करने से मनुष्य कवि हो जाता है ।

ब्रह्ममण्डूकिकापाण्डुविषशोथज्वरान् हरेत् ॥ ६४ ॥

ब्रह्ममण्डूकी का अर्क पाण्डुरोग, विष, शोथ और ज्वर को नष्ट करता है । ६४ ।

द्रोणपुष्पीज्वरश्वा नकामलाशोथजन्तुजित् ।

गूमा का अर्क ज्वर, श्वास, कामला, शोथ और कृमिरोग को नष्ट करता है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सूर्यमुख्या हरेत्स्फोटयोनिरुक्कृमिपाण्डुताम् ॥ ९५ ॥

सूर्यमुखी का अर्क योनिरोग, फोड़ा, कृमि और पाण्डुरोग का नाश करता है। ९५।

बन्ध्याकर्कोटकीजातः सर्पदष्टव्रणापहः।

बाँझ ककोड़ी का अर्क साँप के काटने से जो घाव हो जाता है, उसे दूर करता है।

मार्कण्डिकाया दुर्गन्धिविषगुल्मोदरापहः ॥ ९६ ॥

मार्कण्डिका का अर्क दुर्गन्ध, विष, गुल्म और उदररोग को नष्ट करता है। ९६।

देवदाल्याः शूलगुल्मश्लेष्मार्शोवातजित्परम्।

देवदाली (बन्दाल) का अर्क शूल, गुल्म, कफ, बवासीर और वातरोग को नष्ट करता है।

धत्तूरजो ग्राहिकौजो वह्निकृद्व्रणदाहहृत् ॥ ९७ ॥

काले धतूरे का अर्क कब्ज़ करता है, शीतल है, जठराग्नि को बढ़ाता है और व्रण तथा दाह को नष्ट करता है। ९७।

गोजिह्वाया मेहकासव्रणसारज्वरापहः।

गोभी का अर्क प्रमेह, खाँसी, व्रण, अतिसार और ज्वर का नाश करता है।

नागपुष्प्याः सर्वविषसर्वग्रहविनाशनः ॥ ९८ ॥

नागपुष्पी का अर्क सब प्रकार के विष और सब प्रकार की ग्रह-पीड़ा को दूर करता है। ९८।

वेल्लन्तरोर्मूत्रघाताश्मरीयोन्यनिलार्त्तिजित्।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बरवेल का अर्क मूत्रघात, पथरी, योनि की पीड़ा और वातरोग को नष्ट करता है।

छिक्कन्या वह्निरुचिकृदर्शःकुष्ठकृमिप्रणुत् ॥ ९९ ॥

नकछिकनी का अर्क जठराग्नि और रुचि को बढ़ाता है तथा बवासीर, कुष्ठरोग और कृमिरोग का नाश करता है। ९९।

कौहुन्दरो ज्वरं रक्तमुखशोथकफं हरेत्।

कुकरौंधा का अर्क ज्वर, रुधिरविकार, मुखशोथ और कफ को नष्ट करता है।

सुदर्शनार्कश्चात्युष्णः कफास्त्रवातरोगजित् १००

सुदर्शन का अर्क बहुत गरम होता है तथा कफ, रुधिर-विकार और वातरोग को नष्ट करता है। १००।

इति तीसरा शतक समाप्त।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चौथा शतक

षट्रस

रावण उवाच—

सिताचिञ्चोषणपटुविभीतककटीलकाः ।
एते च षट्रसाः प्रोक्ता विपरीतबलाधिकम् ॥ १ ॥
एषामर्कं प्रत्यहं च पिबेत्पलयुगं प्रिये ।
अरुचिश्चैव मन्दाग्निं स्वप्नेऽपि स न पश्यति ॥२॥

रावण ने कहा—हे प्रिये ! मिश्री, इमली, मिर्च, परवल, बहेड़ा और करेला, इनकी षट्रस संज्ञा है । ये विपरीत क्रम से क्रमशः बलवान् हैं, अर्थात् करेले से बहेड़ा, बहेड़ा से परवल, परवल से मिर्च, मिर्च से इमली और इमली से मिश्री बलवान् है। जो मनुष्य इनका अर्क प्रतिदिन चार पल पिया करे उसे स्वप्न में भी अरुचि और मन्दाग्नि न हो ।१–२।

उन्मत्तपंचक

उन्मत्तो सोमविजया जातीपत्री च खाखसम् ।
उन्मत्तपञ्चकञ्चैतज्जवानीपञ्चभिः समा ॥ ३ ॥
दुग्धनिर्वापितादस्मादर्को लेह्यो यथोक्तितः ।
खादेत्पिशाचवन्मत्तो रमेच्च रमणीशतम् ॥ ४ ॥

धतूरा, वाकुची, जावित्री, भाँग और खसखस, ये उन्मत्तपंचक हैं । इन सबके बराबर अजवायन मिलाकर फिर सबको दूध में भिगोकर इनका अर्क निकाले । इस अर्क के पीने से मनुष्य पिशाच के समान उन्मत्त हो जाता है और सौ स्त्रियों के साथ भोग कर सकता है । ३–४ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

त्रिसुगंध

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगन्धमिति स्मृतम् ।
तदर्को मुखदौर्गन्धिच्छेदनो मलभेदनः ॥ ५ ॥

दालचीनी, इलायची और तेजपात, ये तीनों बराबर हों तो इनको त्रिसुगन्ध कहते हैं । त्रिसुगन्ध का अर्क मुख की दुर्गन्ध दूर करता है और मल का भेदन करता है । ५ ।

चातुर्जात

नागकेसरमेला च पत्रकं दारुचीर्णकम् ।
चातुर्जातमिदं ज्ञेयं वह्निकृच्च विषापहम् ॥ ६ ॥

नागकेशर, इलायची, तेजपात और दालचीनी, इन चारों को चातुर्जात कहते हैं । इनका अर्क जठराग्नि को बढ़ाता है और विष का नाश करता है । ६ ।

त्रिफला

पथ्या विभीतको धात्री त्रिफलैषा प्रकीर्त्तिता ।
एतदर्को मेहकुष्ठविषमज्वरपित्तनुत् ॥ ७ ॥

हड़, बहेड़ा और आँवला को त्रिफला कहते हैं । इसका अर्क प्रमेह, कुष्ठरोग, विषमज्वर और पित्त को नष्ट करता है । ७ ।

त्रिकुटा

विश्वोपकुल्यामरिचमेतत्त्रिकटुरुच्यते ।
हरेद्गुल्मकफस्थौल्यमेदश्लीपदपीनसान् ॥ ८ ॥

सोंठ, पिप्पली और मिर्च की त्रिकुटा संज्ञा है । इसका अर्क गुल्म, कफ, स्थूलता, मेद, श्लीपद (फीलपाँव) और पीनस का नाश करता है । ८ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चतुरूषण

पिप्पली पिप्पलीमूलं मरिचं विश्वभेषजम् ।
चतुरूषणमित्युक्तमेतदर्कोऽग्नितत्परः ॥ ९ ॥

पिप्पली, पिपलामूल, मिर्च और सोंठ इनको चतुरूषण कहते हैं। इनका अर्क जठराग्नि को बहुत बढ़ाता है । ९ ।

पंचकोल

पिप्पली पिप्पलीमूला चव्यचित्रकनागरैः ।
पञ्चकोलमिदं गुल्मप्लीहानाहोदरापहः ॥ १० ॥

पिप्पली, पिपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ, इनको पंचकोल कहते हैं। इनका अर्क गुल्म, प्लीहा, अफरा और उदररोग को नाश करता है । १० ।

षडूषण

कणामूलोषणकणाचव्यचित्रकनागरैः ।
एतत्षडूषणं चोष्णं दीप्तिकारि विषापहम् ॥ ११ ॥

पिपलामूल, मिर्च, पिप्पली, चव्य, चीता और सोंठ इनको षडूषण कहते हैं। इनका अर्क गरम होता है, अग्नि का बढ़ानेवाला और विष का नाशक है । ११ ।

चतुर्बीज

मेथिकाचन्दसूरश्च कालाजाजीजवानिका ।
चतुर्वीर्यमिदं प्रोक्तं शूलाध्मानसमीरजित् ॥ १२ ॥

मेथी, हालों, काला जीरा और अजवायन इनको चतुर्बीज कहते हैं। इनका अर्क शूल, अफरा और वातरोग को नष्ट करता है। १२ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अष्टवर्ग

जीवकर्षभकौ मेदकाकोल्यौ ऋद्धिवृद्धिके।
अष्टवर्गोऽयमर्कस्तु भग्नसन्धानकृत्परः ॥ १३ ॥

जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि, इनको अष्टवर्ग कहते हैं। इनका अर्क टूटा हुई सन्धियों को जोड़ देता है। १३।

बृहत्पञ्चमूल

बिल्वोऽग्निमन्थः श्योनाकः काश्मरी पाटला तथा।
पञ्चमूलं बृहत्प्रोक्तं तदर्कोऽत्यग्निदीपनः ॥ १४ ॥

बेल, अरणी, श्योनाक, खंभारी और पाढ़रि, बृहत् पंचमूल हैं। इनका अर्क जठराग्नि को बढ़ाती है। १४।

पंचमूल

शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी वार्त्ताकी कण्टकारिका।
गोक्षुरः पञ्चमूलं स्यात्तदर्कश्चाश्मरीप्रणुत् ॥ १५ ॥

शालिपर्णी (सरवन), पृष्ठिपर्णी (पिठवन), वार्ताकी, कटेहरी, और गोखुरू इनको पंचमूल कहते हैं। इनका अर्क पथरी को नाश करता है। १५।

दशमूल

उभाभ्यां पञ्चमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम्।
तदर्कः सूतिकारोगत्रिदोषज्वरशोथहा ॥ १६ ॥

बृहत् पंचमूल और पंचमूल को दशमूल कहते हैं। दशमूल का अर्क प्रसूत के रोग, त्रिदोषज्वर और शोथ का नाश करता है। १६।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जीवनीयगण

जीवन्ती मधुकं मुद्गा शालिपर्ण्यष्टवर्गकः ।
जीवनीयगणस्यार्कः सर्वरोगविनाशनः ॥ १७ ॥

जीवन्ती, मुलेठी, मुद्गपर्णी, शालिपर्णी और अष्टवर्ग इनकी जीवनीय संज्ञा है । इनका अर्क सब रोगों को नष्ट करता है ।१७।

सुगन्धगण

कर्पूरो मृगनाभिश्च कस्तूरीलतिका तथा ।
गन्धमार्जारचौर्यं च श्रीखण्डं पीतचन्दनम् ॥१८॥
कालीयकं रक्तकाङ्गं पतङ्गमगुरुद्वयम् ।
देवदारुश्च सरलस्तगरं पद्मकं पुरः ॥ १९ ॥
सरनिर्यासकोरालं कुन्दरुश्च शिलारसः ।
सिह्लकश्च लवङ्गं च जातीपत्री फलं तथा ॥ २० ॥
एलाद्वयं दारुचीनी त्वक्पत्रं नागकेसरम् ।
बालकं वीरणं मांसी कुङ्कुमं रोचना नखः ॥२१॥
सुगन्धवीरणं बाला जटामांसी मुरा घनः ।
शटीकर्चूरएकाङ्गीसुगन्धोऽयं गणोत्तमः ॥ २२ ॥
विधिनिष्कासितो योऽर्को रुच्यः पाचनदीपनः ।
मुखदौर्गन्ध्यहन्नेत्र्यो लेपान्मेदश्रमापहः ॥ २३ ॥

कपूर, कस्तूरी, लतिका, गन्धमार्जारचौर्य (बिल्लीलोटन), सफेद चन्दन, पीला चन्दन, काला अगुरु, लाल चन्दन, पतङ्ग, अगर दोनों, देवदारु, सरल, तगर, पद्मक, गूगुल, सरनिर्यास, राल, कुँदरू, लोबान, सिह्लक, शिलारस, लौंग, जावित्री, जायफल, दोनों इलायची, दाल-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चीनी, तज, पत्रज, नागकेसर, नेत्रबाला, खस, मांसरोहणी, केसर, गोरोचन, नखनखी, सुगन्धित वीरण, सुगन्धबाला, जटामांसी, कपूर-कचरी, नागरमोथा और कचूर ये सब सुगन्धित द्रव्य हैं। इनका अर्क विधिपूर्वक निकालने से रुचिकारक, पाचक, दीपन, मुख की दुर्गन्धि दूर करनेवाला, नेत्रों को लाभदायक, शरीर में लेप करने से मेदरोग और श्रम को दूर करनेवाला है। १८–२३।

वीरणगण

कुशः काशश्च दर्भश्च कत्तृणं भूतृणं तथा।
श्वेतदूर्वा नीलदूर्वा गण्डदूर्वेतिवीरणम्॥ २४॥
वीरणार्को हरेच्छूलं सन्धुक्षयति चानलम्।
क्षतसन्धानकृद्दृष्यो बलं कुर्यादनेकधा॥ २५॥

कुश, काश, दाभ, रोहिष, भूतृण, सफ़ेद दूब, नीली दूब, गण्ड-दूब और गाँड़र, इनकी वीरण संज्ञा है। वीरण का अर्क शूलरोग को लाभ करता है, जठराग्नि को दीपन करता है। घाव को पूरा करता और बल को बढ़ाता है। २४–२५।

दुग्धकंदगण

अश्वगन्धा च मुशली विदारी च शतावरी।
क्षीरवाराहिका चेति दुग्धकन्दगणास्त्वयम्॥ २६॥
बालको वर्द्धते वीर्यं रिरंसुर्बलया सह।
एतदर्कस्य पानेन कुर्यात्षोडशवार्षिकीम्॥ २७॥

असगंध, मुसली, विदारीकंद, शतावरी और क्षीरवाराही इनका दुग्धकंद संज्ञा है। इनका अर्क बालकों को पुष्ट करता है, पुरुषों को बलवती स्त्री के साथ भोग करने की इच्छा कराता है और इसका

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अर्क पीने से वृद्धा स्त्री भी सोलह वर्ष की तरुणी के समान हो जाती है। २६–२७।

दन्ती आदि का अर्क

लघुदन्ती बृहद्दन्ती इन्द्रवारुणिनीलिका।
वासयेच्च सुगन्धेन राजयोग्यं विरेचनम्॥ २८॥

लघुदन्ती, बृहत्‌दन्ती, नीली और इन्द्रायण इनके अर्क को सुगन्धित कर ले तो वह अर्क राजाओं के योग्य रेचक हो जाता है। २८।

वरगद के फलों का अर्क

दुग्धमिश्रैर्वटफलैः कमलानां पिधानकः।
जातोऽर्कः शीतलो ग्राही वर्ण्यो भगसुगन्धकृत् २९

वरगद के फल दूध में भिगोकर, कमल के फूलों से ढककर उनका अर्क निकाले। वह अर्क शीतल, मल का रोधक, शरीर के वर्ण को सुन्दर और योनि को सुगन्धित करनेवाला है। २९।

पीपल के फलों का अर्क

मूलनालदलोत्फुल्लफलैर्युक्ता हि पद्मिनी।
तत्पिधानं पिप्पलस्य फलानां योनिदोषनुत्॥३०॥

पीपल के फलों को कमलिनी के फूल, फल, पत्ते, नाल और जड़ से ढककर उनका अर्क निकाले। यह अर्क योनि के दोषों को दूर करता है। ३०।

आम की गुठली का अर्क

चूतकमंडलबीजं स्थलपद्मिनीपत्रपिहितं च।
उद्धृत्य सम्यगर्कं मण्डलमेकं समाश्नीयात्॥३१॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ऋतुदिनतो या ललना पिबति कुचस्तम्भनं कुर्यात् ।
गर्भस्य भीतिरहिता रमयति पुनःपुनःप्रसूतापि ३२

आम की गुठली की गिरी लेकर स्थल कमलिनी के फल, फूल, पत्ते और जड़ से ढककर विधिपूर्वक अर्क निकाले । ऋतुकाल से पन्द्रह दिन तक नियमपूर्वक इस अर्क के पीने से स्त्रियों के कुच कठोर हो जाते हैं और स्त्रियों में गर्भ धारण करने की शक्ति आ-जाती है। यदि गर्भ हो तो गर्भपात होने का डर नहीं रहता।३१—३२।

तिन्दू का अर्क

बल्यश्चक्षुष्करस्तिन्दुः पिहितः कुमुदैः स च ।
उपोदकी तदर्कस्य पानात्सूते विवेदनम् ॥ ३३ ॥

तेंदुआ का वृक्ष बल और दृष्टि बढ़ानेवाला है । कमलों के पत्तों से ढककर उसका अर्क निकाले तो यह अर्क गर्भवती स्त्री को पिलाने से सन्तान उत्पन्न होने के समय पीड़ा नहीं होती । ३३ ।

दूधवाले वृक्षों का अर्क

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थपारिसप्लक्षपादपाः ।
पञ्चैते क्षीरिणो वृक्षास्तेषामर्को व्रणप्रणुत् ॥ ३४ ॥
मेदोघ्नः स्नानतो लेपाद्विसर्पामयनाशनः ।
शोथघ्नस्तस्य सेकेन भग्नसन्धानको भवेत् ॥३५॥

बरगद, गूलर, पीपल, पलाश और पकरिया ये पाँच दूधवाले वृक्ष हैं । इनका अर्क पाने से घाव बहुत जल्द पूरा हो जाता है, शरीर में मलकर स्नान करने से मेदरोग नष्ट होजाता है । लेप करने से विसर्परोग जाता रहता है । सेंकने से शोथरोग दूर हो जाता है और टूटी हुई हड्डियाँ जुड़ जाती हैं । ३४—३५ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फूलों का अर्क

सेवती शतपत्री च वासन्ती गुलदावदी ।
चम्बेली यूथिका चम्पा बकुलश्च कदम्बकाः ॥३६॥
छादयेत्केतकीपत्रैर्ग्राह्योऽर्को गुरुमार्गतः ।
पुष्पार्क इति विख्यातो मरिचैः सहितं पिबेत् ॥३७॥
मण्डलार्कप्रयोगेण क्लीबोऽपि पुरुषायते ।
वर्षाधिकं तु यक्ष्माणं हन्याच्छ्रेष्ठो मृगाङ्कतः ॥३८॥

सेवती, गुलाब, माधवी, गुलदावदी, चमेली, जूही, चम्पा, मौलसिरी, और कदम्ब इनके फूलों को केतकी के पत्तों से ढककर विधिपूर्वक अर्क निकाले । इस पुष्पार्क में कालीमिर्च मिलाकर पन्द्रह दिन पीने से नपुंसक भी पुरुष हो जाता है । यदि एक वर्ष इस अर्क को पिये तो क्षयरोग भी नष्ट हो सकता है । यह पुष्पार्क मृगाङ्क रस से भी अधिक गुणदायक है । ३६–३८ ।

विषों का अर्क

वत्सनाभश्च हारिद्रः सौतिकश्च प्रदीपनः ।
सौराष्ट्रिकः शङ्खकश्च कालकूटहलाहलौ ॥ ३९ ॥
ब्रह्मपुत्रस्त्वमी ख्याता विषभेदास्तदर्कतः ।
लेपेन गण्डमालाद्या वातरोगाः शमन्ति च ॥४०॥

वत्सनाभ, हारिद्र, सौतिक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शंखक, कालकूट, हलाहल और ब्रह्मपुत्र ये नव प्रकार के विष हैं । इनका अर्क लेप करने से गण्डमाला आदि रोग और वातरोग नष्ट हो जाते हैं । ३९–४० ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

धानों का अर्क

रक्तशालिः सकलमः पाण्डुकः शकुनाहतः ।
सुगन्धकः कर्दमको महाशालिरदूषकः ॥ ४१ ॥
पुष्पाण्डकः पुण्डरीकस्तथा माहिषमस्तकः ।
दीर्घशूकः काञ्चनको हायनो लोध्रपुष्पकः ॥ ४२ ॥
इत्याद्याः शालयः सन्ति बहवो बहुदेशजाः ।
तासां पिष्टं यथालाभं क्षिपेदष्टगुणे जले ॥ ४३ ॥
यावज्जीवसमुत्पत्तिर्जीवानां विलयस्तथा ।
ततो दत्त्वार्कयन्त्रे तन्मद्यं निष्काशयेत्सुधीः ॥४४॥
स्वाद्वी मृद्वी ग्राहिणी च बलदा ज्वरहारिणी ।
नानादुःखहरा स्निग्धा चात्युन्मादत्रिदोषजित् ॥४५॥

रक्तशालि, सकलम, पाण्डुक, शकुनाहत, सुगन्धक, कर्दमक, महाशालि, अदूषक, पुष्पाण्डक, पुण्डरीक, माहिषमस्तक, दीर्घशूक, काञ्चनक, हायन, लोध्रपुष्पक इत्यादि अनेक प्रकार के चावल अनेक देशों में उत्पन्न होते हैं। इनमें जितने चावल मिल सकें उनकी पिट्ठी अठगुने पानी में डालकर जब उसमें कीड़े पड़ जायँ तब उसे यन्त्र में भरकर उसकी मदिरा खींच ले। यह मदिरा बड़ी स्वादिष्ठ, बलकारक, मल को रोकनेवाली, ज्वर को नाश करनेवाली, अनेक प्रकार के दुःखों और उन्माद को दूर करनेवाली है। ४१–४५।

द्विदल अन्नों का अर्क

मुद्गमाषो राजमाषो निष्पावश्च मकुष्ठकः ।
चणकाढकिमाङ्गल्या तृणकण्डः कलापकः ॥ ४६ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

द्विदलीकृत्य विदुषा ततश्चूर्णीकृतः पुनः ।
पूर्ववत्साधयेन्मद्यं तुषधान्यसमुद्भवम् ॥ ४७ ॥
मासार्द्धात्कुरुते दोषं नियमात्सगुणाश्च तान् ।
भूमिस्थमयनादूर्ध्वं तनुते गुणसन्ततिम् ॥ ४८ ॥
विण्मूत्ररोधमाध्मानं त्रिदोषोन्मत्तता रुजम् ।
शिरोजठरजङ्घासु पिटकानपि नाशयेत् ॥ ४९ ॥
ईषन्मदकरः स्निग्धो हरेत्पूर्वोदितान् गदान् ।
संवासयेत्पञ्चबाणमुद्दीपयति चानलम् ॥ ५० ॥

मूँग, उड़द, लोबिया, मोठ, चना, अरहर, मसूर और मटर इनकी दाल पीस कर ऊपर बताई हुई विधि के अनुसार अर्क निकाले । इस अर्क को मदिरा कहते हैं । एक महीने तो यह पीने योग्य होती नहीं, छः महीने बाद यह गुणदायक हो जाती है । यदि छः महीने इसे पृथिवी में गाड़ रक्खे तो यह बहुत ही गुण-दायक हो जाती है । यह मल-मूत्र के अवरोध, पेट का फूलना, त्रिदोष, उन्मत्तता, सिर की पीड़ा और जाँघ के फोड़ा को लाभ पहुँचाती है । इसमें नशा थोड़ा होता है । यह स्निग्ध होती है और कामदेव तथा जठराग्नि को बढ़ाती है । ४६—५० ।

तेलहन का अर्क

तिलातसी च तुवरी त्रिविधश्चापि सर्षपः ।
द्विधा राजी खसं चैव बीजं कौसुम्भसंभवम् ॥ ५१ ॥
एतानि तैलधान्यानि शटितानि च पूर्ववत् ।
ततो निष्काशयेदर्कं गन्धपाषाणवासितम् ॥ ५२ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मुहुर्विलेपतो रोगान्नरकुञ्जरवाजिनाम् ।
हरत्येव न सन्देहः स्वर्जिक्षारसमन्वितम् ॥५३॥
सर्वेषु कर्णरोगेषु बाधिर्ये कर्णपूरणम् ।
अनेन घर्षयेच्छङ्खं नयनाञ्जनमाचरेत् ॥ ५४ ॥
कण्डू पुष्पं जलस्रावं पक्ष्मरोगं व्यपोहति ।
अभ्यङ्गाद्दीप्तिदं चैव बल्यं त्वच्यञ्च केशकृत्॥५५॥

तिल, अलसी, सेहुवाँ, तीनों प्रकार की सरसों, दोनों तरह की राई, खसखस और कुसुमसम्भव (वरें) ये तेलहन हैं। इनको पीसकर गन्धक की वासना देकर यन्त्र में भरकर विधिपूर्वक इनका अर्क निकाले। इस अर्क का लेप करने से मनुष्य, हाथी और घोड़ा आदि के त्वचारोग नष्ट हो जाते हैं। इस अर्क में सज्जी मिला देने से बहरापन आदि कान के सब रोग दूर हो सकते हैं। इसी अर्क में शंख पीसकर अंजन बना ले तो वह अंजन आँखों की खुजली, फूला, पानी का गिरना और पद्मरोग को दूर कर देता है। इस अर्क के मालिश करने से खुजली और दाद भी अच्छा हो जाता है। इस अर्क के सेवन करने से शरीर की कान्ति, बल और केश बढ़ते हैं तथा त्वचा चिकनी हो जाती है। ५१—५५।

शहद की जातियाँ

माक्षिकं भ्रामरं क्षौद्रं यौतीकं छात्रमित्यपि ।
दार्ढ्यमौदालकं दालमित्यष्टौ मधुजातयः ॥ ५६ ॥

माक्षिक, भ्रामर, क्षौद्र, यौतीक, छात्र, दार्ढ्य, औदालक और दाल ये आठ शहद के भेद हैं। ५६।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ईख की जातियाँ

पौण्ड्रको भीरुकश्चापि वंशकः शतपोटकः।
कान्तारस्तापसेक्षुश्च काष्ठेक्षुः शुचिपत्रकः॥ ५७॥
नेपालो दीर्घपत्रश्च नीलपोरोऽथ कोशकृत्।
एता द्वादशसंख्याता इक्षूणां जातयः स्मृताः॥५८॥
फाणितं चैव मत्स्यण्डी गुडः खाण्डकमेवच।
सितासितोपला चैते षड्भेदा इक्षुजा मताः॥५९॥

पौण्ड्रक, भीरुक, वंशक, शतपोटक, कान्तार, तापसेक्षु, काष्ठेक्षु, शुचिपत्रक, नेपाल, दीर्घपत्र, नीलपोर और कोशकृत् ये बारह ईख की जातियाँ हैं। ५७–५८। मत्स्यंड, फाणित, गुड़, खाँड़, सिता और सितोपला ये छः ईख के विकार हैं। ५९।

कांजीवर्ग

आम्र आम्रातको धात्री लकुचं च कपित्थकम्।
नारङ्गं द्विविधा जम्बूः करमर्दं पियालकम्।
बीजपूरं च जम्बीरं निम्बवम्लीकाम्लवेतसम्॥६०॥
दाडिमं पर्वतद्राक्षा द्विधा बदरतूतकम्।
वृक्षाम्लं हरमन्थं च चाङ्गेरी त्वम्लवर्गतः॥ ६१॥
शुण्ठी कणा कणामूलं यवानी मरिचानि च।
तुल्यान्येतानि सर्वाणि एभ्यो द्विघ्नोम्लजो रसः।
प्रोक्तान्तर्गतदिक्कान्नं स्वादुसंख्यानखोन्मिता॥६२॥
सर्वेभ्यो द्विगुणं कार्य्यं स्थापयेन्मासमात्रकम्।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कुर्य्यादष्टप्रहरकं प्रत्यहं च ततः पुनः ॥ ६३ ॥
ततो निष्काशयेदर्क सुरेयं राजवारुणी ।
मासं भूमौ निखातव्या तत ऊर्ध्वमभक्षयत् ॥६४॥
मया महेश्वरमुखाच्छ्रुत्वा तस्यै समर्पिता ।
तेन दत्ता भैरवेभ्यो लोलजिह्वाः पिबन्ति ते ॥६५॥
इयं शीता लघु स्वाद्वी स्निग्धा ग्राही विलेखनी ।
चक्षुष्या दीपनी स्वर्या व्रणशोधनरोपणी ॥ ६६ ॥
सौकुमार्य्यकरा सूक्ष्मा परं स्रोतोविशोधनी ।
कषाया तु रसाह्लादिप्रसादजनकापरा ॥ ६७ ॥
वर्णमेधाकरी वृष्या विशदाऽरोचकतां हरेत् ।
कुष्ठार्शःकासपित्तास्रक्कफमेहक्लमक्रमीन् ॥ ६८ ॥
मेदतृष्णावमिश्वासहिक्कातीसारविड्ग्रहान् ।
दाहक्षतक्षयायैवं योगबाह्यम्लवातला ॥ ६९ ॥

आम्र, आम्रातक (अंबार); आँवला, बड़हर, कैथा, नारंगी, दोनों प्रकार की जामुन, करौंदा, चिरौंजी, बिजौरा नीबू, जँभीरी नीबू, इमली, अम्लवेतस, अनार, दाख, बेर, सहतूत, वृक्षाम्ल, हरमन्थ और चांगेरी ये अम्लवर्ग अर्थात् खट्टे पदार्थ हैं । ६०–६१ । सोंठ, पीपल, पिपलामूल, अजवायन और कालीमिर्च इनको समान भाग लेकर इनूका दुगुना अम्लवर्ग का रस मिलाकर फिर सबका दुगुना आठ प्रकार के शहद और बारह प्रकार की ईख का रस मिलादे । उसे एक महीने तक मिट्टी के पात्र में रक्खा रहने दे और उसकी रक्षा करता रहे फिर यन्त्र में भरकर उसका अर्क निकाले । इस अर्क का

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नाम राजवारुणी मदिरा है। इसे पृथिवी में गाड़ दे, एक महीने बाद निकालकर इसका सेवन करे। ६२—६४। इस मदिरा का वर्णन शिवजी ने पार्वती से किया था और पार्वती के मुँह से मैंने सुना। शिवजी ने इसे भैरव को दिया, वे इसे अपनी चंचल जिह्वा से पीते हैं। यह शीतल, हल्की, स्वादिष्ट, चिकनी, लाभदायक, दीपन और मल को बाँधनेवाली, स्वर को बढ़ानेवाली, आँखों को लाभदायक, घाव को भरनेवाली, शरीर को सुकुमार करनेवाली, शरीर की सूक्ष्म नाड़ियों को शुद्ध करनेवाली, कसैली, चित्त को प्रसन्न करनेवाली, शरीर का वर्ण सुन्दर बनानेवाली, बुद्धि बढ़ानेवाली, शरीर को पुष्ट करनेवाली, अरुचि का नाश करनेवाली, कुष्ठ, बवासीर, खाँसी, पित्त, रक्त-विकार, कफ, प्रमेह, थकावट और कृमि को हरनेवाली, मेदरोग, तृषा, वमन, श्वास, हिचकी, अतिसार और कब्ज को दूर करनेवाली, जलन को मिटाकर घावों को भरनेवाली, योगवाही और खट्टी डकार लानेवाली है। ६५—६९।

सब अन्नों का अर्क

कङ्गुश्चीनः कोद्रवश्च श्यामाको वनकोद्रवः ।
शणबीजं वंशबीजं गवेधुश्च प्रसाधिका ॥ ७० ॥
यावन्त्येतानि चोक्तानि तुषधान्यानि वेधसः ।
सर्वं संकुट्य यत्नेन वितुषीकृत्य यत्नतः ॥ ७१ ॥
तक्रे वा क्वचिदम्ले वा आकीटं तद्विनिक्षिपेत् ।
ततो निष्काशयेन्मद्यं भवेत्सा क्षुद्रवारुणी ॥ ७२ ॥

१–चीनो देशांशुकव्रीहिभेदे तन्तौ मृगान्तरे। (इति मेदिनी)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मण्डलोर्ध्वं तु भोक्तव्या बहुक्लेशकरैर्नरैः ।
क्षुधा तृषा च चिन्ता च पर्वतारोहणादिकम् ॥७३॥
एतत्संसेविनो नास्ति महाभारवहोपि वा ।
सूतां समुपविष्टश्चेज्जयेत्प्रसववेदनाम् ॥ ७४ ॥

काकुन, चीना, कोदों, साँवाँ, वनकोदों, सन के बीज, बाँस के बीज, गरडुआ और तीनी ये तुषधान्य हैं। इनको कूटकर भूसी निकाल दे और फिर मट्ठे या खटाई में भिगो दे। जब कीड़े पड़ जायँ तब यन्त्र में भरकर इनका अर्क निकाले। इस अर्क को क्षुद्रवारुणी कहते हैं। पन्द्रह दिन इस अर्क का सेवन करने से क्षुधा, तृषा और चिन्ता दूर हो जाती है। पहाड़ पर चढ़ने, मार्ग चलने और बोझा लादने से जो थकावट होती है वह इसके सेवन से दूर हो जाती है। प्रसूता स्त्री को देने से प्रसव की पीड़ा जाती रहती है। ७०—७४।

जंगली जीवों के मांस का अर्क

हरिणैणकुरङ्गर्ष्यपृषतन्यङ्कुशम्बराः ।
राजीवोपि च मुण्डी चेत्याद्या जाङ्गलसंज्ञिका ॥७५॥
एषां मांसं तु कणशः कृत्वा पूर्वे द्रवे क्षिपेत् ।
संस्थाप्य मण्डलं पश्चादर्कं निष्काशयेत्ततः ॥७६॥
एवं सर्वत्र मांसस्य वारुणीकरणक्रिया ।
पित्तश्लेष्महरी कश्चिद्वातला बलवर्द्धिनी ॥ ७७ ॥

ताम्रवर्ण का हिरन, कालाहिरन, चितकबरा हिरन, चाँदबिन्दीवाला हिरन, बारहसिंगा, रोझ, शकुल, और बिना सींग का हिरन, इनकी जाङ्गल संज्ञा है। इनके मांस के छोटे-छोटे टुकड़े करके मट्ठा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

या किसी खटाई में भिगो दे । पन्द्रह दिन बाद उसका अर्क निकाले । उस अर्क का नाम वारुणी है, यह पित्त और कफ का नाश करता है तथा बल को बढ़ाता है । किसी हिरन के मांस का अर्क वात को बढ़ाता है । ७५–७७ ।

बिलेशय जीवों का अर्क

गोधाशशभुजङ्गाश्च वृश्चिकाद्या विलेशयाः ।
एतत्सुरावातहरा बृंहणा बद्धमूत्रविट् ॥ ७८ ॥

गोह, शश (खरगोश), साँप, बिच्छू और चूहा आदि बिलेशय अर्थात् बिल में रहनेवाले जीव हैं । इनके मांस का अर्क वातरोग को नष्ट करता है, बल को बढ़ाता है और मल-मूत्र को बाँधता है । ७८ ।

गुफा में रहनेवाले जीवों का अर्क

सिंहव्याघ्रवृका ऋक्षतरक्षुद्वीपिनस्तथा ।
बभ्रुजम्बुकमार्जार इत्याद्याः स्युर्गुहाशयाः ॥ ७९ ॥
स्निग्धो बल्यो हितो नित्यं नेत्रगुह्यविकारिणाम् ।

सिंह, बाघ, भेड़िया, रीछ, तेंदुआ, चीता, नेवला, सियार और बिलार आदि जीवों को गुहाशय (गुफा में रहनेवाले) कहते हैं । ७९ ।

इनके मांस का अर्क चिकना और बल को बढ़ानेवाला है तथा नेत्रविकार और गुदा के रोगों को लाभदायक है ।

वृक्षों पर रहनेवाले जीवों का अर्क

वानरा वृक्षमार्जारो वृक्षमर्कटकादयः ॥ ८० ॥
एते पर्णमृगाश्चार्को वृष्यो नेत्र्यश्च शोषिणाम् ।
श्वासार्शःकासशमनो सृष्टमूत्रपुरीषकः ॥ ८१ ॥

वानर, वृक्षमार्जार और वृक्षमर्कट आदि जीवों को पर्णमृग कहते

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हैं। इनके मांस का अर्क शरीर को पुष्ट करता है, आँखों को लाभ पहुँचाता है और शोष, श्वास, बवासीर तथा खाँसी को दूर करता है। मल और मूत्र को निकालता है। ८०–८१।

विष्किर पक्षियों का अर्क

वर्त्तकालाववर्तीरकपिञ्जलकतित्तिराः।
कुलिङ्गकुक्कुटाद्याश्च विष्किरास्समुदाहृताः॥ ८२॥
बल्यो वृष्यो त्रिदोषघ्न एतदर्कस्तु पथ्यलः।

बटेर, लवा, बत्तख़, दोनों तीतर, गौरैया, और मुर्ग आदि पक्षियों को विष्किर कहते हैं। ८२। इनके मांस का अर्क बल और वीर्य को बढ़ाता है, तीनों दोषों को नष्ट करता है और पथ्य है।

प्रतुद पक्षियों का अर्क

हारीतो धवलः पाण्डुश्चित्र[1]पुच्छो बृहच्छुकः॥८३॥
पारावतः खञ्जरीटः पिकाद्याः प्रतुदाः स्मृताः।
कफपित्तहरो ग्राही बद्धविण्मूत्रको भवेत्॥ ८४॥

हारीत, धवल, पाण्डु, चित्रपुच्छ, बड़ा तोता, कबूतर, खंजन और कोयल आदि पक्षियों को प्रतुद कहते हैं। इनके मांस का अर्क, कफ और पित्त का नाश करता है; कब्ज़ करता है और मल-मूत्र को बाँधता है। ८३–८४।

प्रसर जीवों का अर्क

काको गृध्र उलूकश्च चिल्लश्च शशघातकः।
चाषो भासश्च कुरर इत्याद्याः प्रसराः स्मृताः॥८५॥
एतत्सुरा भस्मकरा तस्मान्मेदस्विनो हिता॥ ८६॥

कौआ, गिद्ध, उलूक, चील्ह, बाज, नीलकंठ, भास और कुरर,

१-चित्रपक्ष इति वा पाठः।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इनकी प्रसर संज्ञा है। इनके मांस का अर्क जठराग्नि को बढ़ाता है, इसलिए मेदरोगवाले मनुष्यों को बहुत लाभ पहुँचाता है। ८५—८६।

ग्राम्य पशुओं का अर्क

कालीयच्छागगोमेषो हयाद्या ग्राम्यसंज्ञकाः।
दीपनो वातहृत्पैत्तो बृंहणो बलवर्द्धनः॥ ८७॥

कालीय, बकरा, बैल, भेड़ा और घोड़ा आदि ग्रामीण पशु हैं। इनके मांस का अर्क जठराग्नि को बढ़ाता है, वातरोग को नष्ट करता है, पित्त बढ़ाता है, शरीर को पुष्ट करता और बल बढ़ाता है। ८७।

कूलेचर जीवों का अर्क

लुलायगण्डवाराहचमरीवारणादयः।
कूलेचरा एतदर्को वृष्यः श्लेष्मविवर्द्धनः॥ ८८॥

भैंसा, गैंडा, सुअर, सुरागाय और हाथी इन पशुओं की कूलेचर संज्ञा है। इनके मांस का अर्क शरीर को पुष्ट करता है और कफ बढ़ाता है।८८।

प्लवसंज्ञक पक्षियों का अर्क

हंससारसकाचाक्षचक्रक्रौञ्चशरारिकाः।
नन्दीमुखसकादंबा बलाकाद्याः प्लवाः स्मृताः ८९
एतन्मद्यं शुक्रकरं बल्यं स्निग्धं त्रिदोषनुत्॥ ९०॥

हंस, सारस, कौआ, चक्रवाक, क्रौंच, शरारि, नन्दीमुख, कादम्ब और बगुला आदि पक्षियों की प्लव संज्ञा है। इनके मांस का अर्क चिकना होता है। बल-वीर्य को बढ़ाता है और तीनों दोषों को नाश करता है। ८९—९०।

कोशस्थ जीवों का अर्क

शङ्खशङ्खनकश्चापि शुक्तिशम्बूककर्कटाः।
एते कोशस्थिताश्चार्को बृंहणो बलवर्द्धनः॥ ९१॥

बड़ा शंख, छोटा शंख, सीपी, घोंघा और केकड़ा ये जीव कोश-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

स्थित अर्थात् कोथली में रहनेवाले हैं। इनके मांस का अर्क शरीर को पुष्ट करता है और बल को बढ़ाता है। ९१।

पैरवाले जलजीवों का अर्क

कुम्भीरकूर्म्मनक्राश्च गोधामकरशङ्कवः।
कटिकः शिशुमारश्च इत्याद्याः पादिनः स्मृताः॥
पादिजाता सुरा वातहन्त्री स्निग्धा विशेषतः॥९२॥

कुम्भीर, कछुआ, घड़ियाल, गोह, मगर, शंकु और सूस आदि जीव पादी कहलाते हैं। ये जीव भी गुणों में कोशस्थित जीवों के समान हैं। इनके मांस का अर्क स्निग्ध और वातनाशक होता है। ९२।

मछली (मादा) का अर्क

मत्स्यो मीनो विसारश्च झषो वैसारिणोऽण्डजः ९३
शकुली पृथुरोमा च रोहितश्च सुदर्शनः।
एते मत्स्या एतदर्को रोचको बलवर्द्धनः॥ ९४॥

मत्स्य, मीन, विसार, झष, वैसारी, अंडज, शकुली, पृथुरोमा, रोहित और सुदर्शन आदि मछलियों का अर्क रुचि और बल को बढ़ानेवाला होता है। ९३--९४।

मछली (नर) का अर्क

नृमत्स्यार्कस्तु निष्काश्यो नानापुष्पैः सुवासितैः।
यः सेवयेन्मासषट्कं बलीपलितवर्जितः॥ ९५॥

पुरुष जाति की मछलियों का अर्क सुगन्धित फूलों से सुवासित करके निकालना चाहिए। एक महीना इस अर्क का सेवन करने से शरीर की झुर्रियाँ मिट जाती हैं और सफ़ेद बाल जड़ से काले हो जाते हैं। ९५।

मनुष्य के मांस का अर्क

मनुष्यमांसजार्कन्तु मासषट्कन्तु सेवयेत्।
न क्रामते शरीरस्य सर्प्पादीनां विषं क्वचित् ९६

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मनुष्य के मांस का अर्क छः महीने सेवन करने से शरीर में सर्प आदि का विष नहीं चढ़ता। ९६।

अंडों का अर्क

त्वचैला मरिचं चन्द्रो लवङ्गं जातिपत्रकम्।
दत्त्वाण्डानामुपरितो घृतं विंशतिभागिकम्॥
अण्डार्कोयं स्वगुणकृद् वृष्यो वातघ्नशुक्रलः॥ ९७॥

अंडा के ऊपर तज, इलायची, कालीमिर्च, कपूर, लौंग, जावित्री और उसका बीसवाँ भाग घी डालकर अर्क निकाले। जिस अंडे का अर्क निकाला जायगा उसी के समान गुण करेगा। अंडों का अर्क बल-वीर्य को बढ़ाता है और वात को नष्ट करता है। ९७।

निम्बाम्रांकुरसम्भूतो वसन्ते ग्रीष्मके पुनः॥ ९८॥
सेवतीशतपत्रीजो वर्षायां त्रिफलाभवः।
पारिजातककाश्मीरीजातोऽर्कः शरदि स्मृतः॥ ९९॥
यवानी गुलदावर्योर्हेमन्ते शिशिरे पुनः।
यवानीजं तु यः सेवेत्तस्य रोगभयं कुतः॥ १००॥

वसन्त ऋतु में नीम और आम के अंकुरों का अर्क पीना चाहिए। ग्रीष्मऋतु में सेवती और गुलाब का अर्क, वर्षा ऋतु में त्रिफला का अर्क, शरद्ऋतु में पारिजात और कुम्भेर का अर्क, हेमन्त ऋतु में अजवायन और गुलदावदी का अर्क और शिशिरऋतु में अजवायन और बिजौरा नींबू का अर्क पीना चाहिए। इस प्रकार अर्क का सेवन करने से किसी रोग का डर नहीं रहता। ९८–१००।

इति चौथा शतक समाप्त।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पाँचवाँ शतक

ज्वरस्तम्भन औषध

ज्वरखगमनवेलायां घृतार्कं मरिचान्वितम् ।
पलद्वयं पिबेद्यस्तु ज्वरः संस्तम्भितो भवेत् ॥ १ ॥

ज्वर आने से पहले घी के दो पल अर्क में काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर पीने से ज्वर रुक जाता है । १ ।

शीतज्वर की औषध

एकविंशतिवाराणि कदल्यर्केण भावितम् ।
चूर्णं तालं मुद्गमितं दिनाच्छीतज्वरं हरेत् ॥ २ ॥

चूना और हरताल को इक्कीस बार केले के अर्क की भावना देकर रत्ती भर खाने से शीतज्वर दूर हो जाता है । २ ।

मेथी वनाढ्या तुलसी कालामललवङ्गकैः ।
भूनिम्बेनार्क उत्पन्नो निर्वापो मौक्तिकाक्षयोः ॥ ३ ॥
मारितस्य प्रवालस्य भस्मनो ज्वरनाशनः ।

मेथी, वनमेथी, तुलसी, काला आँवला, लौंग और चिरायता इन सबका अर्क निकालकर उसमें मोती और कौड़ी बुझा दे । ३ । फिर उसमें मूँगे की भस्म मिलाकर देने से शीतज्वर दूर हो जाता है ।

विषमज्वर की औषध

सुरा जीर्णगुडाजाज्या निहन्ति विषमज्वरान् ॥ ४ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पुराना गुड़ और जीरा का अर्क सेवन करने से विषमज्वर जाता रहता है। ४।

सन्निपात की औषध

अर्कस्तु दशमूलानां लवङ्गमरिचाचितः।
सन्निपातं हरेत्तूर्णमुपालाभसुशायिनाम् ॥ ५ ॥

दशमूल के अर्क में लौंग और कालीमिर्च का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से सन्निपातज्वर दूर हो जाता है। ५।

आमातिसार की औषध

शृङ्गवेरं नागवेरं मग्नमैरण्डजे द्रवे।
पर्पटान्निर्गतार्कस्तु हरेदामातिसारकम् ॥ ६ ॥

अदरख और सोंठ को कुछ दिन अरण्ड के रस में भिगो रक्खे, फिर पित्तपापड़ा मिलाकर अर्क निकाले इस अर्क के सेवन से आमातिसार को लाभ होता है। ६।

पक्वातिसार की औषध

धातक्याम्रास्थिबिल्वानि लोधेन्द्रयवतोयदाः।
पर्य्यायं माहिषं तक्रे तदर्कः पक्वसारहा ॥ ७ ॥

धाय के फूल, आम की गुठली, बेल की गिरी, लोध, इन्द्रजौ, और नागरमोथा इन सबको भैंस के मट्ठे में भिगोकर अर्क निकाले। यह अर्क पक्वातिसार को दूर करता है। ७।

रक्तातिसार का औषध

वत्सकत्वग्दाडिमत्वक्साधितो मधुनान्वितः।
दधिभक्ताशिनोर्कोऽयं रक्तातीसारनाशनः ॥ ८ ॥

कुड़े और अनार की छाल का अर्क शहद के साथ पिये और दही भात खावे तो रक्तातिसार दूर हो जाता है। ८।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रवाहिका की औषध

धातकीबदरीपत्रकपित्थरसमाक्षिकम् ।
लोध्रं दधिप्लुतं चार्कः प्रवाहीनाशनः परः ॥ ९ ॥

धाय के फूल, बेर के पत्ते, कैथा का रस, शहद और लोध इनमें दही मिलाकर इनका अर्क निकाले । यह अर्क प्रवाहिकारोग को नष्ट कर देता है । ९ ।

संग्रहणी की औषध

तक्रनिर्वापिता मुद्गास्तदर्को धान्यजीरकैः ।
सैन्धवेन समायुक्तो हन्यात्संग्रहणीगदम् ॥ १० ॥

मट्ठे में मूँग मिलाकर उसका अर्क निकाले । उसमें धनियाँ, जीरा और सेंधानमक मिलाकर सेवन करने से संग्रहणीरोग दूर हो जाता है । १० ।

महारोग की औषध

एकविंशतिवाराणि गैरिकं चूर्णभावितम् ।
छिकन्यार्केण तद्भूमान्महारोगक्षयो भवेत् ॥ ११ ॥

गेरू का चूर्ण नकछिकनी के अर्क में इक्कीस बार भिगोवे । उसका सेवन करने से महारोग नष्ट हो जाता है । ११ ।

बालग्रहशान्ति धूप

पूती दशाङ्गी सिद्धार्थवचाभल्लातदीप्यकैः ।
सकुष्ठैः सघृतैः धूपः सर्वग्रहविमोक्षणः ॥ १२ ॥

पूति, करंजुआ, सफ़ेद सरसों, बच, भिलावाँ, अजमोद, कूट और घी इनसे तैयार किया हुआ धूप सब ग्रहों के दोषों को दूर करता है । १२ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ग्रहभूतपिशाचाद्याः पूतनामातृकादयः ।
धूपेनानेन सर्वेऽपि न स्पृशन्तीह बालकम् ॥ १३ ॥

इस धूप के प्रभाव से ग्रह, भूत, पिशाच, पूतना और शीतला आदि बालकों का स्पर्श कर नहीं सकते । १३ ।

कङ्करः कोणकश्चैव सकोणः कठिनस्तथा ।
एतेषां नो भयं भूयाद्यदि धूपः प्रधूपितः ॥ १४ ॥

कंकर, कोणक, सकोण और कठिन ये बालकों को सतानेवाले ग्रह हैं। इस धूप के प्रभाव से बालकों को इनका भय नहीं रहता। १४ ।

वेणी येणी च संयुक्ता कुक्कुरा रक्तसारिका ।
प्रभूतास्त्वरिता रात्रिर्न स्पृशन्ति इमाः शिशुम् ॥ १५ ॥
जीवन्ति ते वर्षशतं धूपस्याऽस्य प्रभावतः ।
इमां विद्यां न यच्छन्ति ते नरा ब्रह्मघातिनः ॥ १६ ॥

वेणी, येणी, कुक्कुरा, रक्तसारिका, प्रभूता, स्वरिता और रात्रि ये सात बालमात्रिका हैं। ये इस धूप के प्रभाव से बालकों को नहीं सतातीं बल्कि उनकी रक्षा करती हैं। १५ । इस धूप के प्रभाव से बालक दीर्घायु होकर सौ वर्ष तक जीते हैं। जो मनुष्य इस धूप को छिपा रखता है अर्थात् दूसरों को नहीं बतलाता, उसे ब्रह्महत्या का पाप लगता है । १६ ।

मन्दाग्नि की औषध

शुण्ठी पथ्या दाडिमत्वक् सगुडा वारुणी कृता ।
शोषणी सद्विपलिका प्रोक्ता मन्दाग्निनाशिनी ॥ १७ ॥

सोंठ, हड़ और अनार की छाल में गुड़ मिलाकर उसका अर्क

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

निकाले। प्रतिदिन दो पल इसका सेवन करने से शोष और मन्दाग्नि का नाश हो जाता है। १७।

विसूचिका की औषध

पञ्चकोलशिवाजाजीमरिचं चाम्लभावितम्।
तदर्को हरति क्षिप्रं दुर्निवारविसूचिकाम्॥ १८॥

पञ्चकोल (पीपल, पिपलामूल, चव्य, चीता और सोंठि), हड़, जायफल और कालीमिंर्च इन औषधों को खटाई में मिलाकर इनका अर्क निकाले। इस अर्क का सेवन करने से विसूचिका (हैजा) दूर हो जाती है। १८।

अजीर्ण की औषध

यवान्यर्को मुस्तयुक्तः कट्वाम्लाभ्यां विलोडितः।
गन्धपाषाणधूपेन वासितोऽजीर्णनाशनः॥ १९॥

अजवायन को खटाई में भिगोकर उसका अर्क निकाले। फिर उसमें गन्धक की वासना दे। उसमें दही का पानी और नींबू का अर्क मिलाकर पीने से अजीर्णरोग का नाश होजाता है। १९।

विषमाग्नि की औषध

शुण्ठी कुलिञ्जनं चाम्लभावितं तस्य चार्कतः।
पटुयुक्तं हरेच्छीघ्रं विषमाग्निं न संशयः॥ २०॥

सोंठि और कुलिंजन को खटाई में भिगोकर उसका अर्क निकालें। इस अर्क में नमक मिलाकर पीने से विषमाग्नि शीघ्र दूर हो जाती है। २०।

गरिष्ठ भोजन पचाने की औषध

दुग्धं दधि घृतं मूत्रं पललं महिषोद्भवम्।
भुङ्क्ते तदर्को भुञ्जीत गुर्वन्नभस्मकाग्निहृत्॥ २१॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इस अर्क का सेवन करने से भैंस का दूध, दही, घी, मूत्र और मांस आदि अति गरिष्ठ भोजन भी पच जाते हैं। २१।

कृमिनाशक अर्क

खुरासानी यवानी च कुबेराक्षो विडङ्गकम्।
व्योषश्चैषां कृतो ह्यर्कस्त्वग्निमन्दरुजं हरेत् ॥२२॥

खुरासानी अजवायन, पाढ़र, बायबिड़ंग और त्रिकुटा इनका अर्क मन्दाग्नि को दूर करता है। २२।

रसेन्द्रेण समायुक्तश्चार्को धत्तूरपत्रजः।
नागवल्लीभवो वापि यूकालिख्याविनाशनः ॥ २३॥

धतूरे के पत्तों का अर्क अथवा नागवेलि का अर्क शुद्ध पारा में मिलाकर बालों में लगाने से जुआँ और लीख मर जाते हैं। २३।

खटमल मच्छर भगाने की औषध

खट्वायां वा गृहे वापि हरितालार्कलेपनात्।
मत्कुणा मक्षिकाःसर्पा मशका यान्ति तत्क्षणात् २४

चारपाई में अथवा घर में हरिताल का अर्क छिड़कने से मच्छर, मक्खी, खटमल और साँप भाग जाते हैं। २४।

तक्रे दत्त्वा पलाशस्य बीजान्यर्कं समादिशेत्।
तदर्कपानात्कफहृत् कृमीनां नाशनं भवेत् ॥ २५॥

ढाक के बीजों को मट्ठे में मिलाकर उनका अर्क निकाले। उस अर्क के पीने से कफ का नाश होता है और कीड़े मर जाते हैं।२५।

रुधिरस्थेषु कृमिषु गन्धकार्कं पिबेत्तु यः।
रात्रौ जागरणं कुर्यात्कृमीरक्तस्य नश्यति ॥ २६ ॥

जिसके शरीर में रक्त के कीड़े अर्थात् जमजँ पड़ गये हों

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वह मनुष्य गन्धक का अर्क पिये और रात को जागे तो कीड़े मर जाते हैं। २६।

पाण्डुरोग की औषध

लोहचूर्णं वापि लोहं किट्टचूर्णं पृथक् पृथक्।
फलत्रिकाथ व्योषार्कभावितं पाण्डुनाशनम्॥ २७॥

लोहचूर्ण अथवा लोहकीटी के चूर्ण को त्रिफला और त्रिकुटा के अर्क में अलग-अलग भिगोकर पीने से पाण्डुरोग नष्ट हो जाता है। २७।

कामलारोग की औषध

त्रिफलार्को गुडूच्यर्को समं देयं तु माक्षिकम्।
दद्यात्प्रातः कामलाहृद् द्रोणपुष्परसाञ्जनात्॥२८॥

त्रिफला, गुर्च अथवा दारुहल्दी के अर्क में शहद मिलाकर पीने से कामला रोग नष्ट हो जाता है। आँखों में गूमा के अर्क का अञ्जन लगाने से भी कामलारोग शान्त हो जाता है। २८।

मिट्टी खाने से उत्पन्न पाण्डुरोग की औषध

हरीतकी गुडूची च पर्यायं तक्रभाविता।
तदर्को नाशयत्येव पाण्डुमृद्भक्षणोद्भवम्॥ २९॥

हड़ और गुर्च को कई बार मट्ठे में भिगोकर उसका अर्क निकाले। इस अर्क का सेवन करने से, मिट्टी खाने से उत्पन्न पाण्डु-रोग नष्ट हो जाता है। २९।

कुम्भकामला की औषध

गोमूत्रे भावयेद्धीमान्पर्यायं च शिलाजतुम्।
निष्काशितस्तदर्कस्तु कुम्भकामलिकापहः॥३०॥

शिलाजीत को गोमूत्र में कई बार भिगोकर उसका अर्क निकाले। यह अर्क कुम्भकामलारोग को नष्ट करता है। ३०।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हलीमकरोग की औषध

लोहचूर्णं घनार्केण भावयेच्छतवारकम् ।
पिबेत्तुषादिरार्केण हलीमकनिकृन्तनम् ॥ ३१ ॥

लोहचूर्ण को नागरमोथा के अर्क में एकसौ बार भिगोकर खैर के अर्क के साथ सेवन करने से हलीमक रोग नष्ट हो जाता है। ३१।

रक्तपित्त की औषध

अट्टरूषकमृद्वीकापथ्यार्कश्च सशर्करः ।
वृषार्कोऽयं समधुको रक्तपित्तनिवारणः ॥ ३२ ॥

रूसा, दाख और हड़ इनके अर्क में शक्कर मिलाकर पीने से अथवा रूसा के अर्क में शहद मिलाकर पीने से रक्तपित्तरोग का नाश हो जाता है। ३२।

लोध्रप्रियङ्गुमृद्वीकाचन्दनार्को रसान्वितः ।
वासायाः क्षौद्रसंयुक्तो बन्ध्य।या रक्तपित्तहृत् ॥ ३३॥

लोध, काँगनी, दाख और चन्दन का अर्क शुद्ध पारा के साथ पीने से रक्तपित्तरोग नष्ट हो जाता है। ३३।

कंठदाह और पित्तश्लेष्म नकसीर की औषध

अर्को दाडिमपुष्पोत्थो मृद्वीकासम्भवोऽपि वा ।
पानान्नस्याद्धरेन्नासारक्तमाम्रास्थिजोऽपि वा ॥ ३४॥

अनार के फूल का अर्क, दाख का अर्क अथवा आम की गुठली का अर्क पीने या नास लेने से नासिका से रुधिर गिरना बन्द हो जाता है। ३४।

कंठदाह और पित्तश्लेष्म की औषध

द्राक्षाभयापिप्पलीनामर्कश्च सितया युतः ।
मधुना कण्ठदाहघ्नः पित्तश्लेष्महरः परः ॥ ३५ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दाख, हड़ और पिप्पली का अर्क मिश्री या शहद के साथ पीने से कंठदाह, कफ और पित्त का नाश हो जाता है। ३५।

अम्लपित्त की औषध

छिन्नोद्भवानिम्बपत्रपटोलदलसम्भवः।
अर्कः क्षौद्रान्वितो हन्यादम्लपित्तं सुदारुणम्॥३६॥

गुर्च, नीम के पत्तों और परवल के पत्तों का अर्क शहद के साथ पीने से अम्लपित्त रोग नष्ट हो जाता है। ३६।

राजयक्ष्मा की औषध

ऊर्ध्वमूर्ध्वं द्विगुणिता त्वगेला पिप्पली तुगा।
सितोपलार्कः सक्षौद्रः सघृतो राजयक्ष्मनुत्॥३७॥

तज, इलायची, पिप्पली, वंशलोचन और मिश्री इनको क्रम से दूनी लेकर अर्क निकाले। शहद अथवा घी के साथ इसका सेवन करने से राजयक्ष्मा रोग नष्ट हो जाता है। ३७।

अजस्य हृदयार्कस्तु तन्मातादुग्धसाधितः।
जीवनीयकषायं तु पिबेच्छोषक्षयप्रणुत्॥ ३८ ॥

बकरे के कलेजे का अर्क बकरी के दूध के साथ पीने से शोष और क्षयरोग दूर हो जाता है। ३८।

अध्वशोष की औषध

चन्दनोशीरसेवन्तीशतपत्रादसम्भवः।
अर्को हरेदध्वशोषं दिवासुप्तस्य वेगतः॥ ३९ ॥

चन्दन, खस, गुलाब और कमल का अर्क, दिन में सोने से उत्पन्न आलस्य को दूर कर देता है। ३९।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

व्रणशोथ की औषध

दुग्धसंस्थापितकटुत्रयादर्कं समाहरेत् ।
सशीतं व्रणशोथघ्नं यूषमांसरसाशिनः ॥ ४० ॥

दूध में भिगोकर त्रिकुटा का अर्क निकाले । उसमें मिश्री मिलाकर पीने से शोरवा पीनेवालों के व्रण और शोथ को लाभ होता है ।४० ।

उरःक्षत की औषध

बलाश्वगन्धा कम्भारी वटपत्री पुनर्नवा ।
दुग्धनिर्वापितो वार्क उरःक्षतनिवारणः ॥ ४१ ॥

वरियारा, असगंध, कुम्भेर, वटपत्री और पुनर्नवा इन औषधों को भिगोकर इनका अर्क निकाले । इस अर्क के पीने से उरःक्षतरोग नष्ट हो जाता है । ४१ ।

दारुणकफ की औषध

धूर्तबीजत्रिकटुकयवान्यर्कविभावितम् ।
लवणं शतवारं च कफं हन्यात्सुदारुणम् ॥ ४२ ॥

धतूरे के बीज, त्रिकुटा और अजवायन के अर्क में नमक की सौ भावना देकर पीने से बढ़ा हुआ कफ नष्ट हो जाता है । ४२ ।

क्षय, कास की औषध

कण्टकारीजटार्कस्तु सकृष्णः सर्वकासहा ।
ककुभस्य त्वचा चूर्णं वासार्केण विभावितम् ॥४३॥
सितोपला घृतमधुसंयुक्तः क्षयकासहृत् ॥ ४४ ॥

भटकटैया की जड़ का अर्क पिप्पली का चूर्ण मिलाकर पीने से सब प्रकार की खाँसी दूर हो जाती है । रूसा के अर्क में अर्जुन वृक्ष की

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छाल का चूर्ण मिलाकर मिश्री, घी और शहद के साथ सेवन करने से खाँसी और क्षयरोग नष्ट हो जाता है। ४३–४४।

सूखी खाँसी की औषध

कण्टकारीयुगद्राक्षा वासाकर्चूरनागरैः॥ ४५॥
पिप्पलीखाखसैरर्कः शर्करामधुसंयुतः।
शुष्ककासहरश्चैष महादेवेन भाषितः॥ ४६॥

दोनों कटेहरी, दाख, रूसा, कचूर, सोंठ, पिप्पली और खसखस का अर्क निकालकर उसमें शक्कर और शहद मिलाकर पीने से सूखी खाँसी दूर हो जाती है। यह शिवजी का वाक्य है। ४५–४६।

श्वासरोग की औषध

कूष्माण्डकशिफार्कस्तु कोष्णः श्वासं क्षणाद्धरेत्।
आर्द्रकार्को माक्षिकेण युक्तः श्वासनिवारणः॥४७॥

पेठा की जड़ का अर्क कुछ गरम पीने से क्षण भर में श्वासरोग नष्ट हो जाता है। अदरख का अर्क शहद के साथ सेवन करने से श्वासरोग नष्ट हो जाता है। ४७।

हिचकी की औषध

स्विन्ना दुग्धे तु या शुण्ठी तदर्कस्तत्क्षणाद्धरेत्।
गुडद्रवेण वा सिद्धो हन्याद्धिक्कां न संशयः॥४८॥

दूध में सोंठ भिगोकर उसका अर्क निकाले। इस अर्क के पीने से क्षण भर में हिचकी बंद हो जाती है। अथवा गुड़ के शर्बत में बनाया हुआ सोंठ का अर्क हिचकीरोग को नष्ट करता है। ४८।

स्वरभंग की औषध

अर्को वा पञ्चकोलानां शृङ्गवेररसान्वितः।
गोघृतक्षौद्रसंयुक्तः स्वरभेदविनाशनः॥ ४९॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पंचकोल (पिप्पली, पिपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ) के अर्क में अदरख का रस, गाय का घी और शहद मिलाकर पीने से स्वर भेद रोग नष्ट हो जाता है। ४९।

मधुरस्वर की औषध

निम्बूरसेन मधुना मरिचैरवधूलितम्।
कुलिञ्जनार्कं पिबति राक्षसः किन्नरायते ॥ ५० ॥

कुलींजन के अर्क में नींबू का रस, शहद और कालीमिर्च का चूर्ण मिलाकर पीने से राक्षस का भी किन्नर के समान स्वर हो जाता है। ५०।

अरुचि की औषध

मूलपत्रं यवानी च तिन्तिडीरससंयुता।
शटिनो हन्ति गण्डूषादर्कः सर्वमरोचकम् ॥ ५१ ॥

जड़ और पत्तों सहित अजवायन और इमली के रस का पानी इनका कुल्ला करने से सब प्रकार की अरुचि दूर हो जाती है।५१।

वमन की औषध

अश्वत्थत्वग्भवो वापि कमलाक्षोद्भवस्तथा।
माक्षिकाविट्समुत्थो वा दूर्वाजो वा हरेद्वमीन्॥५२॥

पीपल की छाल का अर्क अथवा कमलगट्टे का अर्क अथवा सोनामाखी का अर्क अथवा दूब का अर्क पीने से छर्दि रोग नष्ट हो जाता है। ५२।

प्यास दूर करने की औषध

मुस्तपर्प्पटकोदीच्यधान्यचन्दनबालकैः।
एतदर्को हरेदाशु सर्वतृष्णां न संशयः ॥ ५३ ॥

नागरमोथा, पित्तपापड़ा, हाऊबेर, धनियाँ, चन्दन और नेत्रबाला

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

का अर्क पीने से सब प्रकार की तृषा दूर हो जाती है इसमें कुछ सन्देह नहीं । ५३ ।

मुखशोष की औषध

अमलं कमलं कुष्ठं लाजाश्ववटरोहकम् ।
अर्कीकृतं मधुयुतं मुखशोषनिवारणम् ॥ ५४ ॥

आँवला, कमलगट्टा, कूट, धान के लावा और बरगद की जटाओं का अर्क शहद के साथ चाटने से मुख-शोष (मुख का सूखना) नष्ट हो जाता है । ५४ ।

क्षय आदि रोगों की औषध

मध्वर्को वाथ दुग्धार्को हिंस्यात्कोपं क्षयोद्भवम् ।
तृष्णां हरेच्च रक्तार्को हृत्क्षतसमुद्भवाम् ॥ ५५ ॥

शहद का अर्क अथवा दूध का अर्क क्षयरोग के कोप को दूर कर देता है । रुधिर का अर्क हृदय की चोट और तृषा को नष्ट करता है । ५५ ।

तृषा और वमन की औषध

षडूषणवचाबिल्वजातोऽर्कस्त्वामसम्भवाम् ।
मदनार्कः समाहन्यात्तृष्णां गुर्वन्नजां वमेः ॥५६॥

षडूषण (पिप्पली, पिपलामूल, मिर्च, चव्य, चीता और सोंठ) बच और बेल का अर्क पीने से आमरोग नष्ट हो जाता है । मैनफल का अर्क गरिष्ठभोजन से उत्पन्न तृषा और वमन को शान्त करता है ।५६।

दुग्धस्यार्कः सितायुक्तः शतपत्रीसुवासितः ।
दुर्बलानामतिरुजां देयं तृष्णानिवृत्तये ॥ ५७ ॥

दूध का अर्क मिश्री मिलाकर और गुलाब से सुगंधित करके सेवन करने से दुर्बल रोगियों की तृषा नष्ट हो जाती है । ५७ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मूर्च्छारोग की औषध

कोलमज्जोषणोशीरकेशरैः पुष्पवासितैः ।
निष्काशितोऽर्कः ससितो मूर्च्छां जयति दुस्तराम् ५८

बेर की गुठली, कालीमिर्च, खस और केसर का अर्क सुगन्धित पुष्पों से सुवासित करके शक्कर मिलाकर पीने से भयंकर मूर्च्छारोग नष्ट हो जाता है । ५८ ।

मधूकसारसिन्धूत्थवचोषणकणैः समाः ।
आसामर्कस्य नस्यं स्याच्छीघ्रं सञ्ज्ञाप्रबोधकृत् ५९

महुवा की सार, सेंधानमक, बच, कालीमिर्च और पिप्पली समान भाग लेकर इनका अर्क निकाले । इस अर्क के सूँघने से मूर्च्छित मनुष्य शीघ्र होश में आ जाता है । ५९ ।

नशा दूर करने की औषध

निर्विष्यर्को मत्स्यपित्तायुक्तो विषभवां जयेत् ।
मद्यजं तु पिबेन्मद्यं सुगन्धद्रव्यवासितम् ॥ ६० ॥

निर्विषी का अर्क कुटकी के साथ सेवन करने से विष दूर हो जाता है । सुगंधित द्रव्यों से सुवासित मदिरा पीने से भी विष दूर होता है । ६० ।

आलस्य दूर करने की औषध

पिबेद्दुरालभाजार्कं सघृतं चामशान्तये ।
ऊषणार्कोऽगस्तिरसैः कृतो नश्येच्च तन्द्रिकाम् ॥ ६१ ॥

धमासे का अर्क घी के साथ पीने से आमरोग नष्ट हो जाता है । कालीमिर्च का अर्क अगस्त के रस के साथ सेवन करने से आलस्य दूर हो जाता है । ६१ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

निद्रा दूर करने की औषध

सैन्धवं श्वेतमरिचं सर्षपः कुष्ठमेव च।
वत्समूत्रेण जातार्कोऽतः स्यान्निद्रानिवारणः ॥ ६२॥

सेंधा नमक, सफ़ेद मिर्च, सरसों, कूट, इन सबको बछड़े के मूत्र में मिलाकर अर्क निकाले। इस अर्क के पीने से निद्रा जाती रहती है। ६२।

मदात्यय की औषध

मद्यं खर्ज्जूरिमृद्वीकापरूषकरसैर्युतम्।
सदाडिमरसैः शीतं सर्वमद्यात्ययं जयेत् ॥ ६३ ॥

खजूर की मदिरा में दाख, फालसा और अनार का अर्क मिलाकर पीने से सब प्रकार का नशा दूर हो जाता है। ६३।

धतूरे का नशा दूर करने की औषध

कूष्माण्डार्को गुडयुतः कोद्रवोत्थमदात्यये।
दुग्धार्कः सितया युक्तो धूर्त्तजे तु मदात्यये ॥ ६४ ॥

सोंठ का अर्क गुड़ के साथ पीने से कोदौं के नशे को दूर कर देता है। दूध का अर्क मिश्री के साथ पीने से धतूरे का नशा दूर हो जाता है। ६४।

अनेक प्रकार के नशा दूर करने की औषध

जलार्कश्शीतलो हन्ति छर्दिमूर्च्छातिसारजम्।
ताम्बूलोत्थं च चूर्णार्कश्शर्करार्कस्तु पूगजम् ॥ ६५॥

पानी का अर्क शीतल है। उसके पीने से मूर्च्छा, वमन, अतिसार का नशा दूर हो जाता है। चूना का अर्क पान के नशा को और शक्कर का अर्क सुपारी के नशा को दूर करता है। ६५।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जातीफलोत्थं पथ्यार्कोऽम्लजो भङ्गासमुद्भवम् ।
शीततोयावगाहोत्थं शर्करादधिजोऽर्ककः ॥ ६६ ॥

हड़ का अर्क जायफल के नशा को, खटाई का अर्क भाँग के नशा को और शक्कर अथवा दही का अर्क शीतल जल में तैरने से उत्पन्न नशा को दूर करता है । ६६ ।

अयमेव विभीतोत्थं खाखसोत्थं तदुद्भवः ।
निम्बार्कश्चाहिफेनोत्थं हरेत्पानात्ययं प्रिये ॥ ६७ ॥

हे प्रिये, यही अर्क बहेड़ा और खसखस के नशा को दूर करता है । नींब का अर्क पीने से अफीम का नशा उतर जाता है । ६७ ।

कोलामलकसंयुक्तधान्यार्कस्सर्वदाहनुत् ।
छादयेत्तस्य सर्वाङ्गं तदर्काक्तेन वाससा ॥ ६८ ॥

बेर, आँवला और धनियाँ का अर्क सब प्रकार के दाह को दूर करता है । जिसके शरीर भर में दाह हो उसे कटेहरी के अर्क में भिगोकर वस्त्र उढ़ा देने से दाहरोग नष्ट हो जाता है । ६८ ।

कटेहरी का अर्क

सर्वाङ्गार्द्धाङ्गकस्वेदो हन्ताक्यर्कप्रलेपनात् ।
हस्तपादभवः स्वेदो मर्दनाद्गच्छतो भृशम् ॥ ६९ ॥

कटेहरी का अर्क लेप करने से सम्पूर्ण अंग तथा आधे अंग का पसीना दूर हो जाता है ।

हाथ और पैर में मालिश करने से अधिक पसीना का आना बंद हो जाता है । ६९ ।

उन्मादरोग की औषध

शङ्खपुष्पीभवो वापि कूष्माण्डफलसम्भवः ।
मधुकुष्ठान्वितश्चार्कः सर्वोन्मादविनाशकः ॥ ७० ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शंखपुष्पी का अर्क अथवा पेठा का अर्क शहद और कूट के साथ सेवन करने से सब प्रकार के उन्माद नष्ट हो जाते हैं। ७०।

भूतोन्माद की औषध

ज्वालामरिचजार्कस्य पानान्नस्याद्विलेपनात् ।
अञ्जनात्संक्षयं यान्ति भूतोन्मादक्षयाः क्षणात्॥७१॥

लालमिर्च का अर्क पीने, नास लेने, लेप करने अथवा आँखों में लगाने से क्षण भर में भूतोन्माद और क्षयरोग नष्ट हो जाता है।७१।

मिरगी की औषध

केतकस्य फलस्यार्को नस्यात्कर्णप्रपूरणात् ।
पानादञ्जनतो हन्यादपस्मारं न संशयः ॥ ७२ ॥

केतकी के फलों का अर्क पीने, नास लेने, आँखों में लगाने अथवा कानों में डालने से मिरगीरोग नष्ट हो जाता है। ७२।

बहिरापन की औषध

वचात्वक्पिप्पलीशुण्ठीहरिद्रायष्टिसैन्धवम् ।
अजमोदाजाजिजोऽर्कः कुर्याच्छ्रुतिधरं नरम् ७३॥

बच, कुलिंजन, पिप्पली, सोंठ, हल्दी, मुलेठी, सेंधानमक, अजमोदा और कालाजीरा इनका अर्क सेवन करने से बहरापन दूर हो जाता है।७३।

अफारा की औषध

बाहुशोषे बलामूलकृतार्कः सैन्धवान्वितः ।
आध्माने क्षौद्रखण्डाद्यैस्त्रिवृतापिप्पलीभवः ॥७४॥

बरियारा की जड़ का अर्क सेंधानमक के साथ सेवन करने से बाहुशोषरोग दूर हो जाता है। और पिप्पली का अर्क निशोथ, शहद और शक्कर के साथ पीने से अफारारोग नष्ट हो जाता है। ७४।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गठियाबाई की औषध

अतिस्विन्नं तु गोमूत्रे बीजमेरण्डजं ततः ।
कृतार्कः पलमात्रस्तु पेयो गृध्रसिनाशनः ॥ ७५ ॥

गोमूत्र में मिलाकर एरंड के बीजों का अर्क निकाले । एक पल इस अर्क का सेवन करने से गाँठ की बाई दूर हो जाती है । ७५ ।

गुडूचीत्रिफलाम्भोभिर्भावितं गुग्गुलुं बहु ।
क्षीरेणैरण्डतैलेन तदर्कः क्रोष्टुशीर्षहा ॥ ७६ ॥

गुर्च, त्रिफला और नेत्रबाला के काढ़ा में मिलाकर दूध और एरंड के तेल का अर्क निकाले इससे क्रोष्टुशीर्ष रोग नष्ट होजाता है। ७६।

वातनाशक औषध

शेफाल्येरण्डसेहुण्डधत्तूरार्कोऽश्वमारकैः ।
वक्रीकृतशिवामांसविषैस्सह समीरहा ॥ ७७ ॥

निर्गुंडी, एरंड, सेहुंड, धतूरा और कनेर का चूर्ण, हड़ की मींगी और विष का अर्क वातनाशक है । ७७ ।

गुडूच्यर्कः शुण्ठियुक्तो वातरक्तहरः परः ।
वत्सादन्युद्भवार्को वा पीतो गुग्गुलुसंयुतः ॥ ७८ ॥

गुर्च और सोंठ का अर्क अथवा केवल गुर्च का अर्क गुग्गुल के साथ पीने से वातरक्तरोग नष्ट हो जाता है । ७८ ।

ऊरुस्तम्भ की औषध

त्रिफलाग्रन्थिकव्योषभवमर्कं समाक्षिकम् ।
ऊरुस्तम्भविनाशाय समूत्रं वा पुरार्ककम् ॥ ७९ ॥

त्रिफला, पिपलामूल और त्रिकुटा का अर्क शहद अथवा गोमूत्र के साथ पीने से ऊरुस्तम्भरोग नष्ट हो जाता है । ७९ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आमवात की औषध

शटी शुण्ठी शिवासोग्रादेवाह्वातिविषा स्मृता ।
आसामर्कं पिबेदामवाते रूक्षे च भक्षयेत् ॥ ८० ॥

कचूर, सोंठ, हड़, बच, देवदारु और अतीस का अर्क पीने से आमवातरोग नष्ट हो जाता है और शरीर का रूखापन जाता रहता है ८०

पित्तरोग की औषध

अर्कस्तु शतपत्र्या वा सेवन्त्या द्राक्षजोऽपि वा ।
चन्दनोशीरजो वापि हन्यात्पित्तभवान् गदान् ८१ ॥

कमलिनी, सेवती, गुलाब, दाख, चन्दन और खस का अर्क पित्त के विकार से उत्पन्न रोगों को नष्ट कर देता है । ८१ ।

वमन, विरेचन और कफरोग की औषध

वचार्को वमनं हन्ति त्रिविदर्को विरेचनम् ।
तुम्बुरार्कः पाचनेन कफरोगान्न संशयः ॥ ८२ ॥

वच का अर्क पीने से वमन शान्त होता है, निसोथ का अर्क विरेचन है और धनियाँ का अर्क गरम करके पीने से कफ के विकार शान्त हो जाते हैं । ८२ ।

साध्यासाध्य शूल की औषध

अश्वविष्ठाभवश्चार्को भृष्टहिङ्गुसमन्वितः ।
तत्कालं हरते शूलं साध्यासाध्यं न संशयः ॥८३॥

घोड़े की लीद का अर्क, भूनी हुई हींग के साथ पीने से क्षण भर में साध्य अथवा असाध्य शूल नष्ट हो जाता है । ८३ ।

पक्तिशूल की औषध

त्रिवृदेरण्डदन्तीनामर्केणैव विरेचनम् ।
निम्बार्कः कटुतुम्ब्यर्कः पक्तिशूलहरास्त्रयः ॥ ८४ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

निसोथ, एरंड और वज्रदन्ती का अर्क पीने से दस्त होने लगते हैं। नीम और कड़ुई तुम्बी का अर्क पीने से तीनों प्रकार के पक्तिशूल दूर हो जाते हैं। ८४।

उदावर्त रोग की औषध

सव्योषं पिप्पलीमूलं त्रिवृद्दन्ती च चित्रकम्।
एतदर्कं सहगुडैरुदावर्त्तविनाशनम्॥ ८५॥

त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपल), पिपलामूल, निसोथ, वज्रदन्ती और चीत इन सबका अर्क गुड़ के साथ पीने से उदावर्त शूल दूर हो जाता है। ८५।

अफारारोग की औषध

त्रिवृत्कृष्णाहरीतक्यो द्विचतुःपञ्चभागिकाः।
गुडयुक्तश्चैतदर्को हन्त्याध्मानं न संशयः॥८६॥

निसोथ दो भाग, पीपल चार भाग और हड़ पाँच भाग, इनके अर्क में गुड़ मिलाकर पीने से अफारारोग नष्ट हो जाता है। ८६।

हृद्रोग की औषध

हरीतकीवचाशस्त्रापिप्पलीनागरोद्भवः।
शटीपुष्करमूलोत्थश्चार्को हृद्रोगनाशनः॥ ८७॥

हड़, वच, पिप्पली और सोंठ का अर्क अथवा कचूर और पुहकरमूल का अर्क हृदयरोग को दूर करता है। ८७।

गुल्मरोग की औषध

कुमारिकार्कः सरसः सर्वगुल्मविनाशनः।
दुग्धशुक्तिभवार्कं वा भक्षयेद्वा गुडान्वितम्॥८८॥

घीकुवांर का अर्क उसी के रस के साथ अथवा दूध और सीप का अर्क गुड़ के साथ पीने से सब प्रकार के गुल्मरोग नष्ट हो जाते हैं। ८८।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रक्तगुल्म की औषध

पलाशवज्रशिखरीचिञ्चार्कतिलनालजाः ।
यवजास्सर्जिकाचेति क्षारार्को रक्तगुल्मनुत् ॥ ८६ ॥

पलाश, सेहुंड, अपामार्ग, इमली, मदार, तिल के नाल, जवाखार और सज्जी का अर्क पीने से रक्तगुल्मरोग नष्ट हो जाता है । ८९ ।

प्लीहा की औषध

समुद्रशुक्तिजार्को वा पिप्पल्यर्कः सदुग्धकः ।
अर्कार्को वा सलवणः प्लीहरोगविनाशनः ॥ ९० ॥

समुद्र की सीपी का अर्क अथवा दूध के साथ पिप्पली का अर्क अथवा नमक के साथ मदार का अर्क पीने से प्लीहा रोग नष्ट हो जाता है । ९० ।

यकृत् की औषध

कृष्णाविडसमुद्भूतश्चार्कः क्षीरान्वितोपि वा ।
पूतीकरञ्जजोऽर्को वा यकृच्छूलविनाशनः ॥ ९१ ॥

पिप्पली और विड लवण का अर्क दूध के साथ अथवा पूतीकरंज का अर्क सेवन करने से यकृत् रोग नष्ट होता है । ९१ ।

पुनर्नवा शातला च हरिद्रा च कुमारिका ।
एषामर्केण कोष्णेन स्वेदः पानं च शोथहृत् ॥९२॥

पुनर्नवा, शातला, हल्दी और घीकुवार, इनका अर्क कुछ गरम पीने से शोथरोग दूर हो जाता है । ९२ ।

मूत्रकृच्छ्र की औषध

आरग्वधो दर्भकाशपथ्याधात्रीत्रिकण्टकः ।
यवासगिरिभेदार्कः सक्षौद्रो मूत्रकृच्छ्रहा ॥ ९३ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अमलतास, कुश, कास, हड़, आँवला, गोखुरू, जवासा और पाषाणभेद, इनका अर्क शहद के साथ पीने से मूत्रकृच्छ्र रोग दूर होता है। ९३।

मूत्राघात की औषध

कुशकासबलामूलनलेक्ष्वर्कः सितायुतः।
धान्यागोक्षुरजोऽर्को वा ससितो मूत्रघातहा॥ ९४॥

कुश, कास, बरियारा की जड़, नरकट और ईख, इनके अर्क में मिश्री मिलाकर अथवा धनिया और गोखुरू के अर्क में मिश्री मिलाकर पीने से मूत्राघात रोग नष्ट हो जाता है। ९४।

अश्मरी रोग की औषध

कूष्माण्डार्को यवक्षारहिङ्गुयुक् चाश्मरीप्रणुत्।

पेठा के अर्क में जवाखार और हींग मिलाकर पीने से अश्मरी रोग दूर हो जाता है।

प्रमेह रोग की औषध

शरपुङ्खाक्षारमूत्रभवोऽर्कः शर्करां हरेत्॥ ९५॥

सरफोंका का खार गोमूत्र द्वारा बनाये हुए अर्क में शक्कर मिलाकर पीने से शर्करामूत्र (प्रमेह) को दूर कर देता है। ९५।

गडूच्यर्कः सितायुक्तो गोक्षुरार्कोऽथवा हरेत्।
स्तम्भिन्यर्कोऽथवा मेहं मण्डलादुग्धसेविनः॥ ९६॥

गुर्च का अर्क मिश्री के साथ अथवा गोखुरू का अर्क अथवा स्तम्भिनी का अर्क प्रमेह रोग को दूर करता है। परन्तु इन औषधों को एक मंडल अर्थात् १५ दिन तक पिये और उतने दिनों तक दूध भी पीना चाहिए। ९६।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पिप्पल्यर्को मधुयुतो महामेहविनाशनः ।

पिप्पली का अर्क शहद के साथ पीने से महामेह रोग नष्ट होता है ।

शरीर की दुर्गन्ध दूर करने की औषध

बिल्वपत्रभवोऽर्कश्च देहदौर्गन्ध्यनाशनः ॥ ९७ ॥

बेलपत्र का अर्क पीने से शरीर की दुर्गन्ध नष्ट होती है । ९७ ।

पौष्टिक औषध

हयगन्धा सगोक्षूरा सत्वचावटकाण्डकैः ।
निष्काशितो वा तन्मांसैरर्कः स्थौल्यकरः परः ९८

असगंध, गोखुरू, तज और बरगद की जटाओं का अर्क अथवा मांस का अर्क पीने से शरीर पुष्ट हो जाता है । ९८ ।

कुष्ठ रोग की औषध

मञ्जिष्ठा त्रिफला तिक्ता वचा दारुनिशामृता ।
निम्ब एभिः कृतोऽर्कस्तु पानात्कुष्ठं विनाशयेत् ९९

मँजीठ, त्रिफला, कुटकी, वच, देवदारु, हल्दी, गुर्च और नीम का अर्क पीने से कुष्ठ रोग नष्ट हो जाता है । ९९ ।

परिसिध्म रोग की औषध

सर्षपा रजनी कुष्ठं मूलबीजं प्रियङ्गवः ।
काश्मीरी चैतदर्कस्तु परिसिध्मं विनाशयेत् १००

सरसों, हल्दी, कूट, मूली के बीज, प्रियंगु और कुम्भेर, इनका अर्क पीने से परिसिध्म (सेहुवाँ) नष्ट हो जाता है । १०० ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पामा रोग की औषध

मञ्जिष्ठात्रिफलालाक्षालाङ्गलीरात्रिगन्धकाः ।
समैस्तिलैश्च गोधूमैर्हरेत्पामां महद्रुजम् ॥ १०१ ॥

मँजीठ, त्रिफला, लाख, करियारी, हल्दी और गन्धक, इन सबके बराबर तिल और गेहूँ लेकर इनका अर्क निकाले। यह अर्क पामारोग को दूर करता है । १०१ ।

दाद की औषध

कुष्ठकृमिजदद्रुघ्ननिशासैन्धवसर्षपाः ।
आम्रास्थिचैतदर्कोऽयं लेपाद्दद्रुं विनाशयेत् ॥ १०२ ॥

कूट, लाख, पँवार के बीज, हल्दी, सेंधानमक, सरसों और आम की गुठली का अर्क लेप करने से दाद अच्छा हो जाता है । १०२ ।

इति पाँचवाँ शतक समाप्त ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छठा शतक

गलगण्ड की औषध

श्वेता पराजितामूलजातोऽर्कः सर्पिषा सह ।
गलगण्डं हरेदेव मण्डलापथ्यभोजने ॥ १ ॥

श्वेत विष्णुकान्ता की जड़ का अर्क घी के साथ पन्द्रह दिन तक पीने से और पथ्य भोजन करने से गलगंड रोग नष्ट हो जाता है। १।

गण्डमाला की औषध

काञ्चनारत्वचोऽर्कस्तु शुण्ठीचूर्णेन संयुतः ।
माक्षिकाढ्यो गण्डमालां बहुकालोद्भवामपि ॥ २ ॥

कचनार की छाल का अर्क सोंठ और शहद के साथ सेवन करने से पुराना भी गंडमाला रोग नष्ट हो जाता है । २ ।

ग्रन्थिरोग की औषध

सर्जिकामूलकक्षारजातः शङ्खस्य चूर्णयुक् ।
कृतस्तेन प्रलेपश्चेद् ग्रन्थिं हन्ति न संशयः ॥ ३ ॥

सज्जी और मूली के खार का अर्क शंख के चूर्ण के साथ लेप करने से ग्रंथिरोग दूर हो जाता है । ३ ।

अर्बुद रोग की औषध

हरिद्रालोध्रपतंगगृहधूममनःशिलाः ।
मधुप्रगाढश्चार्कस्तु मेदोऽर्बुदहरः परः ॥ ४ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हल्दी, लोध, पतंग, धमासा और मैनसिल में शहद मिलाकर अर्क निकाले। यह अर्क मेद और अर्बुद रोग को नष्ट करता है। ४।

वटदुग्धप्रगाढे च सप्ताहं कुष्ठरोमके।
तदर्कस्य प्रलेपेन हरेदस्यार्बुदं क्षणात् ॥ ५ ॥

कूट और साँभर नमक को सात दिन तक बरगद के दूध में भिगोकर उसका अर्क निकाले। इस अर्क का लेप करने से क्षण भर में अर्बुद रोग नष्ट हो जाता है। ५।

श्लीपद रोग की औषध

धत्तूरैरण्डनिर्गुण्डीवर्षाभूशिग्रुमूलजैः।
अर्कैः पिष्टास्सर्षपास्तु प्रलेपाच्छ्लीपदापहाः ॥ ६ ॥

धतूरा, एरंड, सँभालू, पुनर्नवा और सहिंजन की जड़ के अर्क में सरसों पीसकर लेप करने से श्लीपद (फीलपाँव) रोग नष्ट हो जाता है। ६।

विद्रधि रोग की औषध

यवगोधूममुद्गानां पिष्टं सम्यग्विलोडितम्।
विषमुष्टिभवार्केण विलेपाद्विद्रधिप्रणुत् ॥ ७ ॥

बकायन के अर्क में जौ, गेहूँ और मूँग को पीसकर लेप करने से विद्रधि रोग नष्ट हो जाता है। ७।

क्षौद्रजातेन मद्येन क्षालयेत्पक्वविद्रधिम्।
अहिफेनाक्षफेनाभ्यां पूरणाद्विद्रधिं हरेत् ॥ ८ ॥

शहद की मदिरा से धोकर अफीम और अक्षफेन भरने से पका हुआ विद्रधि रोग नष्ट हो जाता है। ८।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वात के शोथ की औषध

वातघ्नौषधजातार्कैस्तन्मांसार्कैस्तथा घृतैः ।
उष्णैः संसेचयेच्छोथं काञ्जिकार्केण वातजम् ॥ ६ ॥

वातनाशक औषधों का अर्क, वातनाशक मांस का अर्क, वातनाशक घी॰ अथवा काँजी का अर्क गरम करके लेप करने से वात से उत्पन्न शोथ दूर हो जाता है । ६ ।

पित्तरक्त के शोथ की औषध

पित्तरक्ताभिघातोत्थं शोथं सिञ्चेच्च शीतलैः ।
क्षीराज्यमधुखण्डेक्षुजातार्कैर्मालतीभवैः ॥ १० ॥

ठंढा दूध, घी, शहद, मिश्री, ईख और मालती का अर्क लेप करने से पित्तरक्त और अभिघात से उत्पन्न शोथ नष्ट हो जाता है । १० ।

कफज शोथ की औषध

कफघ्नौषधसंजातैरर्कैरुष्णैश्च सेचयेत् ।
तैलदुग्धाम्बुमूत्रैर्वा शोथं श्लेष्मसमुद्भवम् ॥ ११ ॥

कफ का नाश करनेवाली औषधों का गरम-गरम अर्क अथवा तेल, दूध, पानी और गोमूत्र को गरम करके लेप करने से कफ से उत्पन्न शोथ दूर हो जाता है । ११ ।

व्रणशोथ की औषध

विषोपविषसंजातैरर्कैः कोष्णैस्तु सेचयेत् ।
वारुण्या वा खाखसार्कैर्व्रणशोथः क्षयं व्रजेत् ॥ १२ ॥

विषों और उपविषों का अर्क, वारुणी मदिरा अथवा खसखस का अर्क लेप करने से व्रणशोथ दूर हो जाता है । १२ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

न प्रशाम्यति यः शोथः प्रलेपादिविधानतः ।
द्रव्याणि पाचनीयानि दद्यात्तत्रोपनाहके ॥ १३ ॥

जो शोथ लेप आदि करने से अच्छा न हो तो उसको दूर करने के लिए पाचन औषधों का प्रयोग करना चाहिए । १३ ।

फोड़ा पकाने की औषध

शणमूलकशिग्रूणां मूलानि तिलसर्षपाः ।
अतसीसक्तवः किञ्चिदुष्णं देयं च पाचनम् ॥ १४ ॥

सन की जड़, मूली, सहिंजन की जड़, तिल, सरसों और अलसी का सत्तू गरम करके बाँधने से फोड़ा पक जाता है । १४ ।

अन्तःपूयेषु वक्रेषु तथैवोत्सङ्गवत्स्वपि ।
गतिमत्स्वपि रोगेषु भेदनं संप्रयुज्यते ॥ १५ ॥

जिस फोड़े के भीतर मवाद पैदा होगया हो, जो टेढ़ा या ऊँचा हो अथवा जो आठों पहर बहता रहता हो ऐसे फोड़ों का चीरना ही अच्छा है । १५ ।

बद्धमूलातिपङ्केन तुवरीछिद्रिकानली ।
व्रणसंयोगिनी शङ्खद्रावः पूर्यातु यामकम् ॥ १६ ॥
तुवरीसदृशच्छिद्रं यामेनैकेन जायते ।
विना शस्त्रं शस्त्रकर्मकरमेतदपीडनम् ॥ १७ ॥

जो फोड़ा पक गया हो और फूटता न हो, उस पर एक अंगुल ऊँची पीली मिट्टी सानकर लगा दे । परन्तु अरहर के बराबर फोड़े का मुँह खुला रहने दे । एक ताँबे की नली में शंखद्राव भरकर उस खुली हुई जगह में लगावे और उसे एक पहर तक लगी रहने दे । ऐसा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

करने से उस स्थान पर छिद्र हो जायगा। इस उपाय से पीड़ा भी नहीं होती और बिना शस्त्र के प्रयोग के ही फोड़ा फूट जाता है। १६-१७।

अविशुद्धव्रणस्य स्यादर्कः शुचिकरः परः।
पटोलनिम्बपत्रोत्थः सर्वत्रैव प्रयुज्यते ॥ १८ ॥

परवल और नीम के पत्तों का अर्क लेप करने से व्रण शुद्ध होकर भर जाता है। १८।

अश्वगन्धाजहालोध्रकट्फलं मधुयष्टिका।
समङ्गाधातकीपुष्पजातोऽर्को व्रणरोपणः ॥ १९ ॥

असगंध, कौंच, लोध, कायफल, मुलेठी, समंगा और धाय के फूल, इन सब औषधों का अर्क लेप करने से व्रण बहुत शीघ्र भर जाता है। १९।

खड्गादिच्छिन्नगात्रस्य मद्येनापूरितो व्रणः।
तथा नागबलार्केण तीव्रां वा वेदनां हरेत् ॥ २० ॥

तलवार आदि का घाव मदिरा का लेप करने से शीघ्र भर जाता है और नागबला (ककही या गँगेरन) का अर्क लेप करने से उसकी पीड़ा दूर होती है। २०।

जातीपटोलनिम्बानां नक्तमालस्य पल्लवाः।
सिक्थं च मधुकं कुष्ठं द्वे निशे कटुरोहिणी ॥ २१ ॥
मञ्जिष्ठा पद्मकं पथ्या लोध्रकं नीलमुत्पलम्।
नक्तमालफलं तुल्यमहिफेनं च सारिवा ॥ २२ ॥
एतानि समभागानि कल्कीकृत्य प्रयत्नतः।
गोमूत्रेण तदर्कं तु दशाङ्गादिकवासितम् ॥ २३ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विलेपात्तत्क्षणादेव हरेत्सर्वव्रणायनम् ।
विषव्रणं च विस्फोटं विसर्पं कीटदंशितम् ॥ २४ ॥
दद्रुं शस्त्रप्रहारं च दग्धं विद्धं व्रणं तथा ।
नखदन्तं क्षतं हन्ति दुष्टमांसं च कर्षयेत् ॥ २५ ॥

चमेली, परवल, नीम और करंज के पत्तों का अर्क तथा मोम, मुलेठी, कूट, हल्दी, दारुहल्दी, कुटकी, मँजीठ, पद्माख, हड़, लोध, नीलकमल, करंज के बीज, तूतिया, अफीम और अनन्तमूल, इन सब औषधों को बराबर लेकर कूटकर और गोमूत्र मिलाकर अर्क निकाले। फिर दशाङ्ग आदि धूप से सुवासित करे। इस अर्क का लेप करने से सब प्रकार के व्रण अच्छे हो जाते हैं। जहरीला फोड़ा, विस्फोटक, विसर्प, कीड़ों के काटने का व्रण, दाद, शस्त्र लगने का व्रण, आग से जल जाने का व्रण तथा नख और दाँतों का घाव, ये सब इस अर्क का लेप करने से अच्छे हो जाते हैं। बिगड़ा हुआ मांस निकल जाता है। २१—२५।

कटुवल्ल्याः कुमार्या वा कोष्णेनार्केण सेचयेत् ।
अग्निदग्धव्रणांस्तस्मात्सर्वे चर्मप्ररोहणम् ॥ २६ ॥

गजपीपल अथवा घीकुवार का अर्क गरम करके लेप करने से आग से जला हुआ घाव अच्छा हो जाता है। २६।

टूटी हड्डी की औषध

अस्थिसंहारकं लाक्षागोधूमार्जुनसाधितम् ।
पिबेदर्कं सन्धिभग्ने सघृतं वा यथोचितम् ॥ २७ ॥

हरसिंहार, लाख, गेहूँ और अर्जुन वृक्ष का अर्क घी के साथ पीने से संधिभग्न को लाभ पहुँचाता है। २७।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रक्तविकार की औषध

हरिद्राक्षौद्रतुवरीरक्तचन्दनदार्विकाः ।
गुडेन साधितं मद्यं मृतरक्तं व्यपोहति ॥ २८ ॥

हल्दी, शहद, अरहर, लालचन्दन और दारुहल्दी, इन औषधों में गुड़ मिलाकर मदिरा बनावे। इसके पीने से मरा हुआ खून निकल जाता है। २८।

कोष्ठशुद्धि की औषध

कुक्कुटं कृष्णवर्णं तु जलेऽष्टगुणिते पचेत् ।
सरसं तं विपक्वं च दद्यात्कोष्ठप्रशान्तये ॥ २९ ॥

काले रंग का मुर्ग अठगुने पानी में पकाकर उसका अर्क निकाले। इस अर्क के पीने से कोष्ठ रोग दूर हो जाते हैं। २९।

नासूर की औषध

स्नुह्यर्कदुग्धदार्वीभिर्मद्यं क्षौद्रेण साधयेत् ।
वारंवारं भाविता च वर्त्तिर्नाडीव्रणान्तकृत् ॥ ३० ॥

सेहुँड़ और मदार का दूध, दारुहल्दी तथा शहद, इन सबकी मदिरा बनाकर उसमें बत्ती भिगोकर रखने से नासूर अच्छा हो जाता है। ३०।

भगन्दर रोग की औषध

शुण्ठी च वटपत्राणि जातीपत्रामृता तथा ।
सैन्धवं तक्रनिक्षिप्तं तदर्कहृतु भगन्दरे ॥ ३१ ॥

सोंठ, बरगद के पत्ते, चमेली के पत्ते, गुर्च और सेंधानमक, इन सब औषधों को मट्ठे में भिगोकर इनका अर्क निकाल ले। इसके पीने से भगंदर रोग नष्ट होता है। ३१।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उपदंश की औषध

लोधजम्बूवटाशिवार्जुनरात्रिसमुद्भवः ।
अर्कः पानादितो हन्यादुपदंशं नरस्त्रियोः ॥ ३२ ॥

लोध, जामुन की छाल, बरगद की जटाएँ, हड़, अर्जुन की छाल और हल्दी का अर्क पीने से पुरुषों और स्त्रियों का उपदंश रोग नष्ट होता है। ३२।

शूक रोग की औषध

अश्वगन्धावरीकुष्ठमिसिसिंहीबलान्वितम् ।
संशोध्य दुग्धेन तदा अर्कः शूकगदापहः ॥ ३३ ॥

असगंध, शतावरी, कूट, सौंफ, बनभाँटा और बरियारा, इन सब औषधों को दूध में भिगोकर अर्क निकाले। यह अर्क शूक रोग को नष्ट करता है। ३३।

विसर्प रोग की औषध

यष्टीशिरीषतगरमांस्येलाश्चन्दनं शिला ।
आज्यं च बालकं कुष्ठमर्कः सेकाद्विसर्पजित् ॥ ३४ ॥

मुलेंठी, सिरस, तगर, जटामांसी, इलायची, चन्दन, मैनसिल, घी, नेत्रबाला और कूट, इनका अर्क लेप करने से विसर्प रोग नष्ट हो जाता है। ३४।

स्नायुरोग की औषध

निर्गुण्ड्यर्को गव्यहव्ययुक्तो वा सुषवीभवः ।
शीतलार्को हरेच्छीघ्रं स्नायुरोगं न संशयः ॥ ३५ ॥

सँभालू का अर्क गाय के घी के साथ अथवा जीरा का अर्क ठंढा करके पीने से स्नायुरोग शीघ्र दूर हो जाता है। ३५।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विस्फोटक की औषध

सप्तदिनं तण्डुलाम्बुक्लिन्नादैन्द्रवस्य तु ।
विस्फोटकान्निहन्त्येव अर्कोऽयं लेपसेवितः ॥३६॥

इन्द्रजौ को सात दिन तक चावलों के जल में भिगो रक्खे फिर उसका अर्क निकाले। इस अर्क का लेप करने से विस्फोटक रोग दूर हो जाता है। ३६।

विस्फोटक के दाह की औषध

उत्पलं चन्दनं लोध्रमुशीरं सारिवाद्वयम् ।
एतदर्को धावनेन स्फोटदाहार्त्तिनाशनः ॥ ३७ ॥

कमल, चन्दन, लोध, खस और दोनों सारिवा, इनके अर्क से धोने से विस्फोटक रोग का दाह दूर हो जाता है। ३७।

फिरंग रोग की औषध

शङ्खद्रावार्कके क्षिप्तः पारदो भस्मतां व्रजेत् ।
वल्लं गुडयुतं खादेत्फिरङ्गविनिवृत्तये ॥ ३८ ॥

शंखद्राव में पारा छोड़कर उसे भस्म करले। वह तीन रत्ती भस्म गुड़ के साथ खाने से फिरंग रोग नष्ट हो जाता है। ३८।

अपक्वं पारदं भुक्त्वा द्रोणपुष्पार्कसेवनात् ।
लेपनात्स प्रयात्येव फिरङ्गो नात्र संशयः ॥ ३९ ॥

द्रोणपुष्पी (गूमा) के अर्क में विना शोधा हुआ पारा मिलाकर लेप करने से फिरंग रोग निस्सन्देह दूर हो जाता है। ३९।

पलाशपत्रवृन्तानां सप्ताहं तस्य सेवनात् ।
फिरङ्गो याति त्वरितं साध्यासाध्यो न संशयः॥४०॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ढाक के पत्तों की ढेपी का अर्क सात दिन सेवन करने से साध्य या असाध्य कैसा ही फिरंग रोग हो, शीघ्र नष्ट हो जाता है। ४०।

मसूरिका रोग की औषध

सुहिमोहिलमोचिकार्कः समसूरिकः कौतुकेन पीतः।
सकलं मसूरिकोपं गाढं जातं विनाशयेत्क्षिप्रम् ४१॥

हरहुर का अर्क मसूर के साथ निकाला हुआ सब प्रकार के मसूरिका रोग को दूर करता है। ४१।

निम्बः पर्पटकः पाठा पटोलः कटुरोहिणी।
चन्दने द्वे उशीरं च धात्री वासा दुरालभा॥ ४२॥
एतदर्कः सितायुक्तो मसूरीमात्रनाशनः।
मुखे कण्ठे व्रणे जाते गण्डूषार्थं प्रयुज्यते॥ ४३॥

नीम, पित्तपापड़ा, पाढ़र, परवल, कुटकी, दोनों चन्दन, खस, आँवला, रूसा और जवासा इनका अर्क मिश्री के साथ पीने से मसूरिका रोग नष्ट हो जाता है। मुख और गले में व्रण हो जाने पर इस अर्क का कुल्ला करना चाहिए। ४२–४३।

गोमयार्कस्य लेपेन पानेन विलयं व्रजेत्।
गोक्षुरार्कं पिबेदाद्ये ज्वरे च दधिसर्पिषा॥ ४४॥

गाय के गोबर का अर्क लेप करने अथवा पीने से मसूरिका रोग नष्ट हो जाता है अथवा पहिले ही ज्वर आने के समय गोखुरू का अर्क दही और घी के साथ पिये। ४४।

रावण उवाच

आदौ कृतयुगे ब्रह्मा महेशं वाक्यमब्रवीत्।
तवाज्ञया मया देव सृष्टा नानाविधाः प्रजाः॥ ४५॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

समस्ता भूस्तु तैर्व्याप्ता भवन्त्यन्येऽपि तद्विधाः ।
कामेन यान्ति भार्यासु पुनः सृष्टः प्रवर्त्तते ॥ ४६ ॥
गजैरश्वैर्मनुष्याद्यैर्व्याप्तेयं तु धराखिला ।
शीघ्रं यास्यति पाताले तत्र यत्नो विधीयताम् ॥४७॥

रावण ने कहा—हे प्रिये ! सत्ययुग में एक बार ब्रह्मा ने शिवजी से कहा—हे देव, मैंने आपकी आज्ञा से अनेक प्रकार के प्राणी उत्पन्न किये हैं। सारी पृथ्वी उनसे भर गई और लगातार उनकी वृद्धि हो रही है । वे स्त्रियों के साथ भोग करके सन्तान उत्पन्न करते हैं। मनुष्य और हाथी-घोड़े आदि से पृथिवी पर इतना बोझ हो गया है कि वह अब पाताल में धँसी जा रही है । हे महाराज, आप शीघ्र उसका कोई उपाय कीजिए । ४५—४७ ।

एवं ब्रह्मवचः श्रुत्वा शूलमैक्षन्महेश्वरः ।
ततो जज्ञे पुमानेको भीमो घोरपराक्रमः ॥ ४८ ॥
रक्तान्तलोचनः क्रोधी वडवाग्नियुतो नरः ।
ऊर्ध्वकेशो ललज्जिह्वः कृताक्रोशोऽजितेन्द्रियः॥४९॥
तं दृष्ट्वा तु महादेवः पार्वतीं वाक्यमब्रवीत् ।
जात एव महाक्रूरः सर्वसंहारकारकः ॥ ५० ॥
एतस्य मोहनार्थाय देहि भार्यां यथोचिताम् ।
एवं शिववचः श्रुत्वा स्वकं पृष्ठं ददर्श ह ॥ ५१ ॥

ब्रह्मा के ये वचन सुनकर महादेवजी ने अपने त्रिशूल की ओर देखा । उनके देखते ही त्रिशूल से एक महान् पराक्रमी भयानक पुरुष उत्पन्न हो गया। वह महाक्रोधी था। उसकी लाल-लाल आँखें, जीभ मुँह से बाहर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

निकली हुई और उसके बाल खड़े थे। वह इतना तेजस्वी था, मानो अपने साथ बड़वाग्नि लिये हुए है। उस अजितेन्द्रिय पुरुष को देखकर महादेव ने पार्वती से कहा—देखो, यह तो उत्पन्न होते ही महाक्रूर और सबका संहार करनेवाला जान पड़ता है। तुम इसको मोहित करने के लिए इसके योग्य भार्या उत्पन्न करो। शिवजी की यह बात सुनकर पार्वती ने अपनी पीठ की ओर देखा। ४८—५१।

ततो देवी समुत्पन्ना योच्यते भवितव्यता।
रूपलावण्यसम्पन्ना पीनोन्नतपयोधरा ॥ ५२ ॥
मारणास्त्रं मोहनास्त्रं कराभ्यां दधती शुभा।
श्वेतवस्त्रपरीधाना लज्जाप्रावृत्तलोचना ॥ ५३ ॥

उसी समय एक देवी उत्पन्न हो गई; जिसको भवितव्यता कहते हैं। उस रूप-लावण्यवती स्त्री के मोटे और ऊँचे स्तन थे। वह अपने हाथों में मारण और मोहन अस्त्र लिये हुए थी। वह सफ़ेद कपड़े पहने और लज्जा से आँखें नीचे किये हुए थी। ५२—५३।

सा प्रणम्य तदा देवीं शिवयोरग्रतः स्थिता।
शस्त्रभारभराक्रान्तकालचित्तविमोहिनी ॥ ५४ ॥
दृष्ट्वा तां पार्वती प्राह ममाज्ञा क्रियतामिति।
कालस्य भव पत्नी त्वमतश्चित्तं विमोहय ॥ ५५ ॥

वह शिव और पार्वती को प्रणाम करके उनके सामने खड़ी होगई। शस्त्रों के भार से लदी हुई, काल के चित्त को मोहनेवाली उस स्त्री को देखकर पार्वती ने उससे कहा—तुम हमारी आज्ञा मानकर इस काल की पत्नी होकर, इसका मन मोहित करो। ५४—५५।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

याचयस्व वरं श्रेष्ठं कुरु कार्यं प्रजापतेः ।
ततः प्रीता तु सा प्राह देव्यग्रे प्रणता स्थिता ५६॥

भवितव्यतोवाच

मयाधीनमिदं सर्वं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ।
कालश्चायं मयाधीनःकोऽपि मां न च वेत्स्यति५७॥

तुम इसे अपना पति मानो और ब्रह्मा का कार्य सिद्ध करो । पार्वती की यह बात सुनकर वह स्त्री बड़ी प्रसन्न हुई और उनको प्रणाम करके उनसे कहने लगी—हे देवि, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सम्पूर्ण जगत् और यह काल, सब मेरे अधीन हैं, किन्तु मुझे कोई नहीं जानता। ५६–५७ ।

आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं विष्णौ देव्यां च शूलिनि ।
दृष्टिर्मम समैवास्ति मत्स्वरूपाविदस्त्विमे ॥ ५८ ॥

ब्रह्मा से लेकर घास-फूस तक, विष्णु, शिव और पार्वती सबको मैं समान दृष्टि से देखती हूँ, किन्तु वे मेरे रूप को नहीं जानते हैं।५८।

एवमुक्त्वा भवान्या सा पाणिग्रहमचीकरत् ।
कृतकृत्योऽभवत्काल उद्वाह्य भवितव्यताम् ॥५६॥

इसके बाद पार्वती की आज्ञा से उस स्त्री ने काल के साथ अपना विवाह कर लिया। काल भी उसे पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ । ५९ ।

कृतोद्वाहं तु तं ज्ञात्वा विधाता वाक्यमब्रवीत् ।
शीघ्रमागम्यतां स्वामिन् सृष्टिः संहार्यतामिति६०॥

ब्रह्मा ने जब जाना कि इन दोनों का विवाह हो गया है तब उन्होंने काल से कहा—हे स्वामिन्, शीघ्र आइए और सृष्टि का संहार कीजिए । ६० ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ततस्तु भृत्याः कालेन रचिताः स्वस्य तेजसा ।
भवितव्यतया सार्द्धं ततः स्वस्वामितेजसा ॥ ६१ ॥
शोषो ज्वरः पाण्डुकासश्वासपानात्ययादिकाः ।
अभ्यन्तरा गिरिचराः शतशस्तेन निर्मिताः ॥६२॥

ब्रह्मा की यह बात सुनकर काल ने भवितव्यता के साथ अपने तेज के प्रभाव से बहुत-से सेवक उत्पन्न किये । उसने अपने स्वामी के तेज से शोष, ज्वर, पाण्डु, कास, श्वास और पानात्यय आदि भीतर तथा बाहर विचरनेवाले सैकड़ों सेवक उत्पन्न कर दिये । ६१–६२ ।

सर्पव्याघ्रवृकाः सिंहवृश्चिका राक्षसा गजाः ।
भूतप्रेतपिशाचाश्च बाह्यस्थाः परिचारकाः ॥ ६३॥
तस्याभ्यन्तरशक्त्या च कामिनी मोहिनी तृषा ।
लिप्साहङ्कृत्यबुद्ध्याधिनिद्राद्वेषभयादिकाः ॥६४॥
ग्रहणी कामला सूची छर्दिमूर्च्छाश्मरीतृषाः ।
डाकिनी शाकिनी घोरा हत्यैता बाह्यहेतुकाः ॥ ६५ ॥
एवं परिवृतं दृष्ट्वा स्वसैन्यमविचारयत् ।
मत्तः कोऽस्त्यधिको लोके न जाने भवितव्यताम् ६६

साँप, बाघ, भेड़िया, सिंह, बिच्छू, राक्षस, हाथी, भूत, प्रेत, पिशाच आदि बाहर विचरनेवाले सेवक उत्पन्न किये । उसकी अभ्यन्तर शक्ति से कामिनी, मोहिनी, तृषा, लोभ, अहंकार, अबुद्धि, आधि (मानसिक पीड़ा), निद्रा, द्वेष और भय आदि भीतर रहनेवाले सेवकों की तथा बाह्यशक्ति से संग्रहणी, कामला, विसूचिका,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वमन, मूर्च्छा, अश्मरी, तृषा, डाकिनी, शाकिनी, घोरा और हत्या की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार अपनी सेना तैयार करके काल ने अपने मन में सोचा कि संसार में मुझसे बढ़कर बलवान् दूसरा कोई नहीं है। मैं भवितव्यता को कुछ नहीं समझता। ६३–६६।

ब्रह्मविष्णुमहेशाद्या हननीया मयादितः।
एवं विधार्य मनसि महेशं हन्तुमुद्यतः॥ ६७॥

अब पहले ब्रह्मा, विष्णु और महेश आदि का संहार करना चाहिए। वह अपने मन में यह निश्चय करके शिवजी के पास जाकर उनको मारने को उद्यत हुआ। ६७।

तं दृष्ट्वा तु महेशेन शक्तिरेका प्रदर्शिता।
अतिघोरा विरूपाक्षी संकीर्णजघनोदरा॥ ६८॥
दन्दह्यमाना कोपेन ज्वलयन्ती दिशो दश।
तस्यास्तु दृष्टिपातेन कालः सर्वाङ्गपीडितः॥ ६९॥
तामेवाविविशुः सर्वे कः प्रभुः कश्च सेवकः।
बलिनः सर्व एव स्युः सेवका निर्बलस्य न॥ ७०॥
नानास्फोटैः परिवृतो दह्यमानो रुषाग्निना।
तस्येदृशीमवस्थां तु दृष्ट्वा दाहादयो गदाः॥ ७१॥
भग्नाहङ्कारकं दृष्ट्वा तं कालं भवितव्यता।
ईषद्विहस्य तं प्राह न ते साधुरहंकृतिः॥ ७२॥
मदधीनं जगत्सर्वं मदाज्ञा क्रियतां त्वया।
त्वया स्वतन्त्रतारम्भः कृतस्तेनेदृशी गतिः॥ ७३॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

एषा मदंशसम्भूता शीतला तां प्रसादय ।
अवश्यं तव साहाय्यं करिष्यति त्वयादृता ॥ ७४ ॥

काल को देखकर शिवजी ने उसे एक शक्ति दिखाई । उस भयानक शक्ति की जाँघें छोटी और पेट भारी था । वह अपने प्रचण्ड कोपानल से दसों दिशाओं को जलाने लगी । उसे देखते ही काल के सब अङ्ग पीड़ित हो गये । काल की यह दशा देखकर उसके सब सेवक उसी में प्रविष्ट हो गये । सेवक तो बलवान् का ही साथ देते हैं ; निर्बल का कौन सेवक ? उसको अनेक प्रकार के फोड़ों से युक्त और क्रोध की आग में जलते देखकर दाह आदि सब रोग उसी के शरीर में प्रविष्ट हो गये । काल के अहंकार को नष्ट हुआ देखकर भवितव्यता ने मुसकुराकर उससे कहा—तुम्हारा यह अहंकार अच्छा नहीं है । यह सम्पूर्ण जगत् मेरे अधीन है, अतएव तुम मेरी आज्ञा मानो । तुमने मेरी कुछ परवा न करके जो क्रोध किया है, इसी कारण तुम्हारी यह दशा हुई है । यह शक्ति मेरे अंश से उत्पन्न शीतला है, तुम इसे प्रसन्न करो । तुम इसका आदर करोगे तो यह अवश्य तुम्हारी सहायता करेगी । ६८—७४ ।

काल उवाच

वन्देऽहं शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बराम् ।
मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालंकृतमस्तकाम् ॥ ७५ ॥
वन्देऽहं शीतलां देवीं सर्वरोगभयापहाम् ।
यामासाद्य निवर्त्तेत विस्फोटकभयं महत् ॥ ७६ ॥

भवितव्यता की ये बातें सुनकर काल उस शक्ति की स्तुति करने लगा । उसने कहा—गधे पर सवार, दिशाओं के ही वस्त्र पहने, हाथ में झाड़ू और कलश लिये, सिर पर सूप रक्खे, सब रोग और भय हटाने-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वाली, जिसके दर्शन से महाभयानक विस्फोटक रोग का भय छूट जाता है, उस शीतला देवी को मैं नमस्कार करता हूँ। ७५–७६।

शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्दाहपीडितः।
विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥ ७७ ॥
शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगन्धगतस्य च।
प्रणष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवनौषधम् ॥ ७८ ॥
शीतले तनुजान् रोगान् नृणां हरसि दुस्तरान्।
विस्फोटकविशीर्णानां त्वमेकामृतवर्षिणी ॥ ७९ ॥
गलगण्डग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम्।
त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यान्ति संक्षयम् ॥ ८० ॥

दाह से पीड़ित जो मनुष्य शीतला का स्मरण करेगा उसके घर में विस्फोटक रोग न आवेगा। हे शीतले, ज्वर से पीड़ित, दुर्गन्ध में पड़े हुए और अन्धे मनुष्यों की संजीवनी औषध तुम्हीं हो। हे शीतले, मनुष्यों के शरीर में उत्पन्न बड़े कठिन रोगों का नाश करनेवाली तुम्हीं हो। विस्फोटक रोग से पीड़ित मनुष्यों पर अमृत की वर्षा तुम्हीं करती हो। इसके सिवा गलगण्ड आदि और भी जितने दारुण रोग हैं वे तुम्हारा नाम सुनते ही नष्ट हो जाते हैं। ७७–८०।

न मन्त्रं नौषधं तस्य पापरोगस्य विद्यते।
त्वमेका शीतले धात्री नान्यां पश्यामि देवताम् ८१

इस पाप रोग (विस्फोटक) का न तो कोई मन्त्र है और न कोई औषध है। हे शीतले, मैं तुम्हारे सिवा और किसी देवता को इससे रक्षा करनेवाला नहीं देखता हूँ। ८१।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मृणालतन्तुसदृशीं नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् ।
यस्त्वां संचिन्तयेद्देवि तस्य मृत्युर्न जायते ॥८२॥

हे देवि, तुम्हारे पेट के बीच में कमल की नाल के समान नाभि शोभायमान है । जो मनुष्य तुम्हारा स्मरण करेगा उसकी मृत्यु न होगी । ८२ ।

एवं स्तुता तदा देवी शीतला प्रीतमानसा ।
उवाच वाक्यं कालाय वरं वरय सत्वरम् ॥ ८३ ॥

इस प्रकार काल के स्तुति करने पर शीतला ने प्रसन्न होकर उससे कहा—जो तुम्हारी इच्छा हो, वर माँगो । ८३ ।

काल उवाच

अहो चाद्भुतमाहात्म्यं तव दृष्टं मयाधुना ।
पीडामपनय क्षिप्रं प्रहर्षं कुरु मे सदा ॥ ८४ ॥

काल ने कहा—हे देवि, मैंने आपका अद्भुत प्रभाव देखा । आप शीघ्र मेरी पीड़ा दूर करके मुझे सदा के लिए प्रसन्न कीजिए । ८४ ।

शीतलोवाच

एषा तव जगत्कर्त्री भार्येयं भवितव्यता ।
आज्ञयास्याः प्रवर्तन्ते ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥८५॥

शीतला ने कहा—तुम्हारी भार्या भवितव्यता संसार की सृष्टि करनेवाली है । ब्रह्मा, विष्णु और महेश इसकी आज्ञा का पालन करते हैं । ८५ ।

अहं त्वं च महेशाद्यास्ततो धन्यास्तु ते मताः ।
बुद्ध्या धीर्जायते सा या यादृशी भवितव्यता ८६

हम तुम और महेश आदि, सब इसी के प्रभाव से धन्य हुए हैं । बुद्धि जो कुछ निश्चय करती है वही यह भवितव्यता है । ८६ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सहायं ते करिष्यामि हरिष्यामि इमाः प्रजाः ।
उपोदकी तु या खादेदादावुष्णं ततः परम् ।
तं गर्भं भक्षयिष्यामि सापि चेद्दुष्टभुग्भवेत् ८७

मैं तुम्हारी सहायता करूँगी और प्रजा का विनाश करूँगी । जो रजस्वला स्त्री उष्ण और कुपथ्य भोजन करेगी उसका गर्भ मैं खा जाऊँगी । ८७ ।

सन्तुष्टा शीतलेनाहं सदा तत्सेवकेन च ।
प्रत्यहं या समश्नाति मालत्यर्कमुपोदकी ॥ ८८ ॥
तस्या गर्भं न स्पृशामि यावज्जीवं न संशयः ।
मम कोपेन संजातदाहो यस्तु नरोत्तमः ॥ ८९ ॥
दधिभक्तं ब्राह्मणेभ्यः शीताद्भिः सम्प्रदाय च ।
स्वयमश्नाति सप्ताहं तस्य पीडां हराम्यहम् ॥९०॥

मैं शीतल से बहुत प्रसन्न रहती हूँ, और जो मनुष्य शीतल वस्तुओं का सेवन करता है उससे भी सदा प्रसन्न रहती हूँ । जो गर्भवती स्त्री प्रतिदिन मालती का अर्क पियेगी उसके जीवन भर मैं कभी गर्भबाधा नहीं करूँगी, इसमें रत्तीभर भी सन्देह नहीं है । मेरे कोप से पीड़ित मनुष्य यदि दही-भात और ठंढा जल ब्राह्मण को देगा और स्वयं भी खायगा तो मैं सात ही दिन में उसकी पीड़ा हर लूँगी । ८८—९० ।

अष्टकं च ममैतद्धि यः पठेन्मानवः सदा ।
विस्फोटकभयं घोरं कुले तस्य न जायते ॥ ९१॥
श्रोतव्यं पठितव्यं च नरैर्भक्तिसमन्वितैः ।
उपसर्गभयं तस्य कदापि नहि जायते ॥ ९२ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अष्टकं च ममैतद्धि पठितं भक्तितः सदा ।
सर्वरोगविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत् ॥ ६३ ॥
शीतलाष्टकमेतद्धि न देयं यस्य कस्यचित् ।
दातव्यं सर्वदा तस्मै भक्तिश्रद्धान्वितोऽस्ति यः ६४॥

जो मनुष्य प्रतिदिन मेरा यह अष्टक पढ़ेगा उसके वंश में विस्फोटक का घोर भय नहीं होगा। मनुष्यों को श्रद्धा और भक्ति के साथ यह अष्टक पढ़ना और सुनना चाहिए। इसका पाठ करने अथवा सुनने से भयंकर विस्फोटक रोग से रक्षा होती है। जो मनुष्य भक्ति के साथ इसका पाठ करते हैं उनका अवश्य कल्याण होता है और उनके सब रोग नष्ट हो जाते हैं। यह शीतलाष्टक बिना समझे बूझे किसी मनुष्य को न देना चाहिए। यह उसी को देना चाहिए, जो इस पर श्रद्धा और भक्ति रखता हो। ६१–६४।

रावण उवाच

एवमुक्त्वा ययुः सर्वे तथैव भवितव्यता ।
तथा लोकान् जिघांसन्ति कालस्य वशमागताः ६५

रावण ने कहा—हे प्रिये, इतनी बातें हो चुकने के बाद सबके सब वहाँ से चले गये। भवितव्यता भी चली गई। काल के वशीभूत दाह आदि रोग प्राणियों के विनाश करने की इच्छा करते हैं। ६५।

अथ वक्ष्ये शीतलादिचिकित्सार्कं प्रभावतः ॥ ६६॥
जात्यर्कं वा कदल्यर्कं शतपत्रार्कमेव च ।
यो भुञ्ज्याद्दधिभक्ताभ्यां शीतला तं न मारयेत् ६७

अब मैं शीतला आदि की चिकित्सा के लिए अर्क बतलाता हूँ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चमेली का अर्क, केला का अर्क अथवा कमल का अर्क दही और भात के साथ खाने से शीतला द्वारा मृत्यु नहीं होती। ६६–६७।

चन्दनं वासको मुस्तं गुडूची द्राक्षया सह।
एषामर्कः शीतलश्च शीतलाज्वरनाशनः॥ ६८॥
लारोमायाशीतलेति चतुर्थ्यन्तं हृतं दकम्।
मन्त्रमुच्चार्य यो दद्याद्दधीनि शतसंख्यया॥ ६६॥
सचन्दनेन शीतेन शतपत्रार्कर्केण च।
अवश्यमेव सप्ताहप्रयोगाद्व्रणनाशनः॥ १००॥

सफ़ेद चन्दन, रूसा, मोथा, गुर्च और दाख, इनका अर्क ठंढा करके पीने से शीतला के ज्वर का नाश हो जाता है। "ओं ह्रीं शीतलायै" इस मंत्र को सौ बार पढ़कर चन्दन अथवा कमल के ठंढे अर्क के साथ दही खावे तो निस्संदेह सात दिन में शीतला के व्रण अच्छे हो जाते हैं। ६८–१००।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सातवाँ शतक

बाल काले करने की औषध

त्रिफला नीलिकापत्रं भृंगराजायसोमलम् ।
अविमूत्रेण सम्पिष्टं लेपात्कृष्णीकरं परम् ॥ १ ॥

भेड़ के मूत्र में त्रिफला, नील के पत्ते, भँगरा और लोहे की कीट पीसकर लेप करने से सफ़ेद बाल काले हो जाते हैं । १ ।

इन्द्रलुप्त की औषध

मसी तु गजदन्तस्य छागीक्षीरं रसाञ्जनम् ।
वटप्ररोहकं पिष्टमिन्द्रलुप्तघ्नमौषधम् ॥ २ ॥

बरगद की जटाएँ, हाथीदाँत की भस्म और रसौत बकरी के दूध में पीसकर मिलाकर लेप करने से इन्द्रलुप्त अर्थात् सिर की गंजा दूर हो जाता है । २ ।

आम्रबीजं च पथ्या च दुग्धनिर्वापितं त्र्यहम् ।
तदर्कों हन्ति लेपेन त्र्यहाद्दारुणदारुणम् ॥ ३ ॥

आम की गुठली और हड़, तीन दिन तक दूध में भिगोकर उसका अर्क निकाले । इस अर्क का तीन दिन लेप करने से दारुण (बढ़ी हुई सिर की गंजा) रोग नष्ट हो जाता है । ३ ।

नीलोत्पलस्य किञ्जल्कमामलं मधुयाष्टिका ।
क्लिन्नं गोमूत्रके चैव तदर्कोऽरूंषि नाशयेत् ॥ ४ ॥

नील कमल की केसर, आँवला और मुलेठी को गोमूत्र में भिगोकर इनका अर्क निकाले । इस अर्क का लेप करने से शरीर का रूखापन नष्ट हो जाता है । ४ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मुँहासों की औषध

केवलाः पयसा पिष्टास्तीक्ष्णाः शाल्मलिकण्टकाः ।
तदर्कस्य त्र्यहं लेपान्मुखं पद्मोपमं भवेत् ॥ ५ ॥

केवल सेमर के काँटे जल में पीसकर उसका अर्क निकाले यह अर्क तीन दिन लेप करने से मुँहासे नष्ट हो जाते हैं और मुँह कमल के समान हो जाता है । ५ ।

झाईं की औषध

वटाङ्कुरो मसूरश्च मञ्जिष्ठा क्षौद्रमेव च ।
जलक्लिन्नं तदर्कस्तु मुखव्यङ्गविनाशनः ॥ ६ ॥

बरगद की जटाएँ, मसूर, मँजीठ और शहद इन औषधों को पानी में भिगोकर इनका अर्क निकाले । इस अर्क का लेप करने से मुख की झाईं दूर हो जाती है । ६ ।

बद की औषध

काश्मर्यर्केण कोष्णेन सिञ्चेदङ्गुलवेष्टकम् ।
कोमलैः सप्तभिस्तस्य पत्रैर्बद्धं हरेद्बदम् ॥ ७ ॥

कुम्भेर का अर्क गरम-गरम लेप करके कुम्भेर के कोमल सात पत्ते बाँध देने से अङ्गुलवेष्टक (बद) रोग नष्ट हो जाता है । ७ ।

लिङ्गोत्थ की औषध

सर्जसैन्धवसिद्धार्थसिताकुष्ठार्कधावनात् ।
कपिकच्छू शमं गच्छेल्लिङ्गोत्थो नात्र संशयः ॥ ८ ॥

राल, सेंधा नमक, सरसों, मिश्री और कूट इनका अर्क निकाल कर धोने से बालकों का लिङ्गोत्थ कपि कच्छू रोग शान्त हो जाता है । ८ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुदकण्डू की औषध

शङ्खसौवीरयष्ट्यर्कैः प्रत्यहं क्षालयेद् गुदम् ।
गुदकण्डूं बालकस्य योगो हन्ति न संशयः ॥ ९ ॥

शंख, काँजी और मुलेठी के अर्क से प्रतिदिन बालक की गुदा धो दिया करे तो निस्सन्देह गुदा की खुजली दूर हो जाती है । ९ ।

गुदभ्रंश की औषध

पद्मिनीमृदुपत्राणामर्कं यः सितया पिबेत् ।
गुदनिस्सरणं तस्य नश्येन्मासान्न संशयः ॥ १० ॥

कमलिनी के कोमल पत्तों के अर्क में मिश्री मिलाकर एक महीने तक पिलाने से बालकों की काँच निकलना बन्द हो जाती है । १० ।

सूर्यावर्त की औषध

भृङ्गराजरसार्को यस्तुल्यक्षीरेण तापितः ।
सूर्य्यावर्तं निहन्त्याशु नस्येनैव प्रयोगराट् ॥ ११ ॥

भँगरे के अर्क में उसी के बराबर दूध मिलाकर गरम करके ठंढा कर ले । इसकी नास लेने से सूर्यावर्त की पीड़ा दूर हो जाती है । ११ ।

आधासीसी की औषध

विडङ्गतिलकृष्णानि समं पिष्ट्वा प्रलेपयेत् ।
एतदर्कस्य नस्येन चार्द्धभेदो व्यपोह्यते ॥ १२ ॥

वायविडंग और काले तिल दोनों को बराबर ले और उनको पीसकर सिर में लेप करे, अथवा उसका अर्क निकाले । उस अर्क का नास लेने से आधासीसी रोग दूर हो जाता है । १२ ।

सिरदर्द की औषध

पथ्याक्षधात्रीरजनीगुडभूनिम्बनिम्बकैः ।
गुडूच्यर्को हरेत्पीडां सर्वां मूर्द्धसमुद्भवाम् ॥ १३ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हड़, बहेड़ा, आँवला, हल्दी, गुड़, चिरायता, नीम के पत्ते और गुर्च, इनका अर्क लेप करने से सब प्रकार की सिर की पीड़ा दूर हो जाती है। १३।

दार्वीहरिद्रामञ्जिष्ठा सनिम्बोशीरपद्मकम्।
मर्दनं चैतदर्कस्य शङ्खपीडाप्रशान्तिकृत् ॥ १४ ॥

दारुहल्दी, हल्दी, मँजीठ, चिरायता, खस और पद्माक, इनका अर्क मलने से कनपटी की पीड़ा दूर हो जाती है। १४।

पैरों के खरुवे की औषध

पादे सिक्थारनालेन लेपनन्त्वलसे हितम्।
पटोलकुनटीनिम्बरोचनामिरचैस्तिलैः ॥ १५ ॥

काँजी के अर्क से पैर को धोकर परवल, मैनसिल, नीम, गोरोचन, काली मिर्च और तिल, इन सबको पीसकर लेप करने से अलस अर्थात् पैरों का खरुवा रोग नष्ट हो जाता है। १५।

केवलं भृङ्गराजार्कं उष्णोदार्वीसुपेषिता।
पादे बद्धाऽनयोः कल्कं दिनैकेन क्षयो भवेत् ॥ १६ ॥

भँगरे का अर्क गरम करके उसमें दारुहल्दी का चूर्ण मिलाकर बाँधने से एक ही दिन में अलस रोग नष्ट हो जाता है। १६।

चर्मकील की औषध

चर्मकीलं जतुमणिर्मशकास्तिलकालकः।
उत्कृत्य शङ्खद्रावेण दग्धो नोत्पद्यते पुनः ॥ १७ ॥

चमकील, लहसन, मस्सा और तिल, इनको छीलकर शंखद्राव से जला दिया जाय तो फिर ये कभी न निकलें। १७।

अभिष्यन्द की औषध

अहिफेनार्कसम्पिष्टा त्रिफलाचूर्णपोटली।
प्रतिसार्यं हिता नेत्रे सर्वाऽभिष्यन्दशान्तये ॥ १८ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

त्रिफला के चूर्ण की पोटली बनाकर उसे अफीम के अर्क में भिगो दे। वह पोटली आँखों में लगाने से अभिष्यन्द रोग (एक प्रकार का नेत्ररोग) नष्ट हो जाता है। १८।

नेत्ररोग की औषध।

वातातपरजोहीनवेश्मन्युत्तानशायिनः।
आधारौ माषचूर्णेन क्लिन्नेन परिमण्डलौ ॥ १६ ॥
समौ दृढौ समं बद्धौ कर्तव्यौ नेत्रकोशयोः।
पूरयेन्नयने तेन तत उन्मीलयेच्छनैः ॥ २० ॥

जिस घर में हवा, धूप और धूलि से रक्षा हो सके उस घर में आँख के रोगी को रक्खे। उड़द का आटा सानकर उसकी दो टिकिया बना ले। रोगी को चित्त लिटाकर उसकी आँखों पर टिकिया बाँध दे फिर वह धीरे-धीरे अपनी आँखें खोले। १६—२०।

भिषग्भिरेष कथितः पुराणैस्तर्पणो विधिः।
यद्रूक्षं परिशुष्कं च नेत्रं कुटिलमाविलम् ॥ २१ ॥
शीर्णपक्ष्मशिरोत्पातकृच्छ्रोन्मीलनसंयुतम्।
तिमिरार्जुनशुष्काद्यैरभिष्यन्दाधिमन्थकैः ॥ २२ ॥
शुष्काक्षिपाकशोथाभ्यां युक्तं वातविपर्ययैः।
तन्नेत्रं तर्पणे योज्यं नेत्रकर्मविशारदैः ॥ २३ ॥

आँखों को तृप्त करने का यह उपाय प्राचीन वैद्यों ने बताया है। आँखों में रूक्ष, परिशुष्क, कुटिल, आविल, शीर्णपक्ष्म, शिरोत्पात, कृच्छ्रोन्मीलन, तिमिर, अर्जुन, शुष्क, अभिष्यन्द, अधिमन्थ, शुष्काक्षि, पाक, शोथ और वात-विपर्यय आदि रोग हों तो बुद्धिमान् वैद्य से यह उपाय करावे। २१—२३।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

धारयेद्वर्त्मरोगेषु वाङ्मात्राणां शतं बुधः ।
स्वस्थे कफे सन्धिरोगे वाचां पञ्चशतानि च॥ २४॥

पलकों में यदि कोई रोग हो तो जितनी देर में सौ तक गिनती गिनी जाती है उतनी देर तक आँखों में औषध डाले रहे। स्वस्थ, कफज और सन्धिरोग में उतनी देर तक औषध डाले, जितनी देर में पाँच सौ तक गिनती गिनी जाती हैं। २४।

कफे षट्कशते कृष्णरोगे सप्तशतं मतम् ।
दृष्टिरोगे शतान्यष्टावधिमन्थे सहस्रकम् ॥ २५ ॥
सहस्रं वातरोगेषु धार्यमेवं हि तर्पणम् ।
पुनर्नवा च तुवरी कुमारी त्रिफला निशा ॥ २६ ॥
यष्टिगैरिकसिन्धूत्थदार्व्यौ जनयुगैः कृतः ।
अर्कस्तत्पूरणेनाशु नेत्ररोगाः शमं ययुः ॥ २७ ॥

कफ के रोग में छः सौ, कृष्ण रोग में सात सौ, दृष्टिरोग में आठ सौ और अधिमन्थ तथा वात रोग में एक हज़ार गिनती गिनने के समय तक औषध डालना चाहिए। पुनर्नवा, अरहर, घीकुवार, त्रिफला, हल्दी, मुलेठी, गेरू, सेंधा नमक, दारुहल्दी और दोनों रसौत, इनका अर्क आँखों में डालने से आँखों के सब रोग शान्त हो जाते हैं। २५–२७।

शङ्खनाभिर्विभीतस्य मज्जा पथ्या मनः शिला ।
पिप्पली मरिचं कुष्ठमजादुग्धेन पेषितम् ॥ २८ ॥
तदर्कः पूरणाद्धन्यात्काचं पटलमर्बुदम् ।
तिमिरं मांसवृद्धिं च वार्षिकं पुष्पमेव च ॥ २९ ॥

शंख की नाभि, बहेड़े की छाल, हड़, मैनसिल, पिप्पली, काली

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मिर्च, और कूट इनको बकरी के दूध में पीसकर इनका अर्क निकाले। इस अर्क को आँखों में लगाने से काच, पटल, अर्बुद, तिमिर, मांसवृद्धि और वर्ष भर का पुराना पुष्परोग नष्ट हो जाता है। २८—२६।

रतौंधी की औषध

रसाञ्जनं हरिद्रे द्वे मालतीनवपल्लवाः।
गोमयार्कस्तु रात्र्यन्ध्यं परितो हन्त्यसंशयम्॥ ३०॥

रसौत, दोनों हल्दी, चमेली के कोमल पत्ते और गाय के गोवर का अर्क आँखों में लगाने से रतौंधी अच्छी हो जाती है। ३०।

कर्णशूले कर्णनादे बाधिर्ये क्ष्वेड एव च।
चतुर्ष्वपि च रोगेषु सामान्यं भेषजं स्मृतम्॥ ३१॥

कान की पीड़ा, झंझनाहट, बहरापन और क्ष्वेड अर्थात् कान में शब्द होना, इन रोगों की सामान्य औषध कहते हैं। ३१।

कान के रोगों की औषध

शृङ्गवेरं सहमधु सैन्धवं तैलमेव च।
कदुष्णं कर्णयोर्धार्यमेतत्स्याद्वेदनापहम्॥ ३२॥

अदरख, शहद, सेंधा नमक और तिल का तेल, इनका गुनगुना अर्क छोड़ने से कान की पीड़ा दूर हो जाती है। ३२।

तीव्रशूलातुरे कर्णे सशब्दे क्लेदवाहिनि।
छागमूत्रं प्रशंसन्ति कोष्णं सैन्धवसंयुतम्॥ ३३॥

यदि कान में अत्यन्त पीड़ा हो, शब्द होता हो, या कान बहता हो तो बकरी के मूत्र में सेंधानमक मिलाकर गरम करके छोड़े। ३३।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आम्रजम्बूप्रवालानि मधुकस्य वटस्य च ।
एतदर्कः पूरणेन पूतिकर्णगदं हरेत् ॥ ३४ ॥

आम, जामुन, महुआ और बरगद के अंकुरों का अर्क कान में छोड़ने से कान का बहना बन्द हो जाता है । ३४ ।

नेत्ररोग की औषध

गोमूत्रं हरितालं च तथा माहिषगुग्गुलुम् ।
सप्ताहं वा दशाहं वा बहुशः परिभावितम् ॥ ३५ ॥
करञ्जबीजं तद्वर्त्तिर्हन्ति पुष्पं विनाशयेत् ।
रसाञ्जनं सर्जरसो जातीपुष्पं मनःशिला ॥ ३६ ॥
समुद्रफेनं लवणं गैरिकं मरिचं तथा ।
एतत्समांशं मधुना पिष्टं प्रक्लिन्नवर्त्मनि ॥ ३७ ॥
अञ्जनं क्लेदकण्डूघ्नं पक्ष्मणां च प्ररोहणम् ।
बब्बूलार्कः क्षौद्रयुक्तो नेत्रस्रावं हरेत्क्षणात् ॥ ३८ ॥

हरताल और भैंसिया गूगुल सात दिन तक अथवा दस दिन तक गोमूत्र में भिगोकर शुद्ध करे । फिर करंज के बीजों के साथ इसकी बत्ती बनाकर आँख में लगाने से आँख की फूली अच्छी हो जाती है ।

रसौत, राल, चमेली के फूल, मैनसिल, समुद्रफेन, सेंधानमक, गेरू और कालीमिर्च इनका शहद के साथ अर्क निकाले । यह अर्क आँखों में डालने से आँखों की खुजली और पानी का बहना बन्द हो जाता है और गिरी हुई बरौनी फिर से निकल आती हैं ।

बबूल की पत्ती के अर्क में शहद मिलाकर आँखों में लगाने से नेत्रस्राव दूर हो जाता है । ३५–३८ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पुनर्नवायाः श्वेताया अर्को हन्याद्दृगामयान् ।
दुग्धेन कण्डूं क्षौद्रेण नेत्रस्रावं च सर्पिषा ।
पुष्पं तैलेन तिमिरं काञ्जिकेन निशान्धताम् ॥३९॥

सफ़ेद पुनर्नवा का अर्क दूध मिलाकर आँखों में छोड़ने से आँखों की खुजली, शहद के साथ छोड़ने से नेत्रस्राव, घी के साथ छोड़ने से फूली, तेल के साथ छोड़ने से तिमिर और काँजी के साथ छोड़ने से रतौंधी दूर हो जाती है । ३९ ।

पीनस आदि अनेक रोगों की औषध

कट्फलं पौष्करं शृङ्गी व्योषं यासश्च कारवी ।
एतदर्कः शृङ्गवेररसयुक्तोऽगदान् हरेत् ॥ ४० ॥
पीनसं स्वरभेदं च तमकं च हलीमकम् ।
सन्निपातं कफं वातं श्वासं कासं विनाशयेत् ॥४१॥

कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, सोंठ, मिर्च, पिप्पली, जवासा और कालाजीरा इन औषधों का अर्क अदरख के रस के साथ पीने से पीनस, स्वरभेद, तमक, हलीमक, सन्निपात, कफ, वात, श्वास और खाँसी, ये रोग दूर हो जाते हैं । ४०—४१ ।

नासिका रोग की औषध

व्याघ्रीदन्तीवचाशिग्रुः सुरसाव्योषसैन्धवैः ।
सिद्धोऽर्कस्तु नासि क्षिप्तः पूतिनासागदापहः ॥४२॥

भटकटैया, वज्रदन्ती, वच, सेंधा नमक, तुलसी, त्रिकुटा और सहिंजन के बीज इन सब औषधों का अर्क निकालकर नास लेने से पूतिनासा रोग नष्ट हो जाता है । ४२ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शुण्ठीकुष्ठकणाबिल्वद्राक्षार्कः क्षवथुं हरेत् ।
मर्दयेत्कट्फलार्कं तु श्लेष्मनाशाय मस्तके ॥ ४३ ॥

सोंठ, कूट, पिप्पली, बेल की गिरी और दाख इनका अर्क छींक को दूर करता है। कायफल का अर्क माथे में लगाने से कफ का विकार नष्ट हो जाता है। ४३।

गृहधूमकणादारुनिशाह्वासैन्धवैः समैः ।
अपामार्गेण जातोऽर्को नासार्शोघ्नो दिनत्रयात् ॥ ४४ ॥

घर का धुआँ, पिप्पली, देवदारु, हल्दी, सेंधा नमक और अपामार्ग के अर्क का नास लेने से तीन दिन में नाक के मस्से नष्ट हो जाते हैं। ४४।

निद्रा की अधिकता दूर करने की औषध

क्षौद्राश्वलालासंयुक्तमरिचार्कस्य चाञ्जनात् ।
अतिनिद्रा शमं याति तमः सूर्योदये यथा ॥ ५४ ॥

शहद, घोड़े की लार और कालीमिर्च इनका अर्क निकालकर आँखों में लगाने से निद्रा की अधिकता वैसे ही दूर हो जाती है जैसे सूर्य के उदय होने पर अन्धकार का नाश हो जाता है। ४५।

नेत्राञ्जन

शिलायां रसकं पिष्ट्वा सम्यगाप्लाव्य वारिणा ।
गृह्णीयात्तज्जलं सर्वं त्यजेच्चूर्णमधोगतम् ॥ ४६ ॥
शुष्कं च तज्जलं सर्वं पर्पटीसन्निभं भवेत् ।
विचूर्ण्य भावयेत्सम्यक् त्रिफलार्कैः पुनःपुनः ॥४७॥
कर्पूरस्य रजस्तत्र दशमांशेन निक्षिपेत् ।
अञ्जयेन्नयने तेन नेत्राखिलगदच्छिदः ॥ ४८ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

खपरिया को सिल पर पीसकर पानी में भिगो दे। उसका सब पानी ले ले और नीचे का चूरा फेंक दे। जब वह पानी सूखेगा तो पपड़ी-सी पड़ जायगी। उसको पीसकर कई बार त्रिफला के अर्क की भावना दे। फिर उसमें उसका दसवाँ हिस्सा कपूर मिलाकर आँखों में लगावे। इस अञ्जन के लगाने से आँखों के सब रोग नष्ट हो जाते हैं। ४६–४८।

मुख के रोगों की औषध

नील्यर्कः कटुतुम्ब्यर्कः काकजङ्घाभवोऽथवा।
गण्डूषकरणैर्हन्याद् दन्तानां कृमिजालकम् ॥४९॥

नील के अर्क, कड़ुई तुम्बी के अर्क अथवा काकजंघा के अर्क के कुल्ले करने से दाँतों के कीड़े मर जाते हैं। ४९।

त्रिफला स्वर्णमाक्षीकं तारमाक्षिकसैन्धवम्।
खदिरो दग्धपूगं च लोहचूर्णं समांशकम् ॥ ५०॥
वज्रदन्तीभवे चार्के भावयेद्दिवसत्रयम्।
लेप्याः सायन्तने दन्ताः सप्ताहाद्दृढवत्तराः॥५१॥

त्रिफला, सोनामाखी, रूपामाखी, सेंधा नमक, खैर, सुपारी की भस्म और लोहचूर्ण, इन सबको समान भाग लेकर वज्रदन्ती के अर्क में तीन दिन तक भिगो रक्खे, फिर इसका मंजन करने से सात दिन में दाँत बहुत मज़बूत हो जाते हैं। ५०–५१।

व्योषक्षाराभयावह्निचूर्णं मूर्वार्कभावितम्।
उपजिह्वाप्रशान्त्यर्थं पीडयेदुपजिह्विकाम् ॥ ५२ ॥

त्रिकुटा, जवाखार, हर्ड़ और चीता का चूर्ण मूर्वा के अर्क में मिलाकर रगड़ने से उपजिह्वा दूर हो जाती है। ५२।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कटुत्रयं शिवाधात्री यवानी जीरकद्वयम् ।
चव्यमौषधवत्तुल्यं भागयुग्मं च सैन्धवम् ॥ ५३ ॥
सप्तवारानम्लवर्गे द्विगुणैश्चित्रकार्कैः ।
भावयित्वा वटी कार्या जिह्वादन्तरुजापहा ॥ ५४॥

त्रिकुटा, हड़, आँवला, अजवायन, दोनों जीरा और चव्य, ये सब औषधें बराबर लेकर दो भाग सेंधा नमक मिलावे । फिर उसे खटाई में सात बार भावना दे । उसके बाद दूने चीता के अर्क में चौदह भावना देकर गोली बना ले । यह गोली मुँह में रखने से सब प्रकार के जिह्वा और दाँत के रोग नष्ट हो जाते हैं । ५३–५४ ।

वचा चातिविषा पाठा रास्ना कटुकरोहिणी ।
पिचुमर्दार्ककवलात्तालुरोगविनाशनम् ॥ ५५ ॥

बच, अतीस, पाढ़र, रास्ना और कुटकी, इनके चूर्ण को नींबू के अर्क में गोली बना ले । यह गोला मुँह में रखने से तालुरोग नष्ट हो जाते हैं । ५५ ।

गोमूत्रातिविषादारुपाठाविषकलिङ्गकाः ।
कटुकार्कस्य पानेन कण्ठरोगविनाशनम् ॥ ५६ ॥

गोमूत्र, अतीस, देवदारु, पाठा, पद्मकेसर, इन्द्रजौ और कुटकी का अर्क पीने से कण्ठरोग दूर हो जाता है । ५६ ।

जातीपत्रामृताद्राक्षायासदार्वीफलत्रिकैः ।
अर्कः शीतः क्षौद्रयुक्तो गण्डूषो मुखपाकनुत् ॥५७॥

जावित्री, गुर्च, दाख, जवासा, दारुहल्दी और त्रिफला इनका अर्क ठंढा करके शहद मिलाकर कुल्ली करने से मुखपाक रोग दूर हो जाता है । ५७ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कृष्णजीरककुष्ठेन्द्रयवजार्कस्य सेवनात्।
त्रिदिनेन व्रणक्लेददौर्गन्ध्यमुपशाम्यति ॥ ५८ ॥

कालाजीरा, कूट और इन्द्रजौ का अर्क तीन दिन सेवन करने से मुख के व्रण अच्छे हो जाते हैं और मुख की दुर्गन्धि भी जाती रहती है। ५८।

नीलोत्पलदलक्लिन्नं त्रिदिनं मधुना युतम्।
अर्को गण्डूषतो हन्ति लालास्रावं न संशयः ॥ ५९ ॥

मुलेठी को नीले कमल के रस में तीन दिन तक भिगो रक्खे, फिर उसका अर्क निकाले। इस अर्क का कुल्ला करने से मुख से लार गिरना बन्द हो जाता है। ५९।

विषों के हटाने की औषध

स्थावरेण विषेणार्त्तं मदनार्केण वामयेत्।
शतपत्र्यादिकार्कैस्तु रेचकं च समाचरेत् ॥ ६० ॥
हेमार्क साधितैरर्कैर्वामयेच्च विरेचयेत्।
दद्याच्च मधुसर्पिर्भ्यां मरिचार्कं तु साम्लकम् ॥ ६१ ॥

स्थावर विष से पीड़ित मनुष्य को मैनफल के अर्क से वमन करावे और कमलिनी आदि के अर्क से रेचन करावे अथवा धतूरा और मदार के अर्क से वमन और विरेचन दोनों करावे। कालीमिर्च के अर्क में घी, शहद और खटाई मिलाकर पिलाने से विरेचन हो जाता है। ६०-६१।

आदौ संस्नेहनं कृत्वा ततो लेपं समाचरेत्।
मूलत्वक्पत्रपुष्पाणि बीजं चेति शिरीषतः।
गवां मूत्रेण सम्पिष्टं लेपाद्विषहरं परम् ॥ ६२ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गोमूत्र में सिरस का पञ्चाङ्ग (जड़, छाल, पत्ते, फूल और बीज) पीसकर शरीर में लेप करने से विष का नाश हो जाता है। लेप करने के पहले घी लगा लेना चाहिए। ६२।

सर्प के विष की औषध

पिप्पली धान्यकं मांसी लोध्रमेला सुवर्चला।
स्थूलैलामरिचं बालं तथा कनकगैरिकम्॥ ६३॥
मालत्यर्केण गुटिकां कर्षमात्रां तु भक्षयेत्।
गरुड्यर्कस्य पानं तु सर्पाणां विषनाशनम्॥ ६४॥

पिप्पली, धनियाँ, जटामांसी, लोध, इलायची, सुवर्चला (हुरहुर), बड़ी इलायची, कालीमिर्च, नेत्रबाला और सोनागेरू, इनका चूर्ण चमेली के अर्क में भिगोकर गोला बना ले। प्रतिदिन एक तोला गोली खाकर पातालगरुड़ी का अर्क पिये, इससे सर्प का विष दूर हो जाता है। ६३–६४।

बिच्छू के विष की औषध

सूर्यावर्त्तार्कगन्धस्तु वृश्चिकस्य विषं हरेत्।

हुरहुर का अर्क और गन्धक के लगाने से बिच्छू का विष दूर हो जाता है।

कुत्ते के विष की औषध

अपामार्गजटार्को वा धत्तूरार्कः सदुग्धकः।
अङ्कोलार्कोऽथ वंशार्कः श्वविषघ्नः पृथक् पृथक्॥ ६५॥

अपामार्ग अथवा धतूरे के अर्क में दूध मिलाकर पीने से अथवा अंकोल या बाँस का अर्क पीने से कुत्ते के काटने का विष दूर हो जाता है। ६५।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मकड़ी के विष की औषध

रजनीयुग्मपातङ्गमञ्जिष्ठानागकेशरम्।
गैरिकार्केण शीतेन लेपो लूताविनाशनः॥ ६६ ॥

हल्दी, दारुहल्दी, पतंग, मँजीठ और नागकेसर, इन औषधों को गेरू के ठंढे अर्क में पीसकर लेप करने से मकड़ी का विष दूर हो जाता है। ६६।

चूहे के विष की औषध

विडालमांसार्कलेपो मूषकानां विषापहः॥ ६७ ॥

बिलार के मांस का अर्क लेप करने से चूहा के काटने का विष दूर हो जाता है। ६७।

तिक्ताजाजीनागरयोरर्केण सह पेषिता।
शतपद्यादिविषहृद्विषमुष्टिर्भवेदियम्॥ ६८ ॥

कुटकी, कालाजीरा और सोंठ के अर्क में कुचला घिसकर लेप करने से खनखजूरा आदि का विष नष्ट हो जाता है। ६८।

चींटी के विष की औषध

पिपीलिकाविषं हन्याच्छुण्ठ्यर्कस्तत्र मर्दितः।

सोंठ का अर्क लेप करने से चींटी का विष दूर हो जाता है।

प्रदर रोग का औषध

सितादुग्धेन संयुक्तमाषार्कस्य पलद्वयम्।
घृतदुग्धाशिनी नारी प्रदरात्परिमुच्यते॥ ६९ ॥

बबूल की पत्ती के अर्क में दूध और मिश्री मिलाकर प्रति दिन दो पल पीने से और दूध-घी खाने से स्त्री प्रदररोग से छुटकारा पा जाती है। ६९।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अशोकवल्कलार्कश्च घृतं दुग्धं च शीतलम् ।
यथाबलं पिबेत्प्रातस्तीव्रासृग्दरनाशनम् ॥ ७० ॥

अशोक की छाल के अर्क में घी और दूध मिलाकर ठंढा करके प्रातःकाल पीने से स्त्रियों का रक्त-प्रदररोग नष्ट हो जाता है । ७० ।

दार्वीरसाञ्जनं वासाकिरातश्चार्कपुष्पकम् ।
रक्तचन्दनबिल्वार्कः सक्षौद्रोऽसृग्दरं हरेत् ॥ ७१ ॥

दारुहल्दी, रसौत, रूसा, चिरायता, मदार के फूल, लाल चन्दन और बेल, इनका अर्क शहद के साथ पीने से रक्त-प्रदररोग नष्ट हो जाता है । ७१ ।

सोमरोग की औषध

कदलीनां फलं पक्वं धात्रीफलरसं मधु ।
शर्कराभिः कृतं मद्यं सोमरोगविनाशनम् ॥ ७२ ॥

केले की पकी हुई फली, आँवला का रस, शहद और शक्कर की मदिरा बनाकर पीने से सोमरोग दूर हो जाता है । ७२ ।

बहुमूत्र की औषध

चक्रमर्दकमूलं तु सम्पिष्टं तण्डुलाम्बुना ।
प्रभातसमये पीतस्तदर्को बहुमूत्रजित् ॥ ७३ ॥

पँवार की जड़ चावलों के पानी में पीसकर अर्क निकाले । यह अर्क प्रति दिन प्रातःकाल पीने से बहुमूत्ररोग नष्ट हो जाता है । ७३ ।

योनि के रोगों की औषध

ज्योतिष्मती घनवचा कृष्णिकानिम्बजोऽर्ककः ।
शीतलः पयसा पीतो नारीणां पुष्पकारकः ॥ ७४ ॥

मालकाँगनी के पत्ते, मोथा, बच, राई और नीम का अर्क ठंढे

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दूध में मिलाकर पीने से स्त्रियों का मासिक रज ठीक समय पर होने लगता है। ७४।

अश्वगन्धाभवार्केण सिद्धं दुग्धं घृतान्वितम्।
ऋतुस्नाताङ्गना प्रातः पीत्वा गर्भं दधाति हि ॥७५॥

ऋतु स्नान के बाद असगंध के अर्क में घी और दूध मिलाकर पीने से स्त्रियाँ गर्भ धारण कर सकती हैं। ७५।

आरनालपरिपेषितं त्र्यहं या जयाकुसुममत्ति पुष्पिणी।
सत्पुराणगुडमुष्टिसेविनी सा दधाति नहि गर्भमङ्गना७६

जाही के फूल काँजी में पीसकर ऋतु के समय पुराने गुड़ के साथ तीन दिन तक प्रति दिन चार तोले खाने से स्त्री को गर्भ नहीं रह सकता। ७६।

नववार्त्ताकिनीकुष्ठसैन्धवामरदारुभिः।
साधितार्कपिचुं योनौ विलुप्तायां तु धारयेत् ॥ ७७॥

वनभाँटा, कूट, सेंधा नमक और देवदारु के अर्क में रुई भिगोकर योनि में रखने से विलुप्तारोग नष्ट हो जाता है। ७७।

वातलां कर्कशां स्तब्धामल्पस्पर्शां तथैव च।
कुम्भीं स्वेदैरुपचरेदन्तर्वेश्मनि संवृते ॥ ७८ ॥

वातला, कर्कशा, स्तब्धा, अल्पस्पर्शा और कुम्भ योनि के रोगों में स्वेद कर्म करावे और उस स्त्री को वायु से सुरक्षित घर में रक्खे। ७८।

स्कन्दापस्मार की औषध

बिल्वः शिरीषस्तुलसी गुग्मपाठा च राजिका।
श्वेतदूर्वा मरुवको भार्गी कह्लारभूस्तृणम् ॥ ७९ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

श्वेतवर्वरिका कृष्णवर्वरी कासमर्दकः ।
महानिम्बः कट्फलं तु निर्गुण्डी चापि शल्लकी॥८०॥
उदुम्बरो वारिवाहो विडङ्गं काकमाचिका ।
बला एला जटामांसीर्दद्यान्मूत्राष्टके त्र्यहम् ॥८१॥
गोऽजाविमहिषाश्वानां खरोष्ट्रकरिणां तथा ।
निष्काशयेत्ततश्चार्कं शाम्भवं कवचं जपन् ॥
परिवेषं प्रयोक्तव्यं स्कन्दापस्मारशान्तये ॥ ८२ ॥
जातमात्रस्य बालस्य वल्लार्कं तु प्रदापयेत् ।
तज्जनन्याः पलं देयमजादेर्द्विगुणादिकम् ॥ ८३ ॥

बेल की छाल, सिरस की छाल, तुलसी, दोनों पाढ़र, राई, सफ़ेद दूब, मरुआ, भारंगी, सफ़ेद कमल, भूतृण, सफ़ेद तथा काली वन-तुलसी, कसौंदी, बकायन, कायफल, सँभालू, सलई, गूलर, मोथा, बायविडङ्ग, मकोय, बरियारा, इलायची और जटामांसी ये सब औषधें बराबर-बराबर लेकर गाय, बकरी, भेड़, भैंस, ऊँट, गधा, घोड़ा और हाथी इन पशुओं के मूत्र में तीन दिन भिगोवे। फिर शिवजी का कवच पढ़कर इनका अर्क निकाले। जो बालक स्कन्दापस्मार रोग से पीड़ित हों उनके सब अङ्ग इस अर्क से धोने पर रोग से मुक्त हो जाते हैं। बच्चों को पैदा होते ही तीन रत्ती यह अर्क पिलावे और उनकी माता को एक पल देना चाहिए। बकरी आदि पशुओं को इस मात्रा से दूना देना उचित है। ७९–८३।

बालकों के ज्वरातिसार की औषध

घनकृष्णारुणाशृङ्गीजातोऽर्कः क्षौद्रसंयुतः ।
शिशोर्ज्वरातीसारघ्नः कासं श्वासं वमिं हरेत् ॥८४॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मोथा, पिप्पली, अतीस और काकड़ासिंगी इनके अर्क में शहद मिलाकर पिलाने से बालकों का ज्वर, अतिसार, खाँसी, श्वास और वमन दूर हो जाता है। ८४।

बालकों के आमातिसार की औषध

विडङ्गान्यजमोदा च पिप्पली तण्डुलानि च।
एषामर्कः सुखोष्णस्तु बालस्यामातिसारजित् ॥८५॥

वायविडङ्ग, अजमोदा, पिप्पली और साठी के चावल, इनका गुनगुना अर्क पिलाने से बालकों का आमातिसार दूर हो जाता है।८५।

बालकों के अनेक रोगों की औषध

रजनी सरलोदारुबृहती गजपिप्पली।
पृश्निपर्णी शताह्वा च जातोर्को मधुसर्पिषा ॥८६॥
दीपनो ग्रहणीं हन्ति मारुतार्त्तिं सकामलाम्।
ज्वरातीसारपाण्डुघ्नो बालानां सर्वरोगनुत् ॥८७॥

हल्दी, सरल, देवदारु, बड़ी भटकटैया, गजपीपल, पृश्निपर्णी और सौंफ़ का अर्क शहद या घी के साथ चाटने से बालकों की जठराग्नि बढ़ती है और संग्रहणी, वातज पीड़ा, कामला, ज्वरातिसार और पाण्डुरोग नष्ट हो जाते हैं। ८६—८७।

बालकों के मूत्र रुक जाने की औषध

कणोषणासिताक्षौद्रसूक्ष्मैलासैन्धवैः कृतः।
मूत्रग्रहे प्रयोक्तव्यः शिशूनामर्क उत्तमः ॥ ८८ ॥

पिप्पली, मिर्च, मिश्री, शहद, छोटी इलायची और सेंधा नमक, इनका अर्क बालकों के मूत्रग्रह अर्थात् मूत्र रुक जाने पर लाभ करता है। ८८।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वाजीकरण औषध

स्वर्णमाक्षिकलोहं च पारदं च शिलाजतु ।
पथ्याविडङ्गधत्तूरविजयाजातिपत्रिका ॥ ८९ ॥
अश्वगन्धागोक्षुराणामर्कैर्भाव्यं पृथक् पृथक् ।
सप्तघस्त्रं तु वल्लैकं मध्वाज्याभ्यां लिहेत्ततः ॥९० ॥
गवां विरूढवत्सानां सिद्धं पयसि पायसम् ।
गोधूमचूर्णं च तथा सितामधुघृतान्वितम् ॥ ९१ ॥
भुक्त्वा हृष्यति जीर्णोऽपि दशदारान् व्रजत्यपि ।
ब्रह्मचर्यं प्रकर्त्तव्यमेकविंशदिनावधि ॥ ९२ ॥

सोनामाखी, लोहा, पारा, शिलाजीत, हड़, वायविडङ्ग, धतूरा, भाँग और जावित्री को असगंध तथा गोखुरू के अर्क में अलग-अलग भिगोवे। इसे शहद और घी के साथ सात दिन चाटने से वाजीकरण शक्ति होती है। अधिक दिनों की ब्याई हुई गाय के दूध में गेहूँ का आटा, मिश्री, शहद और घी का हलुवा बनाकर खाने से बुड्ढा पुरुष भी बड़ी प्रसन्नता से दस स्त्रियों के साथ भोग कर सकता है, किन्तु इक्कीस दिन तक ब्रह्मचर्य से रहना चाहिए। ८९-९२।

श्वेतार्कतूलवर्त्या वराहमेदः प्रदग्धिकां कृत्वा ।
स्तब्धं पुरुषवराङ्गं धारयति च शर्वरीं सकलाम्॥९३॥

सफ़ेद मदार की रुई सुअर की चर्बी में भिगोकर लिंग पर लेप करने से रातभर स्त्री संगम करने पर भी लिङ्ग शिथिल नहीं होता। ९३।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अपर्णाबीजसंयुक्तमुग्रबीजं प्रकल्पयेत् ।
तुल्यमुन्मत्तबीजं च तदर्केणैव भावितम् ॥ ९४ ॥
सतैलं भावितं पश्चादस्य वल्लयुगं नरः ।
ससितं भक्षयन् कामाद्रमणीं रमते ध्रुवम् ॥ ९५ ॥

अपर्णा वृक्ष के बीज, सहिंजन के बीज और धतूरे के बीज, इन्हीं के अर्क में भिगोकर इनका तेल निकाले। यह तेल तीन रत्ती मिश्री के साथ सेवन करने से वीर्य का स्तम्भन होता है और पुरुष काम के वश होकर स्त्री के साथ संभोग करता है। ९४–९५।

वीर्यस्तम्भन की औषध

स्वच्छवल्कं बबूलस्य निम्बूरसविभावितम् ।
सायं वेदाङ्गुलं दुग्धैः क्षाल्यं दुग्धं पिबेत्ततः॥९६॥
वीर्यस्तम्भो भवेल्लेपाद्योनिर्गाढा प्रजायते ।
बब्बूलार्कं सलवणं पीत्वा तद्वेगरोधनात् ॥ ९७ ॥

बबूल की शुद्ध छाल नींबू के रस में भिगोवे, उसमें शाम को चार अंगुल कपड़ा भिगो दे। उस कपड़े को दूध में धोकर पीने से वीर्य-स्तम्भन होता है। पतला वीर्य गाढ़ा हो जाता है और वीर्य बहुत देर तक रुकता है। स्त्री अपनी योनि में इसे रक्खे तो उसकी योनि कड़ी हो जाती है। बबूल का अर्क नमक मिलाकर पीने से भी वेग को रोक रखने से वीर्य का स्तम्भन होता है। ९६–९७।

बस्ताण्डः सर्पिषा भृष्टः कणासैन्धवमिश्रितः ।
भक्षयेत्सततं यस्तु रमते सोऽङ्गनाशतम् ॥ ९८ ॥

जो पुरुष बकरे का अण्डकोष घी में भूनकर पिप्पली और सेंधा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नमक मिलाकर खाता है वह एक सौ स्त्रियों के साथ भोग कर सकता है। ९८।

गोक्षुरेक्षुरकाभीरुवानर्यतिबलाबलाः।
पयोनुपानं यो लिह्यान्नित्यवेगः स ना भवेत् ॥९९॥

गोखुरू, तालमखाना, शतावरी, कौंच के बीज, कटेहरी और कंघी इनको महीन पीसकर दूध के साथ पीने से वीर्य पुष्ट हो जाता है। ९९।

केतक्यर्केण बहुशो गन्धः पाषाणधूपितो दशधा।
तद्युक्तलिङ्गभोगाद्योनिर्लिङ्गः सुगन्धिः स्यात् १००॥

केतकी के अर्क में भिगोया हुआ और दस बार धूप से सुगन्धित किया हुआ गन्धक लिङ्ग के ऊपर लेप करके भोग करने से स्त्री की योनि और पुरुष का लिङ्ग दोनों सुगन्धित हो जाते हैं। १००।

इति सातवाँ शतक समाप्त।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आठवाँ शतक

—०—

आकर्षण विधि

हंसपादीजटा रक्तो रोचना टङ्कमेव च।
स्वार्कक्लिन्नस्तदर्कस्तु नार्य्यां वै सारिवा तथा ॥ १ ॥
भोज्ये पाने प्रदातऽस्य उन्माद्यो भूतगन्धया।
भोज्ये पाने येन दत्तः प्रेष्ठस्तेन वशीकृतः ॥ २ ॥
खवल्लिदलपुष्पजार्कः सप्ताहं वासितः स्त्रियै देयः।
एवं विधिना हि तया पुंसे दत्तो जगद्वशकृत् ॥३॥
सार्द्धमरण्यरजन्या त्रिर्भुक्तः स्वान्तसाधितो विजने।
सकलमहीभुग्ललनावशीकरं नागतुल्ये मे ॥ ४ ॥
प्रस्थापितापितॄस्थाने एनमर्कं पिबेत्तु या।
स सेवितो नखाहेन वशीकरणसिद्धिदः ॥ ५ ॥
वामिनोर्मिथुनं ग्राह्यं वियोगं तस्य कारयेत्।
स्मरनेत्राग्निना दाह्यमापीडं दृढबन्धनम् ॥ ६ ॥
एवं तं पुरुषं नीत्वा तस्यै नार्य्यै समर्पयेत्।
ब्रह्मासनं गतो वापि तस्यक्त्वास्याः प्रियो भवेत्॥७॥
आधेयोऽर्कस्तु साध्योऽमात्राचारोऽर्कश्च साधकः।
पीत्वा कर्षयते घस्त्रैश्चतुर्भिश्चतुरां स्त्रियम् ॥ ८ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ॐ ताराय कृष्णाय त्रिनेत्राय ईक्षिताय ।
आश्चर्याय नमष्ठष्ठः स्वाहा इति मन्त्रः ॥ ९ ॥
मन्त्रो ह्ययं समुच्चार्यो जपसंख्याक्रमेण वै ।
पञ्चसंख्याप्रजापेन समाकर्षयते ध्रुवम् ॥ १० ॥

हंसपादी की जड़, लाल चन्दन और गोरोचन, एक-एक टङ्क लेकर इन्हीं के रस में भिगोकर अर्क निकाले । यह अर्क सारिवा के साथ स्त्री को देना चाहिए । जो मनुष्य इस उन्माद्य अर्क को भूतगंधा के साथ नियम से पीता है, वह स्त्री को वश में कर लेता है और जो स्त्री भूतगंधा तथा आकाशवेल के पत्तों के अर्क के साथ इसे पीती है अथवा पुरुष को पिलाती है तो सारा संसार उन दोनों के वश हो जाता है । विधिपूर्वक इस उन्मार्द्य अर्क को तैयार करके वनहल्दी के साथ तीन दिन सेवन करने से पृथिवी के सम्पूर्ण राजा और रानी वश में हो सकते हैं । जो स्त्री अपने पिता के घर जाकर बीस दिन नियम से यह अर्क पीती है वह सम्पूर्ण वशीकरण सिद्ध कर सकती है, क्योंकि यह अर्क सब प्रकार के वशीकरण सिद्ध करनेवाला है । स्त्री और पुरुष को वारुणी मदिरा पिलाकर आमने सामने बैठा दे, जिसमें उनकी दृष्टि मिलने से काम की उत्तेजना होती रहे । जबतक उनके हृदय में काम का वेग खूब न बढ़ जाय तबतक उनको बन्धन से न छोड़े । जब उनके चित्त अत्यंत व्याकुल हो उठें तब उस पुरुष को वह स्त्री सौंप दे जब यह प्रयोग सिद्ध हो जायगा तब ब्रह्मा के आसन पर बैठा हुआ मनुष्य भी उसके वश में हो सकता है । साध्य अर्क आधेय हैं और साधक अर्क आधार हैं । एकाग्र चित्त होकर चार दिन यह उन्माद्य अर्क पीने से परम सुन्दरी स्त्री वश में हो सकती है । मन्त्र इस प्रकार है—"ॐ ताराय कृष्णाय त्रिनेत्राय

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ईप्सिताय आर्याय नमः ठः ठः स्वाहा" यह मन्त्र पाँच बार जपने से आकर्षण सिद्ध हो जाता है। ९–१०।

विद्वेषण विधि

अहोरात्र्यन्धपंगूनां केशांस्तद्वाहनस्य वा।
निखनेन्निर्गमद्वारि तदर्कं दिक्षु विन्यसेत् ॥ ११ ॥
वक्ष्यमाणं महामन्त्रं जपेत्पूर्वविधानतः।
विद्वेषस्तु प्रजायेत त्रिदिनान्नात्र संशयः ॥ १२ ॥

उल्लू, रात्र्यन्ध (जिसको रँतौधी आती हो) अथवा पँगुला के बाल या उसके वाहन घोड़ा आदि की खोपड़ी के बाल साध्य के निकलने के दरवाजे पर गाड़ दे और ऊपर बतलाया हुआ उन्माद्य अर्क उसके चारों ओर छिड़क दे। उसके बाद आगे बतलाया हुआ मन्त्र तीन दिन तक विधिपूर्वक जपे तो निस्सन्देह विद्वेष उत्पन्न हो जायगा। ११–१२।

हयारिहययोरक्तघृतैर्निर्माय कज्जलम्।
अञ्जित्वा नयने तेन यं पश्येद् द्वेषणो भवेत् ॥ १३ ॥
तारोऽहं डामरायेति ईश्वरायामुकेन च।
सह द्वेषं कुरुकुरु स्वाहा ठद्वौ ह्ययं मनुः ॥ १४ ॥

घोड़े और भैंसे के रुधिर में घी मिलाकर काजल पारे। वह काजल आँखों में लगाकर जिसकी ओर देखे उससे किसी-न-किसी से लड़ाई झगड़ा अवश्य हो जाय। मन्त्र यह है—"ॐ नमो डामराय ईश्वराय अमुकेन सह द्वेषं कुरु कुरु ठः ठः स्वाहा।" १३–१४।

आभ्यन्तरबहिःशुद्धिर्ब्रह्मचर्य्यं यथोदितम्।
अल्पाहारश्चाल्पनिद्रानियमः सर्वसिद्धिषु ॥ १५ ॥

योगमार्ग के नियमानुसार बाह्य और अन्तस्थ शुद्ध करके ब्रह्मचर्य

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

के साथ अल्प भोजन और अल्प निद्रा आदि नियमों का पालन करते हुए इस मन्त्र का जप करने से सिद्धि होती है । १५ ।

उच्चाटन विधि

महादेवाभरणकं तत्सुतांश्च लघीयसः ।
क्षिप्त्वा चाहिवरच्छिद्रे मासमात्रं समुद्धरेत् ॥ १६ ॥
साध्यस्य निखनेद् द्वारि किञ्चिच्चैवं तथा पुनः ।
अग्निकोणाद्वायुकोणे क्षिपेदेतत्समुच्चरेत् ॥ १७ ॥
बलिं गृह्णन्त्विमे भूताः स्थानस्थाः सर्व एव हि ।
उच्चाटयन्तु सर्वेऽपि रिपुमेतमहास्त्रिकात् ॥ १८ ॥
तारो नमो भगवते डामरेश्वरमूर्त्तये ।
उच्चाटयेति मन्त्रेण कार्यसिद्धिरुदाहृता ॥ १९ ॥

शिवभूषण साँप और उसके छोटे बच्चों को मारकर उसी के बिल में गाड़ दे । एक महीने बाद उनको निकाले । कुछ तो साध्य के निकलने के द्वार पर गाड़ और कुछ उसके घर के अग्निकोण से वायुकोण की ओर फेंक दे । उस समय यह कहता जाय कि हे इस स्थान के निवासी भूतो, तुम यह बलि ग्रहण करो और मेरे इस शत्रु को तीन ही दिन में उच्चाटन कर दो । १६–१८ । मन्त्र इस प्रकार है—"ॐ नमो भगवते डामरेश्वरमूर्तये अमुकं उच्चाटय उच्चाटय।" इस मन्त्र का जप करने से कार्य सिद्ध हो जाता है । १९ ।

ब्रह्मचर्यादिनियमान् धारयेद्विधिपूर्वकम् ।
जपेच्च सिद्धिदं मन्त्रं गुरुमार्गेण दीक्षितः ॥ २० ॥

ब्रह्मचर्य आदि नियमों का पालन करके गुरु की बतलाई हुई विधि के अनुसार यह मन्त्र जपने से सिद्धि होती है । २० ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

स्तम्भन विधि

अन्तिमपाण्डववल्लीशिखरीसिद्धार्थमार्कवश्चेति ।
श्वेतापचार्कमादौ पीत्वाऽतो घर्षयेल्लोहम् ॥ २१ ॥
पात्रे तच्चन्दनसमं द्विदिनान्ते समुद्धरेत् ।
तिलके सर्वशत्रूणां बुद्धिस्तम्भकरं परम् ॥ २२ ॥
तारो नमो भगवते विश्वामित्राय वै नमः ।
चतुर्दशाक्षरोमन्त्रःसिद्धोऽस्मिन्कर्मणिस्मृतः॥२३॥

पुराने अर्जुन वृक्ष के ऊपर की आकाशबेलि, अपामार्ग, सरसों, भँगरा और सफेद बच, इनका अर्क निकालकर पहले स्वयं पीले। उसके बाद उसी अर्क में लोहा घिसे। जब वह चन्दन की तरह हो जाय तब दो दिन के बाद उसे बर्तन में उतार ले। उसका तिलक लगाने से शत्रुओं की बुद्धि स्तम्भित हो जाती है। २१—२२।

मन्त्र इस प्रकार है—"ॐनमो भगवते विश्वामित्राय नमः" इस चौदह अक्षर के मन्त्र को एकाग्रचित्त होकर जपे तो यह काम अवश्य सिद्ध हो जाता है। २३।

समूलयवनार्केण घर्षयेद्धरितालकम् ।
ताम्रपाते समुत्तार्य्य मुखस्थं सर्वशत्रुहृत् ॥ २४ ॥
पीत्वादौ कृकलासार्कमोंचामुण्डे भवेति च ।
वारुणोऽयं समाख्यातो मनुरेकादशाक्षरः ॥ २५ ॥

अथवा जड़ सहित प्याज या लहसुन के अर्क में ताँबे के बर्तन में हरताल घिसे। उसको मुख में रखने से सब शत्रु परास्त हो जाते हैं। परन्तु पहिले पिप्पली का अर्क पीकर "ॐ नमश्चामुंडायै नमो-नमः अथवा भवाय च" यह ग्यारह अक्षर का वारुण नाम का मन्त्र जपे। २४—२५।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कौतुक विधि

लिखेत्प्रसूनवच्चित्रं महिषक्षतजेन च।
दर्पणे तेन सम्मृष्टेऽवलोकेन्महिषाकृतिम्॥ २६॥

भैंसे के रुधिर से पुष्पाकार एक चित्र खींचे और उसी रुधिर से दर्पण को माँजकर उसमें अपना मुँह देखे तो भैंसे की-सी सूरत दिखाई देगी। २६।

ज्वालामुख्यम्लवेतं च महिषक्षतजेन च।
सम्मार्ज्य दर्पणं पश्येन्नृखराश्वोष्ट्ररूपकम्॥२७॥
गोदुग्धयर्केऽञ्जनं पुष्पे सेन्द्रजालिककज्जलैः।
दर्पणे दृश्यते रूपं पूर्वजन्मसमुद्भवम्॥ २८॥

ज्वालामुखी, अम्लवेत और भैंसे के रुधिर से दर्पण को माँजे। उसमें भी देखने से मनुष्य का रूप गधे, घोड़े अथवा ऊँट का सा देख पड़ता है। २७। गाय के दूध के अर्क में सुगन्धित फूलों को भिगोकर उनके इन्द्रजालरूपी कज्जल से दर्पण को माँजकर उसमें जो मनुष्य अपना मुँह देखे तो उसका स्वरूप पिछले जन्म का देख पड़ेगा। २८।

नार्य्याजरायुधूपेन चित्रमुक्तं प्ररोहति।
पुनर्माहिषधूपेन योगात्स्वस्थं भवेद्ध्रुवम्॥ २९॥
नस्येऽञ्जने तदा तेन कृतभ्रान्तिनिवारणम्।
तत्तुल्यागर्भशय्यायां धूपाद्भिन्ना न दृश्यते॥ ३०॥
प्रकटत्वं समायाति स्वर्णमाहिषधूपतः॥ ३१॥

स्त्री की जरायु की धूप देने से ऊपर बतलाया हुआ फूलों का चित्र

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हँसने लगता है, फिर भैंसिया गूगुल की धूप देने से जैसे-का तैसा हो जाता है। २९। उसी को सूँघने से अथवा आँखों में लगाने से भ्रान्ति दूर हो जाती है। उसको शय्या में लगा देने से स्त्री-पुरुष दोनों एक में मिले हुए दिखाई देते हैं। फिर उसी माहिष धूप के देने से अलग-अलग देख पड़ते हैं। ३०—३१।

मारणविधि

हालाहलं वत्सनाभं लाङ्गली चित्रमूलकम्।
श्वादजां चोर्णनाभिं च श्वेतां च गृहगोधिकाम्॥३२॥
एतदर्केण वस्त्राणि लिप्त्वा यः परिधारयेत्।
विमुक्तप्राणतयैवं वै जायतेऽसौ यमातिथिः॥ ३३॥
गोपालादस्थ्योरसस्तु यत्नादर्कं समुद्धरेत्।
पुनर्हालाहलार्केण भावितं तच्च मेलयेत्॥ ३४॥
महारसेन देयोऽसौ मालत्यर्कानुपानतः।
पर्याप्तमेकं रमते रमणीभिर्भुनक्ति च॥ ३५॥
स्तुतिं कुर्वन्ति वैद्यस्य किं वा धन्वन्तरिस्त्वयम्।
सोऽथ कुर्वीत वमनं रेचनं च म्रियेत च।
रुधिरच्छर्दिरित्यादिदुष्टदुःखैर्विदूषितः॥ ३६॥

हलाहल, वत्सनाभ, जलपीपल, चित्रक, मूली, खारी, मकड़ी और सफ़ेद छिपकली, इनका अर्क जिस स्त्री या पुरुष के वस्त्र में लगा दे वह संसार से मुक्त होकर यमराज का अतिथि हो जाय। ३२—३३। बाघ के मांस का अर्क, हलाहल विष के अर्क में मिलाकर चमेली के अर्क के साथ जिस पुरुष को दिया जाय वह एक ही बार भोजन और स्त्री से रमण कर सकता है। ३४—३५। उस वैद्य की सब लोग

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रशंसा करते हैं और कहते हैं कि ये साक्षात् धन्वन्तरि हैं। वह मनुष्य रुधिर की वमन और विरेचन करके दुःख से पीड़ित होकर मर जाता है। ३६।

अदृश्य विधि

विडालकराटकक्षौद्रो हालनीनवकेशरैः।
योगिन्यर्केऽञ्जनं क्षिप्त्वा चान्धकारे तु मेलयेत्॥३७॥
तदीयां गुटिकां कृत्वा क्षिपेत्त्रेधा तु सम्पुटे।
मुखमध्ये स्थिता यस्य सोऽप्यदृश्यः प्रजायते ३८॥
शिवालये तु कन्यार्कैः शिलायां शिलया सह।
ललाटे तिलकं कृत्वाऽदृश्यो भवति तत्क्षणात्॥३९॥
स्रोतोञ्जनं सप्तवारं कन्यार्केण च भावयेत्।
शरावे तत्तु संस्थाप्य स्वयं पाकगृहे पचेत्॥ ४० ॥
पुटपाकविधानेन पचेदेवं महानसे।
तदञ्जनाददृश्यः स्यात् पुनस्तत्स्नंसनात्स्फुटः॥४१॥
तारोनमोडामोडामरायादृश्यासिद्धिं करोति चेति४२

गोखुरू, शहद, हालनी, नवीन केसर, इन औषधों को जटामांसी के अर्क में अँधेरी जगह में बैठकर घोटे। जब गाढ़ा हो जाय तब उसकी गोली बनाकर तीन पर्त से लपेट कर उसे मुँह में रक्खे, तो अदृश्य हो जाय। ३७–३८। शिवालय में बैठकर घीकुवार के अर्क में मैनसिल घिसकर माथे पर तिलक लगाये, तो उसी क्षण अदृश्य हो जाय। ३६। ऊपर कहा हुआ स्रोतोञ्जन घीकुवार के अर्क में सात बार भिगोकर सकोरे में रखकर चूल्हे में पकावे। पुट-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पाक विधि से पकाकर उसका अंजन बनाले। वह अंजन आँख में लगाने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है और धो डालने पर फिर प्रकट होता है। ४०-४१। मन्त्र इस प्रकार है—"ॐ नमो डामराय मे अदृश्यसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा"। ४२।

मोहन विधि

कालोन्मत्तस्य पञ्चाङ्गं कृष्णसर्पसमन्वितम्।
शम्भोरस्त्राद्भावितस्य धूपो यस्मै प्रदीयते।
सम्मोहनमवाप्नोति नरो वा नरवाहनः॥ ४३॥
धत्तूरकस्य बीजानामर्केणैव विभावितम्।
हरितालकं तु दशधा भक्षणात्सर्वमोहकृत्॥ ४४॥
गुरुहेलीकामफलीकाकोदुम्बरिभूफली।
कन्याकुमारमूत्रेण सप्तवारेण भावयेत्॥ ४५॥
शोषयित्वा ततः पिष्ट्वा धत्तूरार्केण गोलिकाम्।
विधाय तिलकेनैव मोहयेद्भुवनत्रयम्॥ ४६॥

काले धतूरे की जड़, छाल, बीज, फूल और पत्तों का धूप काले साँप के साथ जिस मनुष्य अथवा वाहन को दिया जाय वह मोहित हो जाता है। ४३। धतूरे के बीजों का अर्क निकालकर उसमें हरताल दस बार भिगोकर जिसको खिला दिया जाय वह मोहित हो जाता है। ४४। गुरुहेली, कामफली, काकोदुम्बरिका (कठूमर) और भूफली, इन सबको मिला कुँवारे लड़के और लड़की के मूत्र में भिगोवे फिर उसको सुखाकर पीस ले, धतूरे के अर्क में उसकी गोली बनावे, जो मनुष्य उस गोली को घिसकर तिलक लगावे वह तीनो लोकों को मोहित कर सकता है। ४४-४६।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अग्निस्तम्भ विधि

रक्तपाभेकशशिजपाटलार्कोंजलस्थले ।
कृत्वाऽथ पाचयेत्तैलं यथोक्तविधिना ततः ॥ ४७ ॥
एतत्तैलस्य यो लेपं कारयेत्करपादयोः ।
अङ्गाराणामुपरि च नरो भ्रमति भूमिवत् ॥ ४८ ॥
सहव्येक्षुभवं पीत्वा चर्वयेत्तगरं वचाम् ।
तप्तलोहं लिहेत्पश्चात्कृतदोषो विशुद्ध्यति ॥ ४९ ॥
उच्चटाया रसेनैव सर्वाङ्गे लेपमाचरेत् ।
अङ्गाराद्यग्निमध्ये तु भ्रममाणो न पीड्यते ॥ ५० ॥
तारश्च वज्रकस्यान्ते अमृतं कुरुयुग्मकम् ।
स्वाहान्तास्थितिवर्णोऽथभग्निस्तम्भेनियोजयेत् ५१

जोंक, मेंढक, पाढ़र और कुमुदिनी का अर्क निकाले । उस अर्क के नीचे जल का पात्र रखकर यन्त्र द्वारा विधिपूर्वक उसका तेल तैयार करे । यह तेल हाथ-पैर में लगाकर मनुष्य अङ्गारों पर चल सकता है और उसके हाथ-पैर नहीं जलते । ४७–४८ । घी के साथ ईख का रस पीकर ऊपर से तगर और बच चबा ले, तो गरम लोहा भी चाट सकता है और किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता । ४९ । उटंगन का अर्क शरीर भर में लेप करके अङ्गारों पर चलने से भी कष्ट नहीं होता है । ५० । मन्त्र इस प्रकार है "ॐ तारकेश्वर वज्रस्यामृतं कुरु कुरु स्वाहा ।" यह पन्द्रह अक्षर का मन्त्र जपकर ऊपर लिखी हुई विधि के अनुसार अग्नि का स्तम्भन करे । ५१ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जलस्तम्भ विधि

सर्पाक्ष्यास्यस्य रक्तं तु सूर्यचन्द्रातपे धृतम्।
सुखेन जलमध्येऽसौ पर्यटेन्निजगेहवत्॥ ५२॥
श्वेतामूलं कुसुम्भस्य रसेन परिपोषितम्।
तेनैव रञ्जयेद्वस्त्रं तेनाङ्गं परिवेष्टयेत्॥ ५३॥
गम्भीरजलमध्येऽपि यावदिच्छं स तिष्ठतु।
जलस्तम्भस्य सिद्धिस्तु भवेन्मत्स्यार्कभक्षणात्५४॥
भैरवीयकपालस्य चूर्णं श्लेष्मान्तकं फलम्।
पिष्ट्वा तेनाजिनं लिप्त्वा घनन्द्व्यङ्गुलमानतः॥५५॥
तच्छुष्कान्निक्षिपेत्तोये तड़ागे वा नदीतटे।
तस्योपरि स्थितो योऽसौ न कदाचिन्निमज्जति॥५६॥

साँप के मुख और नेत्रों का रुधिर लेकर उसको धूप और चाँदनी में सुखाकर अपने पास रक्खे तो जल के ऊपर अपने घर की तरह सुख से चल सकता है। ५२। सफ़ेद घुँघची की जड़ कुसुभ के रस में पीसकर उसमें कपड़ा रँगकर अपने शरीर में लपेटे तो अथाह पानी में भी जहाँ चाहे वहाँ जा सकता है! जल के स्तम्भन की सिद्धि मछली का अर्क पीने से भी हो सकती है। ५३—५४। मनुष्य की खोपड़ी का चूरा और लसोढ़ा के फल पीसकर चमड़े के ऊपर दो अंगुल मोटा लगा दे। उसको सुखाकर तालाब या नदी के किनारे पानी में छोड़ दे। उस आसन में यह सिद्धि है कि वह कभी पानी में डूब नहीं सकता। ५५—५६।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उन्मत्तकरण विधि

ऊर्णनाभिश्च षड्बिन्दुः समांशः कृष्णकण्टकी ।
भावयेदेतदर्केण शत्रुगात्रे विनिक्षिपेत् ॥ ५७ ॥
स्फोटा भवन्ति सप्ताहान् म्रियते च तया रुजा ।
इन्दीवरमयूराणां पिच्छलेपात्सुखी भवेत् ॥ ५८ ॥
याम्यभौमे मृतो यस्तु तद्भस्मादाय रक्षयेत् ।
वैरिवर्चस्कसंयुक्तं शरावैः सम्पुटीकृतम् ॥ ५९ ॥
मृतकेशैस्तदावेष्ट्य शून्यागारे परित्यजेत् ।
यावच्छुष्यति सा विष्ठा तावच्छत्रुर्मृतो भवेत् ॥ ६० ॥
तारो नमो भगवते उं डामरेश्वराय च ।
अमुकं मारय ठठ एनं मन्त्रमुदीरयेत् ॥ ६१ ॥
भावितां धूर्त्तजार्केण भक्ष्ये पाने प्रदीयते ।
उन्मत्तो जायते स्वस्थः सिता गोदुग्धपानतः ॥ ६२ ॥
लवमुखीरुद्रहारः कण्टकीकण्टकैः समम् ।
वृकविष्ठां समादाय दक्षिणाशासमुद्भवाम् ॥ ६३ ॥
विसृजेच्छयने यस्य सद्यश्शत्रोरपस्मृतिः ।
क्षीरसंघृष्टमुण्डस्य शय्यात्यागेऽप्यपस्मृतिः ॥ ६४ ॥

मकड़ी और षड्बिन्दु को समान भाग लेकर काली कटेहरी के अर्क में भिगोवे । उसको शत्रु के शरीर पर छिड़क दे तो सात दिन में उसके शरीर भर में फोड़े निकल आवें और वह उसी रोग में मर जाय । नीलाकमल और मोर का पंख लेप करने से वह दुःख दूर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हो जाता है । ५७—५८ । जो मनुष्य मंगल के दिन भरणी नक्षत्र में मरा हो उसकी भस्म लेकर यत्न से रक्खे। उसमें शत्रु की विष्ठा मिलाकर, सकोरे से मूँदकर, मुर्दे के बालों से लपेटकर सूने घर में फेंक दे। जब वह विष्ठा सूखेगी तब उसका शत्रु भी मर जायगा। ५९—६०। मन्त्र इस प्रकार है—"ॐ नमो भगवते डामरेश्वराय अमुकं मारय मारय ठः ठः।" इस मन्त्र का विधिपूर्वक जप करे। यदि ऊपर बतलाई हुई भस्म धतूरे के अर्क में भिगोकर शत्रु को खिला दे तो वह पागल हो जाय। दूध और मिश्री पीने से वह स्वस्थ हो सकता है। ६१—६२। लवमुखी, नागदमनी, और काँटों समेत कटेहरी को जमालगोटे के अर्क में भिगोकर उसमें हरताल मिलावे। इसकी धूप से शत्रु पागल हो जाता है। कालीजीरी की धूप देने से स्वस्थ हो सकता है। दक्षिण दिशा में पड़ी हुई भेड़िया की विष्ठा लेकर शत्रु के सोने की जगह में फेंक दे तो वह शीघ्र पागल हो जाता है। खोपड़ी को दूध में घिसकर शत्रु की शय्या पर छोड़ दे, तो भी वह पागल हो सकता है। ६३—६४।

दूरदेशगमन विधि

शरपुङ्खीकोकिलाक्षः काकजङ्घा च भृङ्गकः।
एतदर्कश्चित्रकेण पुष्येऽर्के ज्येष्ठयोद्धरेत्॥ ६५॥
पीत्वा तदर्कमेतेषां मूलैस्तु कटिबन्धनम्।
वायुवद्भ्रमते पृथ्वीं प्रयासेन विवर्जितः॥ ६६॥
विशदाकाकजङ्घा च तथा कामफलानि च।
कृष्णायाः सुरभेर्दुग्धं पत्रवृक्षस्य वल्कलम्॥ ६७॥
एतेषां पादलेपेन योजनानां शतं व्रजेत्।
श्वेतार्कस्य च मूलं तु शुक्लवंशस्य रोचना॥ ६८॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अजाया नवनीतेन पुष्यनक्षत्रपाचितैः ।
लेपेन पादतलयोर्व्रजेत्कामिकमार्गकम् ।। ६९ ।।

जब पुष्य या ज्येष्ठा नक्षत्र पर सूर्य हों तब सरफोंका, तालमखाना, काकजंघा, भँगरा और चीता का अर्क निकाले । इस अर्क को पीने से और इन्हीं वृक्षों की जड़ें कमर में बाँधने से मनुष्य वायु की तरह पृथिवी पर, जहाँ चाहे, आराम से घूम सकता है ।६५–६६। सफ़ेद काकजंघा, कामफली, काली गाय का दूध और पत्रज की छाल, इन सबको पीसकर पैर में लेप करने से मनुष्य सौ योजन तक चल सकता है । सफ़ेद मदार और सफ़ेद बाँस की जड़ तथा गोरोचन इनको पुष्य नक्षत्र में बकरी के मक्खन में पकाकर पैर के तलुओं में लेप करने से, जितनी दूर चाहे, मार्ग चल सकता है । ६७–६९ ।

आवेश विधि

आमर्यर्कं तु पीत्वादौ पश्चादावेशनं चरेत् ।
प्रेतास्यगं पुरं त्वत्र धूपितं च चिताग्निना ।। ७० ।।
सालनिर्य्यासधूपेन जगदावेशितं भवेत् ।
कृष्णागुरुं तालकं च कनकस्य फलानि च ।। ७१ ।।
उग्रगन्धाकुक्कुटाण्डः सकलानां प्रधूपनात् ।
धूपेनावेशयेत्सर्वं यावद्देहं न संशयः ।। ७२ ।।
मृडप्रियप्रसूनस्य पञ्चाङ्गानि च भावयेत् ।
यमवाहनरक्तेन यावत्प्रकृतिसंख्यकम् ।। ७३ ।।
तदष्टमांशधूपस्तु वत्सनाभेन संयुतः ।
चेष्टां हरति सर्वेषां पुरुषश्चायसाकृतिः ।। ७४ ।।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भँवरी का अर्क निकालकर पिलावे। उसके बाद मृगी रोग का स्मरण करे, फिर मुर्दे के मुँह में रक्खे हुए गुगल की धूप चिता की अग्नि में दे। उसके बाद राल की धूप दे। ऐसा करने से संसार भर को अपस्मार के रोगी के समान किया जा सकता है। अथवा काला अगरु, हरताल, धतूरे के फल, बच और मुर्गी का अंडा, इनकी धूप देकर सब प्राणियों को मृगी के रोगी के समान बनाया जा सकता है। इसमें रत्ती भर भी सन्देह नहीं है। ७०—७२। धतूरे के फूल, बीज, पत्ते, जड़ और छाल को कूटकर भैंसे के रुधिर में इक्कीस बार भिगोवे फिर उसके आठवें हिस्से की वत्सनाभ के साथ धूनी देने से मनुष्य की चेष्टा बिगड़ जाती है। इससे मनुष्य लोह के समान जड़ हो जाता है। ७३—७४।

संभोगसन्धि विधि

सद्यो मृतस्य ग्रीवार्कक्लिन्नवस्त्रं करीरके।
दृढीकृतं तु कीलेन शय्यायां परिधारयेत् ॥ ७५ ॥
युक्तावेतौ प्रजायेतां तदा नारीनरौ भृशम्।
वंशाद्वस्त्रस्य मोक्षेण मुक्तिः स्याच्च तदा तयोः ॥७६॥
समुद्रगामिनीनदीतदीयतीरमृत्तिकाम्।
श्वकेशमस्य रेतसा सुरञ्जयेत्ततो नरः॥ ७७ ॥
एतस्य वटिकां कृत्वा कोलमात्रां ददेत्तु यः।
सर्वाऽऽसनानां बन्धस्तु मोक्षोऽस्यार्कस्य पानतः७८

मुर्दे के गले का अर्क निकालकर उसमें साफ़ कपड़ा भिगोवे, उस कपड़े को बाँस में कील से ठोंक कर मैथुन करनेवाले स्त्री-पुरुष की शय्या पर रख दे तो वे दोनों परस्पर जुड़े हुए रह जायँगे। जब

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कील उखाड़कर बाँस से कपड़ा अलग किया जायगा, तभी वे छूट सकेंगे। ७५-७६। समुद्र में गिरनेवाली नदी के किनारे की मिट्टी और कुत्ते के बाल कुत्ते के ही वीर्य में रँगे। बेर के बराबर उसकी गोली बनाले। वह गोली जिसको दे उसके सब आसन बँध जायँगे, फिर उसी का अर्क पीने से छूट सकते हैं। ७७-७८।

भूख बढ़ाने की विधि

अग्न्यर्कं तु समाकृष्य पिबेत्पश्चाद्भुजिं चरेत्।
वृन्तार्कमर्कपुष्पस्य पीत्वा पीठे निषिच्य च ॥७९॥
सोऽतिभुङ्क्ते घृतैः सार्द्धं बह्वन्नं भीमसेनवत्।
गृहीत्वाऽऽमन्त्र्य सायं तु विभीततरुपल्लवान् ॥८०॥
आक्रम्य दक्षजङ्घायां विंशत्याहारभुग्भवेत्।
अर्कमामन्त्र्य सन्ध्यायां शतपुष्पस्य मालिकाम् ८१
शीर्षे बद्ध्वा कृपणतां त्यक्त्वा भीमवदत्त्यसौ ॥८२॥

जो मनुष्य चीते का अर्क निकालकर पिये और उसके बाद भोजन करे अथवा मदार के फूलों की ढेंपी का अर्क पिये और आसन पर भी छिड़क ले, तो वह मनुष्य भीमसेन के समान घी के साथ बहुत सा भोजन कर सकता है। सन्ध्या के समय बहेड़ा के वृक्ष को निमन्त्रण दे आवे और प्रातःकाल उसके पत्ते लाकर दाहिनी जाँघ के नीचे दबाकर बैठ जाय तो वह मनुष्य बीस मनुष्यों के बराबर भोजन कर सकता है। अथवा सन्ध्या के समय मदार के वृक्ष को निमन्त्रण देकर प्रातःकाल उसके सौ फूल लावे। उन फूलों की माला बनाकर सिर में बाँध ले तो वह मनुष्य कृपणता छोड़कर भीमसेन के समान भोजन करे "ॐ नमः सर्वभूतादिपतये मम ग्रासं शोषय शोषय स्वाहा" यह मन्त्र विधिपूर्वक जपना चाहिए। ७९-८२।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

निराहार विधि

गणेशप्रियमूलं तु तुरङ्गाह्वश्च मूलकम् ।
नीलोत्पलस्य मूलानि कसेरुं चापि पाचयेत् ।
तत्पायसञ्च सघृतं भुक्तं मासं क्षुधापहम् ॥ ८३ ॥
उदुम्बरशमीजम्बूबीजं मूलाशिरीषजम् ।
बीजं तु चूर्णितं भुक्तं मासार्द्धं क्षुत्तृषापहम् ॥८४॥
कोकिलाक्षस्य बीजं तु महिषीदुग्धक्षौद्रयुक् ।
द्वादशाहं क्षुधां हन्यादेतदर्को न संशयः ॥ ८५ ॥

गणेशजी की प्रिय मूषाकर्णी, असगंध, मूली, नीलकमल की जड़ और कसेरू, इन सबकी खीर बनावे । यह खीर घी के साथ खाने से एक महीना तक भूख नहीं लगती । ८३ । गूलर, शमी, जामुन, मूली और सिरस के बीज, इन सबको महीन पीसकर खाने से भूख नहीं लगती । ८४ । तालमखाना के बीज भैंस का दूध और शहद, इन सबका अर्क निकालकर पीने से बारह दिन तक भूख नहीं लगती । ८५ ।

चोरभयनिवारण विधि

टङ्कलोहाश्मरीभेदजातार्केण निषेचयेत् ।
सहस्रधातु तत्पत्रे मन्त्रमेतं लिखेन्नरः ॥ ८६ ॥
पिशाचिनि नमस्तारे चोरिणीतिपदं तथा ।
नवाक्षरो मनुरयं भीतिकुष्ठाभ्रभेदकः ॥ ८७ ॥
एतत्प्रभावतः कोऽपि मेघशब्दं शृणोति न ।
योगनिद्रे विष्णुमाये सर्वान्निद्रय निद्रय ॥ ८८ ॥
नरस्त्विमं जपेन्मन्त्रं विंशद्वर्णमनुत्तमम् ।
विश्वोपकुल्यागुडयोर्बलेर्निद्रयते जगत् ॥ ८९ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पीत्वादौ वृद्धदार्वर्कं धत्तूरं जलभावितम् ।
मासमञ्जयात्तेन नेत्रे जिताक्षो निशि पश्यति ६०
तारो नमो ब्रह्मवेषं परिरक्षद्विष्ठस्मनुः ।
मन्वक्षरामिमं सिद्ध्यै पञ्चाङ्गविधिना जपेत् ॥६१॥
गृहीत्वा सप्तपाषाणान् कट्यां बद्ध्वा व्रजेत्ततः ।
मुष्टावादाय दुःस्पर्शां लिप्त्वार्कं पादयोस्ततः ६२
धत्तूरार्कं पिबेच्छीघ्रं विक्षेपो जायते क्षणात् ।
कुर्वन्ति स्वेषु कलहं चौराणां स्तम्भने क्षमः ६३
चौरभीत्यां कठिल्लस्य ब्रह्मलब्धवरस्य च ।
तेषां चौरभयं नास्ति ये स्मरन्ति च नित्यशः ६४

चार माशा लोह का चूर्ण और पाषाणभेद का अर्क निकाले और उस अर्क से पत्ते पर हज़ार बार आगे कहा हुआ मन्त्र लिखे "ॐ नमस्ते चोरिणि पिशाचिनि शमय शमय स्वाहा"। यह बीस अक्षर का मन्त्र भय और कुष्ठ आदि का नाशक है। इस मन्त्र के प्रभाव से मेघ का शब्द भी नहीं सुन पड़ता। "ॐ नमो योगनिद्रे विष्णुमाये सर्वान्निद्रय निद्रय स्वाहा"। यह बीस अक्षर का मन्त्र जपकर गुड़ और पिप्पली की बलि देने से सारा संसार निद्रित हो सकता है। ८६–८९। पहले विधारा का अर्क पिये। उसके बाद धतूरे का भिगोया हुआ पानी आँखों में लगावे, तो वह मनुष्य एक महीने में दूसरों के नेत्रों को जीत ले अर्थात् उसे कोई देख न सके और वह रात को देखने लगे। ९०। "ॐ नमः ताराय वेषम् रक्ष रक्ष ठःठः स्वाहा"। यह चौदह अक्षरों का मन्त्र पञ्चाङ्ग विधि अर्थात् ब्रह्मचर्य

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आदि नियम से जपे तो सिद्ध हो जाता है। ९१। पत्थर के छोटे छोटे सात टुकड़े लेकर कमर में बाँध ले तो जहाँ जी चाहे वहाँ जा सकता है और मुट्ठी में भटकटैया लेकर उसी का अर्क पैरों में लेप करके चोरी करने जाय तो उसका काम सिद्ध हो सकता है। ९२। धतूरा का अर्क पीने से शीघ्र ही चित्त विक्षिप्त हो जाता है और आपस में झगड़ा-फसाद होने लगता है। यह प्रयोग चोरों के रोकने के लिए बड़ा अच्छा है। ९३। करेले का अर्क घर में छिड़कने, या रखने से चोरों का भय नहीं रहता। यह ब्रह्माजी का वरदान है। ९४।

सर्व कार्य सिद्ध करने की विधि

श्रीबीजं कामबीजं च लज्जाबीजं तथैव च।
उद्धरेद्यत्नतो देवि कार्यसिद्धिसमुत्सुकः ॥ ९५ ॥
सहस्रेण दशैनैव जपस्य शृणु पार्वति।
मृत्तिकायां ताम्रपीठे भूर्जपत्रे तथैव च॥
चन्दनेन सुरक्तेन षट्कोणं यन्त्रमावहेत् ॥ ९६ ॥
मंत्रेणानेन दिव्येन धृतेन कण्ठदेशतः।
दूरतो धावतेऽनिष्टं प्रीताः स्युः सर्वदेवताः ॥ ९७॥
संसारे सततं देवि सहजं घोरसङ्कटे।
इदं वै धारयेद्यत्नाद्यंत्रं सर्वशुभावहम् ॥ ९८ ॥
रोगशोकमहामारीहननं धारयेत्तथा।
मंगलानां शतानां च साधनं शृणु पार्वति ॥ ९९॥
नान्यथा भाषितं सत्यं सत्यं सत्यं महेश्वरि।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन धारयेत्पूजयेत्सदा ॥ १०० ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हे देवि ! श्रीबीज, कामबीज और लज्जाबीज, अर्थात् श्रीं क्लीं ह्रीं का दस हज़ार जप करने से सब काम सिद्ध हो जाते हैं। मिट्टी, ताँबा अथवा भोजपत्र पर लाल चन्दन से षट्कोण यन्त्र बनावे और उसके बीच में ऊपर लिखे हुए तीनों बीजमन्त्र लिखे। इस दिव्य यन्त्र को गले में पहन लेने से सब अनिष्ट दूर हो जाते हैं और सब देवता प्रसन्न होते हैं। हे देवि, इस संसार में निरन्तर विपत्तियाँ घेरे रहती हैं जो मनुष्य विपत्तियों से बचना चाहे वह यह यन्त्र धारण करे। इस यन्त्र के धारण करने से अनेक प्रकार के रोग, शोक और महामारी रोग दूर हो जाते हैं। इससे सैकड़ों मंगलजनक कार्य सिद्ध होते हैं। यह मेरा वचन असत्य नहीं हो सकता। जो कुछ मैंने कहा है वह सब बिलकुल सत्य है, अतएव यत्नपूर्वक इस यन्त्र की पूजा करके इसे धारण करे। ९५—१००।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नवाँ शतक

शिरापोषकगण

तिलपर्णी समुद्रस्य फेनोऽथ नवधा तथा।
समुद्रास्थीनि तस्यैव शिरायाः पोषको गणः ॥१॥

लालचन्दन, समुद्रफेन और नव प्रकार की समुद्र की अस्थि, यह शिरापोषक गण है। १।

वामनगण

ज्योतिष्मती च हेमाह्वा धत्तूरो नागपुष्पिका।
माक्षिकं दारुभद्रं च गणोऽयं वामनः स्मृतः॥ २ ॥

मालकाँगनी, हेमाह्वा (चोक), धतूरा, नागपुष्पी, सोनामाखी और देवदारु यह वामनगण है, अर्थात् वमन करानेवाला है। २।

रञ्जनगण

चतुर्विधा हरिद्रा तु पतङ्गो रक्तचन्दनम्।
नीलीकुसुम्भमञ्जिष्ठा लाक्षामेहन्दिकिंशुकः॥ ३ ॥
जलपुष्पं चाञ्जनं च विमला पारिजातकः।
पाण्डोः फलं बीजकश्च गणोऽयं रञ्जनः स्मृतः॥ ४ ॥

चार प्रकार की हल्दी (हल्दी, दारुहल्दी, वनहल्दी, आँबाहल्दी), पतङ्ग, लाल चन्दन, नील, कुसुम्भ, मँजीठ, लाख, मेंहदी, ढाक के फूल, जलपुष्प, तूतिया, सातला, पारिजात, पाण्डु का फल और विजयसार, यह रञ्जनगण है, अर्थात् इनसे रङ्ग बनाया जा सकता है। ३—४।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नेत्र्यगण

रसाञ्जनं द्विधा प्रोक्तं त्रिफला लोध्रकद्वयम् ।
कुमारिका कुलत्था च गणोऽयं नेत्र्यसञ्ज्ञकः ॥५॥

दो प्रकार का रसौत, त्रिफला, दोनों लोध, घीकुवार और कुलथी यह नेत्र्यगण है, अर्थात् आँखों के लिए हितकारी है । ५ ।

त्वच्यगण

तैलं तु नवधा प्रोक्तं वाकुची चक्रमर्दकम् ।
स्थौणेयं पर्पटी स्पृक्का त्वच्योऽयं गण उच्यते ॥६॥

नव प्रकार के तेल होते हैं, जैसे तिल्ली, सरसों और रेंड़ी आदि । बाकुची, पँवार, कुकरौंधा, पपड़ी और स्पृक्का यह त्वच्यगण है, अर्थात् त्वचा के लिए हितकारी है । ६ ।

उपविषगण

भल्लातकं चातिविषा चतुर्द्धा स्यात्तु खाखसम् ।
करवीरं द्विधा प्रोक्तमहिफेनं द्विधा मतम् ॥ ७ ॥
धत्तूरस्तु चतुर्द्धा स्याद् द्विधा गुञ्जा तु निर्विषी ।
विषतिन्दुर्लाङ्गली च गणश्चोपविषाभिधः ॥ ८ ॥

भिलावाँ, अतीस, चार प्रकार के खसखस, दो प्रकार के कनेर, दो प्रकार की अफ़ीम, चार प्रकार के धतूरा, दो प्रकार की घुँघची, निर्विषी, कुचला और जलपिप्पली, यह उपविषगण है । ७–८ ।

जलपुष्पगण

अष्टधा कमलानि स्युर्जलसी च चतुर्विधा ।
जलजीवी कुम्भिका च जलपुष्पगणस्त्वयम् ॥६॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आठ प्रकार के कमल, चार प्रकार की जलेठी, जलजीवी और कुम्भिका, यह जलपुष्पगण है । ९ ।

कन्दगण

आलूकमष्टधा प्रोक्तं मूलकं त्वष्टधा तथा ।
अष्टधा कदलीकन्दो गृञ्जनं द्विविधं मतम् ॥ १० ॥
हस्तकन्दश्च लशुनं पलाण्डुर्द्विविधो मतः ।
अष्टधा पद्मिनीकन्दो वाराहीकन्दलक्ष्मणः ॥ ११ ॥
केमुकं मुशलीकन्दो विदारी च कसेरुकः ।
शतावरी चाश्वगन्धा बृहत्पाण्डु सुदर्शनः ॥ १२ ॥
आर्द्रकं शक्रकन्दश्च कोलकन्दो नगोद्भवः ।
मौलिकन्दश्शूरणश्च ज्ञेयः कन्दगणस्त्वयम् ॥ १३ ॥

आठ प्रकार के आलू, आठ प्रकार की मूली, आठ प्रकार की कदली की कन्द, दो प्रकार की गाजर, हस्तकन्द, लहसुन, दो प्रकार का प्याज, आठ प्रकार की कमलिनीकन्द, बाराहीकन्द, लक्ष्मणकन्द, केमुककन्द, मूसलीकन्द, बिदारीकन्द, कसेरूकन्द, शतावरी, असगन्ध, बृहत्कन्द, सुदर्शनकन्द, अदरख, शकरकन्द, बेरकन्द, पहाड़ीकन्द, मौलिककन्द और सूरन अर्थात् जिमीकन्द, यह कन्दगण है । १०–१३ ।

लवणगण

शाकम्भरी च सामुद्रं चोद्भिदं विडसुवर्चलम् ।
सैन्धवं नीलकण्ठं च पङ्कं लवणमष्टधा ॥ १४ ॥

साँभर, समुद्रलवण, उद्भिज्जलवण, विडलवण, सोंचरलवण, सेंधा-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लवण, कालानमक और पङ्गु नाम का लवण ये आठ प्रकार के नमक हैं । १४ ।

क्षारगण

सर्जिक्षारो यवक्षारष्टङ्कणं च सुवर्चिका ।
पलाशवज्रीशिखरी क्षारसप्तकमीरितम् ॥ १५ ॥

सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, सोरा, ढाक का खार, थूहर और अपामार्ग का खार, ये सात प्रकार के खार हैं । १५ ।

अम्लगण

जम्बीरद्वितयं बीजपूरं मधुककर्कटी ।
चिञ्चानिम्बूकर्मरङ्गं वृक्षाम्लं चाम्लवेतसम् ॥ १६ ॥
नैपालं चणकाम्लं च चमीरं तगरं तथा ।
धान्याम्लमम्लपत्री च चुक्रमम्लगणास्त्वयम् ॥ १७ ॥

दो प्रकार के जम्भीरी नींबू, बिजौरा नींबू, चकोतरा, इमली, कागजी नींबू, कमरख, वृक्षाम्ल, अम्लवेत, नैपाली नींबू, कच्चे चने, चमीर, तगर, धान्याम्ल, अम्लपत्री और चूक, यह अम्लगण है । १६–१७ ।

फलगण

आम्रं तु त्रिविधं प्रोक्तं द्विधाम्रातकमुच्यते ।
राजाम्रं चैव कोशाम्रं पनसस्त्रिविधो मतः ॥ १८ ॥
कदली त्वष्टधा प्रोक्ता लकुचस्त्रिर्भिटं द्विधा ।
त्रिधा तु नारिकेरं स्यात्कालिन्दं द्विविधं मतम् ॥ १९ ॥
द्विविधं खर्जूरकं स्यात्पञ्चधा कर्कटी भवेत् ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पूगीफलं चतुर्धा स्याद् द्विधा तालफलं भवेत् ॥२०॥
बिल्वं कपित्थं नारङ्गं तिन्दुकं स्याच्चतुर्विधम् ।
राजाम्रोऽप्यथ जम्बूश्च बदरं चक्रमर्दकः ॥२१॥
द्विधा चैतानि चत्वारि द्विविधं तु पियालकम् ।
क्षीरिका पद्मबीजं च क्षुरं शृङ्गाटकं परम् ॥ २२ ॥
परूषकं मधूकश्च दाडिमं स्याच्चतुर्विधम् ।
द्विधा गौरीफलं कोलं शृङ्गारीमिष्टबीजकम् ॥२३॥
बहुवारश्च कतकं सुलेमानीबदामकः ।
द्राक्षा खर्जूरिका द्वेधा वातादोऽक्षोटपीलुकम् ॥२४॥
मिष्टनिम्बूफलं सेवं सिलीन्ध्रं कट्फलं तथा ।
आतङ्कोतामृतफलं प्रोक्तः फलगणस्त्वयम् ॥२५॥

तीन प्रकार के आम, दो प्रकार के अमरा, राजाम्र, कोशाम्र, तीन प्रकार के कटहल, आठ प्रकार के केला, बड़हर, दो प्रकार की कचरिया, तीन प्रकार के नारियल, दो प्रकार के तरबूज, दो प्रकार के खजूर, पाँच प्रकार की ककड़ी, चार प्रकार की सुपारी, दो प्रकार के ताड़ के फल, चार प्रकार के बेल, कैथा, नारङ्गी और तेंदुआ, जामुन, बेर, पँवाड़, दो प्रकार की चिरौंजी, खिन्नी, कमलगट्टा, मखाना, सिंघाड़ा, फालसा, महुआ, चार प्रकार के अनार, दो प्रकार के गोरीफल, बेर, दोनों सिंघड़ी, मीठा बीज, लसोढ़ा, निर्मली, सुलेमानी, दोनों बादाम, दाख, खजूर, अखरोट, पीलू, मीठा नींबू, सेब, सिलीन्ध्र, कायफल, आतङ्कोत और अमृतफल ये फल हैं। १८—२५ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शालिगण

रक्तशालिः सकलमः पाण्डुकः शकुनाहृतः ।
सुगन्धकः कर्दमको महाशालिश्च दूषकः ॥ २६ ॥
पुष्पाण्डकः पुण्डरीकस्तथा महिषमस्तकः ।
दीर्घशूकः काञ्चनको हायनो लोध्रपुष्पकः ॥ २७ ॥
षष्टिकोऽनङ्गमालश्च पार्वतीयश्च भिञ्झणः ।
हकुवा राजभोगश्च प्रोक्तः शालिगणस्त्वयम् ॥ २८ ॥

रक्तशालि, कलम, पाण्डुक, शकुनाहृत, सुगन्धशालि, कर्दमक, महाशालि, दूषक, पुष्पांडक, पुण्डरीक, महिषमस्तक, दीर्घशूक, काञ्चनक, हायन, लोध्रपुष्पक, साठी, अनङ्गमाल, पार्वतीय (पहाड़ी-धान), भिञ्झण, हकुआ और राजभोग, यह शालिगण है।२६—२८।

शिम्बीधान्यगण

त्रिधा यवश्च गोधूमो मुद्गः षड्विध ईरितः ।
त्रिविधः प्रोच्यते माषो राजमाषस्त्रिधा मतः ॥२९॥
मकुष्ठस्तुवरी त्रेधा निष्पावश्च मसूरकः ।
त्रिधा चणक उद्दिष्टः कलायस्त्रिविधः स्मृतः ॥३०॥
सर्षपस्त्रिविधः प्रोक्तः तिलस्तु त्रिविधस्स्मृतः ।
अतसी तुवरी राजी शिम्बीधान्यगणस्त्वयम् ॥ ३१ ॥

तीन प्रकार के जव और गेहूँ, छः प्रकार की मूँग, तीन प्रकार के उड़द, तीन प्रकार की लोबिया, मोथी, तीन प्रकार की अरहर, भटवाँस, तीन प्रकार की मसूर, चना और मटर, तीन प्रकार की सरसों, तीन प्रकार के तिल, अतसी, तुवरी और राई, ये शिम्बीधान्य अर्थात् फलियों के धान्य हैं। २९—३१।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

क्षुद्रधान्यगण

कङ्गुश्चतुर्विधः प्रोक्तः श्यामकः कङ्गुवद्गुणः ।
कोद्रवो द्विविधः प्रोक्तो वंशबीजं शरोद्भवम् ॥ ३२ ॥
कुसुम्भबीजं नीवारः पवनश्च गवेधुका ।
यवनालो बाजरी च क्षुद्रधान्यगणस्त्वयम् ॥ ३३ ॥

चार प्रकार की काकुन, साँवाँ, दो प्रकार के कोदो, बाँस के बीज, सर्पत के चावल, कुसुम के बीज (बरैं), नीवार, सेहुआँ, जुआर और बाजरा, ये क्षुद्र धान्य हैं । ३२–३३ ।

पत्रशाकगण

द्विर्वास्तुकं पोतकी द्विर्द्विर्मार्षस्तण्डुलीयकः ।
द्विधा पालक्यपि त्रेधा नाडिकं कालशाककम् ॥ ३४ ॥
कलम्बी च बृहल्लोणी चिञ्चुश्चाङ्गेरि चुक्रिका ।
सुनिषण्णश्च गोजिह्वा द्रोणपुष्पी पटोलकम् ॥ ३५ ॥
शतपुष्पा मेथिका च कुञ्जरा तीक्ष्णकण्टका ।
धान्यकं चक्रमर्दश्च जीवन्ती काकमाचिका ॥ ३६ ॥
पर्पटः कासमर्दश्च द्विधा राजीगरी ततः ।
लिङ्गदण्डो द्विधा कोष्ठपत्रशाकगणस्त्वयम् ॥ ३७ ॥

दो प्रकार का बथुआ, दो प्रकार की पोई, दो प्रकार का मरसा, दो प्रकार की चौराई, दो प्रकार की पालक, तीन प्रकार का कालशाक, तीन प्रकार का केरमुआँ, कलम्बी, बृहल्लोणी (लोनियाँ), चिञ्चु, चाङ्गेरी, चूक, सुरवारी, गोभी, गूमा, परवल, शतपुष्पा (सौंफ), मेथी, धवई, धनियाँ, चकउड़, जीवन्ती, मकोय, पित्तपापड़ा, कसौंदी, दोनों राई, लिङ्गदण्डी और कोठशाक, यह पत्रशाकगण है । ३४–३७ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पुष्पशाकगण

काञ्चनारो द्विधा रास्ना खदिरः शाल्मली द्विधा।
चतुःसौभाञ्जनोऽगस्तिः पुष्पशाकगणस्त्वयम् ३८

कचनार, दोनों रास्ना, खैर, दो प्रकार का सेमल, चार प्रकार का सहिंजन और अगस्ति, यह पुष्पशाकगण है। ३८।

फलशाकगण

द्विकूष्माण्डं त्रिधाऽलाबूः करसी द्विश्च डिण्डिशः।
द्विकारवेल्लं वृन्ताकं चतुःकर्कोटकी तथा ॥ ३९ ॥
त्रिधा कोशातकी बिम्बी द्विधा शिम्बी त्रिधा भवेत्।
दक्षिणा पञ्चधा डोडी कण्टकारिफलं द्विधा ॥४०॥
पिण्डारकं च गोविन्दं द्विधा चैलं तथैव च।
श्लेष्मान्तकं काकतिन्दुफलं शाकगणस्त्वयम् ४१

दो प्रकार के कुम्हड़ा, तीन प्रकार की लौकी, करसी, टिंडा, दो प्रकार के करेला, बैंगन, चार प्रकार का खेकसा, तीन प्रकार की तुरई, दो प्रकार के कुँदरू, तीन प्रकार की सेम, दक्षिण देश में उत्पन्न होनेवाली पाँच प्रकार की डोडी, दो प्रकार के भटकटैया के फल, पिण्डार, दो प्रकार का गोंदा, चैलफल, लसोढ़ा और तिन्दू के फल, यह फलशाकगण है। ३९–४१।

विलेशयगण

हरिणैणकुरङ्गर्ष्यपृषतन्यङ्कुशम्बराः।
राजीवोऽपि च मुण्डी चेत्याद्या जाङ्गलसंज्ञकाः ४२

हरिण, एण, कुरंग, ऋष्य, पृषत, न्यङ्कु, शंबर, राजीव और मुण्डी, ये भक्ष्य जंगली जीव हैं। ४२।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गोधाशशभुजङ्गाखुशल्लकाद्या बिलेशयाः ।
चक्षुन्धरीस्थूलमूषघूँसाद्यास्तु बिलेशयाः ॥ ४३ ॥

गोह, खरगोश, साँप, चूहा, साही, छछूंदर, बड़ा चूहा और घूँस आदि, यह बिलेशयगण है । ४३ ।

गुहाशयगण

सिंहव्याघ्रवृकाऋक्षतरक्षुद्वीपिनस्तथा ।
बभ्रुजम्बूकमार्जारा इत्याद्याः स्युर्गुहाशयाः ॥४४॥

सिंह, बाघ, भेड़िया, रीछ, चीता, तेंदुआ, नेवला, सियार और बिलार आदि, यह गुहाशयगण अर्थात् गुफा में रहनेवाले जीव हैं । ४४ ।

पर्णमृगगण

वनौको वृक्षमार्जारो वृक्षमर्कटिकादयः ।
एते पर्णमृगाः प्रोक्ताः सुश्रुताद्यैर्महर्षिभिः ॥ ४५ ॥

बन्दर, वनबिलार और वृक्षमर्कटिका, ये पर्णमृग हैं । ४५ ।

विष्किरगण

वर्त्तकालाववर्त्तीरकपिञ्जलकतित्तिराः ।
पादायुधः कलिङ्गश्च चकोराद्यास्तु विष्किराः ४६

बटेर, लवा, वर्तीर, सफ़ेद तीतर, तीतर, मुर्ग, गौरैया और चकोर आदि पक्षी विष्किर कहलाते हैं । ४६ ।

प्रतुदगण

हारीतो धवलः पाण्डुश्चित्रपक्षो बृहच्छुकः ।
पारावतः खञ्जरीटः पिकाद्याः प्रतुदाः स्मृताः ॥४७॥

हारीत, बगुला, जंगली तीतर, मोर, बड़ा तोता, कबूतर, खंजन और कोयल आदि पक्षी प्रतुद कहलाते हैं । ४७ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रसहगण

काको गृध्र उलूकश्च चिल्लश्च शसघातकः ।
चाषो भासश्च कुरर इत्याद्याः प्रसहाः स्मृताः ४८

कौआ, गिद्ध, उल्लू, चील्ह, बाज़, नीलकंठ, भास और कुरर आदि पक्षी प्रसह अर्थात् छीनकर खानेवाले हैं । ४८ ।

ग्राम्यपशु

छागमेषवृषाश्चाश्वा ग्राम्याः प्रोक्ता महर्षिभिः ।

बकरा, भेड़ा, बैल और घोड़ा, ये ग्राम्य पशु हैं ।

कूलेचरपशु

लुलायगण्डवाराहचमरीवारणादयः ।
एते कूलेचराः प्रोक्ता यतः कूले चरन्त्यपाम् ॥४६॥

भैंसा, गैंडा, सुअर, सुरागाय और हाथी आदि पशु कूलेचर अर्थात् जल के समीप रहनेवाले पशु हैं । ४६ ।

प्लवजीव

हंससारसकारण्डचक्रक्रौञ्चशरारिकाः ।
नन्दीमुखी सकादम्बा बलाकाद्याः प्लवाः स्मृताः ५०

हंस, सारस, हारिल, चकवा, क्रौंच, शरारि (आड़ी), नन्दीमुखी, बत्तख़ और बगुला आदि पक्षी सब अर्थात् तैरनेवाले हैं । ५० ।

कोशस्थजीव

शङ्खः शङ्खनखश्चापि शुक्तिशम्बूककर्कटाः ।
जीवा एवंविधाश्चान्ये कोशस्थाः परिकीर्त्तिताः ५१

शंख, शंखी, सीपी, घोंघा और केकड़ा ये कोशस्थ जीव कहलाते हैं । ५१ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पैरवाले जल जीव

कुम्भीरकूर्मनक्राश्च गोधामकरशङ्कवः ।
घण्टिकः शिशुमारश्चेत्यादयः पादिनः स्मृताः ५२

कुम्भीर, कछुवा, नाक, गोह, मगर, शंकु, घड़ियाल और सूस, ये पैरवाले जलजीव हैं । ५२ ।

मछली की जातियाँ

भक्कुरो रोहितश्चैव प्रोष्ठीपाठीनमोचिका ।
शृङ्गील्लसश्शष्कुली च कवक्र्येरङ्गिमंगुरी ॥ ५३ ॥

भाकुर, रोहू, सहरी, पढ़िन, मोचिका, सींगी, हीलसा, सौरी, कवई, अरंगी और मंगुरी, ये मछलियों की जातियाँ हैं । ५३ ।

विरेचनगण

आरग्वधश्च कम्पिल्लः कटुरङ्कोटवारुणी ।
शिवलिङ्गी नागपुष्पी द्विधा दन्ती त्रिधा त्रिवृत् ५४॥
सन्नायमाक्षिकं द्वेधा रेचनी चेन्द्रवारुणी ।
जयपालं सुगन्धा च विरेचनगणस्त्वयम् ॥ ५५ ॥

अमलतास, कबीला, कुटकी, अंकोट, (अँकुहर) वारुणी, शिवलिंगी, नागपुष्पी, दो प्रकार की दंती, तीन प्रकार का निसोथ, सनाय, सोनामाखी, रूपामाखी, रेचनी, इन्द्रायण, जमालगोटा और सुगन्धा, यह विरेचनगण है । ५४—५५ ।

पाचकगण

पाषाणभेदो मरिचं यवानी जलशीर्षकम् ।
शुण्ठी चव्यं कोलवल्ली शृङ्ग्यादिः पाचको गणः ॥ ५६ ॥

पाषाणभेद, मिर्च, अजवायन, जलसिरस, सोंठ, चव्य, गजपीपर, काकड़ासींगी, यह पाचकगण है । ५६ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उष्णगण

त्रिविधा पिप्पली तस्या मूलं तुम्बुरुकास्त्रिधा ।
तेजोह्वायाः फलं भार्गी पौष्करादिकमुष्णकम् ॥५७॥

तीन प्रकार की पीपर, पिपरामूल, तीन प्रकार के तुम्बुरु, तेजबल का फल, भारंगी और पुष्करमूल आदि उष्णगण है । ५७ ।

दीपनगण

द्विविधश्चित्रको धान्यमजमोदा च जीरकम् ।
त्रिविधं हबुषा द्वेधा गणोऽयं दीपनः स्मृतः ॥५८॥

दो प्रकार का चीता, धनियाँ, अजमोद, चार प्रकार के जीरा और दो प्रकार के हाऊबेर, यह दीपनगण है । ५८ ।

पौष्टिकगण

चतुर्विधस्तुगाक्षीरी चन्द्रशूरोऽष्टवर्गकः ।
द्वीपान्तरवचा चैव त्वक्पत्रं नागकेशरम् ॥ ५९ ॥
तालीसपत्रं त्वक् क्षीरी त्वचा च गुरुरोहिणी ।
कपिकच्छूतोयबद्धं भूफलं पौष्टिको गणः ॥ ६० ॥

चार प्रकार का वंशलोचन, हालौं, अष्टवर्ग, (मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, क्षीरकाकोली), खुरासानी बच, दालचीनी, नागकेशर, तालीसपत्र, तज, गुरुरोहिणी, केवाँच, तोयबन्धा और भूफल, यह पौष्टिकगण है । ५९–६० ।

वातघ्नगण

महानिम्बश्च कार्पासी द्विधैरण्डो वचा द्विधा ।
निर्गुण्डी द्विविधा हिङ्गुगणोऽयं वातहारकः ॥ ६१॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बकायन, कपास, दो प्रकार का एरंड, दो प्रकार की बच, दो प्रकार का सँभालू और हींग, यह वातघ्नगण है। ६१।

कृमिहागण

विडङ्गं नागभिन्ना च पारसीकयवानिका।
द्विधा करञ्जष्टङ्कारी कौटजः कृमिहागणः॥ ६२॥

बायविडंग, नागभेद, खुरासानी अजवायन, दो प्रकार का करंज, टंकारी और कुड़ा, यह कृमिनाशकगण है। ६२।

तृणगण

त्रिधा वंशः कुशः कासस्त्रिधा दूर्वा तथा नलः।
गुन्द्रो मुञ्जो गुन्द्रमूला प्रोक्तस्तृणगणस्त्वयम्॥६३॥

तीन प्रकार का बाँस, कुश, कास, तीन प्रकार की दूब, नरकुल, पटेर, मूँज, और मोथा, यह तृणगण है। ६३।

प्रसरगण

प्रसारिणी द्वयं मुण्डी लज्जालुश्च पुनर्नवा।
द्विशारिवा भृङ्गराजः पञ्चधा छिक्किका द्विधा॥ ६४॥
ब्राह्मीद्वयमलाबुश्च शङ्खपुष्पी च शातला।
पातालगरुडी षड्धा गणः प्रसरसंज्ञकः॥ ६५॥

प्रसारिणी, गंधप्रसारिणी, मुंडी, लज्जावंती (छुईमुई), पुनर्नवा, दो प्रकार का सारिवा, पाँच प्रकार का भँगरा, दो प्रकार की नकछिकनी, दो प्रकार की ब्राह्मी, लौकी, शंखपुष्पी, सातला और छः प्रकार की पातालगरुड़ी, यह प्रसरगण है।६४–६५।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वृक्षगण

गम्भारी तिन्दुकः सालश्शणपर्णी च शाल्मली ।
शिंशपा ककुभो नन्दी रोही च खदिरत्रयम् ॥ ६६ ॥
बन्धूकः पुत्रजीवश्च अरिष्टेङ्गुदजिङ्गिनी ।
तुन्नको भूर्जपत्रश्च धवो धन्वङ्गमोक्षकः ॥ ६७ ॥
भूमीसहः सप्तपर्णश्शाखोटो वरुणश्शमी ।
कटभी तिनिशश्चैव बिल्वो वृक्षगणस्त्वयम् ॥ ६८ ॥

खम्भारी, तेंदुवा, साखू, पटसन, सेमर, शीशम, अर्जुन, नन्दी, लाल कंजा, तीन प्रकार के खैर, बन्धूक (दुपहरिया), पतौंजिया, रीठा, इंगुदी (गोंदनी), जिंगिनी, तुन, भोजपत्र, धवई, धामिन, मोक्षक, भूमिसह, छतवन, सहोरा, वरनाशमी, कटभी, तिनिश और बेल, यह वृक्षगण है । ६६–६८ ।

गुल्मगण

बलाचतुष्टयं पर्णी पञ्चकं चाग्निमन्थकः ।
पाठा यवासो वार्त्ताकी कोकिलाक्षोऽसनो द्विधा ६९
अपामार्गद्वयं मूर्वा त्रायन्ती शरपुङ्खिका ।
काकनासा काकजङ्घा मेषशृङ्गी च वन्दका ॥ ७० ॥
वन्ध्याकर्कोटकी त्रेधा वर्वरी तुलसी द्विधा ।
वज्रदन्ती द्विधाऽजाजी भीमा गुल्मगणस्त्वयम् ७१

बला, अतिबला, नागबला और महाबला, ये चारों प्रकार के बरियारा, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, मुद्गपर्णी, माषपर्णी और मण्डूकपर्णी, ये पाँचों पर्णी, अरणी, पाढ़र, जवासा, बनभाँटा, तालमखाना,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विजयसार, पीतसार, दो प्रकार के अपामार्ग, मूर्वा, चिरायता, सरफोंका, काकजंघा, मेढ़ासिंगी, काकनासा, बाँदा, बाँझककोड़ा, तीन प्रकार की बबई, दोनों तुलसी, दोनों वज्रदंती, सफ़ेद जीरा और भीमा, यह गुल्मगण है । ६९–७१ ।

लतागण

गुडूचिका नागवल्ली सोमवल्ल्यपराजिता ।
स्वर्णवल्ल्यस्थिसंहारी श्वदंष्ट्राकाशवल्लरी ॥ ७२ ॥
वटपत्री हिङ्गुपत्री वंशपत्री बृहन्नटा ।
अर्कपुष्पी च सर्पाक्षी द्रोणा मूषककर्णिका ॥ ७३ ॥
चिरपोटा मयूराह्वशिखाबन्धनवल्लिका ।
कनकाह्वा च वासन्ती मनोदेति लतागणः ॥ ७४ ॥

गुर्च, नागबेलि, सोमवल्ली, विष्णुकान्ता, स्वर्णवल्ली, हरसिंघार, गोखुरू, आकाशवल्ली, वटपत्री, हिंगुपत्री, वंशपत्री, बृहन्नटा, अर्कपुष्पी, सर्पाक्षी, गूमा, मूसाकर्णी, चिरपोटा, मोरशिखा, बन्धनवल्ली, कनकलता, माधवीलता और मनोदा, यह लतागण है । ७२–७४ ।

पुष्पगण

जात्यम्बष्ठा करविका शिववल्ली कदम्बकः ।
चाम्पेयो माधवी चैव मल्लिका केतकस्तथा ॥ ७५ ॥
नैपाली कुब्जकश्चैव मुचुकुन्दश्च कुन्दकम् ।
किङ्किरात कर्णिकारो ह्यशोको वर्णपुष्पकम् ॥ ७६ ॥
मारुत्तको वर्वरी च तिलकः कटसारिका ।
बन्धूकस्तु चतुर्द्धा स्यात्सिन्दूरी द्विविधा जपा ७७॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अगस्तिर्मुनिपुत्रश्च खरपुष्पः कुठेरकः ।
पाटलं द्विविधं सूर्यमुखीपुष्पगणास्त्वयम् ॥ ७८ ॥

चमेली, जूही, कुमुद, मौलसिरी, कदम्ब, चंपा, माधवी, बेला, केतकी, नेवारी, कुब्जक, मुचकुन्द, कुन्द, किङ्किरात, कनेर, अशोक, वर्णपुष्प, मरुवा, बबई, तिलक, कटसरैया, चारों प्रकार के बन्धूक, दो प्रकार की सिंदूरी, गुड़हल, अगस्ति, दवना, खरपुष्प, दो प्रकार का गुलाब और सूर्यमुखी, यह पुष्पगण है । ७५—७८ ।

दुग्धगण

द्विधार्कः पञ्चधा वज्री शातला दुग्धिका द्विधा ।
वटस्त्रिपिप्पलः प्लक्षोदुम्बरश्च पयोगणः ॥ ७९ ॥

सफ़ेद और लाल मदार, पाँचों सेहुँड़, सातला, दोनों दूधिया, बरगद, पीपल, पाकर और गूलर, यह दूधवाले वृक्ष हैं । ७९ ।

धूपगण

द्विधागुरुर्देवदारुर्गन्धपाषाणकस्त्रिधा ।
गुग्गुलुः पीतवृक्षश्च शालनिर्यास एव च ॥ ८० ॥
पद्माह्वयं च तगरं मोचकः शल्लकीरसः ।
रालं नैपालकं चेति गणोऽयं धूपसंज्ञकः ॥ ८१ ॥

दोनों अगुरु, दोनों देवदारु, गन्धपाषाण, तीनों प्रकार के गुग्गुल, सरल, राल, पद्माख, तगर, मोचरस, शल्लकीरस और नैपाली राल, यह धूप संज्ञकगण है । ८०—८१ ।

सुगन्धगण

द्विकर्पूरास्त्रिकस्तूरी लताकस्तूरिकाऽण्डजः ।
सिह्लको जातिकोशं च जातीपत्री लवङ्गकम् ॥ ८२ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

द्विधैला रोचना द्वेधा पञ्चधा कुङ्कुमं तथा ।
गौडपत्री विधासश्च सुगन्धाह्वगणास्त्वयम् ॥ ८३ ॥

दोनों प्रकार के कपूर, तीनों प्रकार की कस्तूरी, लताकस्तूरी, मुष्कबिलाई, शिलारस, जायफल, जावित्री, लौंग, छोटी और बड़ी इलायची, गोरोचन, पाँच प्रकार की केसर, गौड़पत्री और विधास, यह सुगन्धगण है। ८२–८३ ।

बालकं वीरणं मांसी द्विनखं चन्दनं त्रिधा ।
शैलेयं द्विविधं मुस्तं मुरा गन्धपलाशिका ॥ ८४ ॥
द्विकर्चूरः प्रियंगुश्च रेणुका गन्धमालती ।
ग्रन्थिपर्णी त्रिधा स्पृक्का कङ्कोलाख्यं च तालिसम् ८५

सुगन्धबाला, खस, जटामांसी, दोनों नखी, तीन प्रकार का चन्दन, शिलाजीत, दोनों मोथा, मुरा (कपूरकचरी), गन्धपलाशिका, दोनों कचूर, प्रियंगु, गन्धप्रियंगु, रेणुका, गन्धमालती, ग्रन्थिपर्णी, स्पृक्का, कंकोल और तालीस, ये सुगन्धित द्रव्य हैं । ८४–८५ ।

दुग्धादिगण

गावो दशधा महिषी त्रिविधाऽजास्तथा मताः ।
मृग्यएकविधा मेषी त्रिधोष्ट्री दशधा हयी ॥ ८६ ॥
पञ्चधा करिणी नारी दशधा शूकरी द्विधा ।
व्याघ्री शुनी तु द्विविधा रासभी पञ्चधा पृथक् ८७
त्रिधा वृक्यष्टधा मत्स्यी गवयी खड्गिनी किरिः ।
दुग्धं घृतं च तक्रं च दधि ताभ्यः प्रजायते ॥ ८८ ॥

गायें दस प्रकार की होती हैं । भैंस और बकरी तीन प्रकार की होती हैं । हरिणी एक प्रकार की, भेड़ और उँटनी तीन प्रकार की, घोड़ी दश प्रकार का, हथिनी पाँच प्रकार की, स्त्री दश प्रकार

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

की, शूकरी दो प्रकार की, बाघिनी और कुतिया दो प्रकार की, गधी पाँच प्रकार की, भेड़ही तीन प्रकार की, मछली आठ प्रकार की, नीलगाय और मादा गैंडा, इनसे दूध, दही, घी और मट्ठा पैदा होता है। ८६–८८।

धातुगण

त्तिथिधा तु सुवर्णं स्यात्पञ्चधा रजतं भवेत्।
पञ्चप्रकारकं ताम्रं वङ्गं तु द्विविधं स्मृतम् ॥ ८९ ॥
यसदं त्रिविधं प्रोक्तं भवेन्नागस्तु षड्विधः।
अष्टधा लोहमुद्दिष्टमेते वै सप्तधातवः ॥ ९० ॥

पन्द्रह प्रकार का सोना, पाँच प्रकार की चाँदी, पाँच प्रकार का ताँबा, दो प्रकार का राँगा, तीन प्रकार का जस्ता, छः प्रकार का सीसा और आठ प्रकार का लोहा, ये सात धातुएँ हैं। ८९–९०।

उपधातुगण।

स्वर्णजं स्वर्णमाक्षीकं तारजं तारमाक्षिकम्।
तुत्थं ताम्रभवं ज्ञेयं कंकुष्ठं वङ्गसम्भवम् ॥ ९१ ॥
रसश्च यशदोद्भूतः सिन्दूरो नागसम्भवः।
लोहजातं लोहकिट्टमेते सप्तोपधातवः ॥ ९२ ॥

सोना से सोनामाखी, चाँदी से रूपामाखी, ताँबा से तूतिया, राँगा से मुरदासंग, जस्ता से रसकपूर, सीसा से सिन्दूर और लोहा से लोहकीट उत्पन्न होता है। ये सात उपधातुएँ हैं। ९१–९२।

रस

सूतश्चतुर्धा गन्धश्च तालं तु द्विविधं मतम्।
द्विधाञ्जनं च कासीसं गैरिकं च रसा इमे ॥९३॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चार प्रकार का पारा, चार प्रकार का गन्धक, दो प्रकार का हरताल, दो प्रकार का सुरमा, कसीस और गेरू ये रस कहलाते हैं। ९३।

उपरस

पारदाद्दरदो जातष्टङ्कणो गन्धकात्तथा ।
स्फटिकाऽभ्रकतो जाता हरितालान्मनःशिला ९४
अञ्जनाच्छुक्तिशङ्खाद्याः कासीसाच्छङ्खमूर्वकः ।
गैरिकान्मृत्तिका जाता तस्मादुपरसा इमे ॥ ९५ ॥

पारा से सिंगरफ, गन्धक से सुहागा, अभ्रक से फिटकिरी, हरताल से मैनसिल, सुरमा से सीपी और शंख आदि, कसीस से शंखमूर्वक तथा गेरू से मिट्टी उत्पन्न होती है। ये उपरस कहलाते हैं। ९४–९५।

रत्नवर्ग

मुक्ताफलं हीरकं च वैडूर्यं पद्मरागकम् ।
पुष्परागं च गोमेदं नीलं गारुत्मतं तथा ॥
प्रवालयुक्तान्येतानि महारत्नानि वै नव ॥ ९६ ॥

मोती, हीरा, वैडूर्य, पद्मराग; पुखराज, गोमेद, नीलम, पन्ना और मूँगा, ये नव महारत्न हैं। ९६।

उपरत्नवर्ग

उपरत्नानि काचश्च कर्पराश्मा तथैव च ।
मुक्ताशुक्तिस्तथा शङ्ख इत्यादीनि बहून्यपि ॥ ९७ ॥

काँच, कपूरी, पत्थर, मोती की सीपी और शंख आदि बहुत से उपरत्न हैं। ९७।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दसवाँ शतक

उत्तम सोने की परख

दाहे रक्तं सितं छेदे निकषे कुङ्कुमप्रभम् ।
तारशुल्वोज्झितं स्निग्धं कोमलं गुरु हेम सत् ॥ १ ॥

जो सोना तपाने पर लाल हो जाय, काटने पर सफ़ेद देख पड़े, कसौटी पर कसने से केसर के समान हो, जो चिकना और कोमल हो, जिसमें चाँदी और ताँबा का मेल न हो तथा अन्य धातुओं की अपेक्षा जो अधिक भारी हो, वँह सोना उत्तम होता है । १ ।

धातुओं के शोधन और मारण की विधि

पत्तलीकृतपत्राणि वह्नौ तानि प्रतापयेत् ।
वेष्टनैस्तैः समावेष्ट्य तैले चैव विनिक्षिपेत् ॥ २ ॥

पृथक् पृथक् च दशधा तक्रवर्गे तथैव च ।
धान्यक्वाथे मूत्रवर्गे मद्यवर्गे कटूद्भवे ॥ ३ ॥

अम्लवर्गे पुष्पवर्गे रक्तवर्गे फलोद्भवे ।
क्षीरवर्गे ह्यर्कवर्गे निर्वाप्यास्ते समन्ततः ॥ ४ ॥

कृत्रिमा धातुसंमिश्रा ये च नो कार्यसाधकाः ।
जायन्ते दग्धदोषास्तु धातवो गाङ्गवारिवत् ॥ ५ ॥

जिस धातु की भस्म बनाना हो, उसका पतला पत्र कराकर आगे बतलाये हुए वेष्टनों से लपेटकर आग में तपावे । फिर क्रमशः दस प्रकार के अर्क में बुझावे । सबसे पहले तेल में, उसके बाद म ा में,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फिर अन्न के क्वाथ में, गोमूत्र में, कड़ुए पदार्थ से निकाले हुए मद्य में, खटाई के रस में, फूलों के रस में, फलों के रस में, दूधों में तथा अर्कों में बुझावे। २–४। जो धातुएँ बनावटी होती हैं, अथवा जिनमें कोई मेल होता है उनसे काम सिद्ध नहीं होता। शुद्ध धातुएँ शोधन करने से निर्दोष होकर गंगाजल के समान निर्मल हो जाती हैं। ५।

गैरिकं सर्जिकाक्षारो लवणं काचसम्भवम्।
नवसादरकः कन्या गुञ्जास्वर्णादिवेष्टनम्॥ ६॥

गेरू, सज्जीखार, विडलवण, कचलवण, नौसादर, घीकुवार और घुंघची ये सोना आदि सात धातुओं के वेष्टन हैं। ६।

दद्यात्पत्राणि धान्याम्बुन्यथ तानि समुद्धरेत्।
गोमूत्रकेऽथवा तानि दत्त्वा वारत्रयं तथा॥ ७॥
पत्रेषु सर्वधातूनां दत्त्वा तत्तुल्यकज्जलम्।
दत्त्वाऽनलान्तरे तानि वालुकायन्त्रके पचेत्॥ ८॥
पृथक् पृथक् सूर्यदण्डैर्वह्निभिर्दीपनादिभिः।
विशोध्य तु पुनस्तांश्च यथेच्छं पुटतः पचेत्॥ ९॥

धातुओं के पत्रों को काँजी में अथवा गोमूत्र में तीन बार बुझावे। उसके बाद उन पत्रों में उनके समान कजली लगाकर बालुका यन्त्र द्वारा आग में तपावे। प्रथम शतक में कहे हुए दीपाग्नि द्वारा प्रत्येक धातु को बारह-बारह घड़ी तपाना चाहिए। ऐसा करने से सुवर्ण आदि धातुएँ शुद्ध हो जाती हैं। उसके बाद अन्य ग्रन्थों में लिखी हुई विधि के अनुसार पुट देकर भस्म कर ले। ७–९।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सुवर्ण भस्म के गुण

योगेन मत्स्यपित्तायाः स्वर्णं तत्कालदाहहृत् ।
भङ्गयोगाच्च तद्वृष्यं दुग्धयोगाद्बलप्रदम् ॥ १० ॥

सोना की भस्म, केदारकुटकी के साथ देने से तत्काल ही दाह को नष्ट कर देती है। भाँग के साथ देने से शरीर को पुष्ट करती है और दूध के साथ देने से बल बढ़ाती है ॥ १० ॥

नेत्र्यं पुनर्नवायोगाद् घृतयोगाद्रसायनम् ।
स्मृत्यादिकृद्वचायोगात्कान्तिकृत्कुंकुमेन च ॥ ११ ॥
पयसा राजयक्ष्माणं निर्विष्या च विषं हरेत् ।
शुण्ठीलवङ्गमरिचैस्त्रिदोषोन्मादहृत्परम् ॥ १२ ॥

लाल या सफ़ेद पुनर्नवा के साथ देने से नेत्रों को लाभ करती है। घी के साथ रसायन के समान गुणदायक है। बच के योग से स्मरणशक्ति और केसर के योग से शरीर की कान्ति बढ़ाती है। दूध के साथ देने से राजयक्ष्मा, निर्विषी के योग से विष तथा सोंठ, लौंग और मिर्च के साथ देने से त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) से उत्पन्न उन्माद को नष्ट करती है। ११–१२।

असम्यग्मारितं स्वर्णं बलं वीर्यं च नाशयेत् ।
करोति रोगान् मृत्युं च तद्धन्याद्यत्नतस्ततः ॥ १३ ॥

अच्छे प्रकार से न मरा हुआ सुवर्ण बल और वीर्य को हानि पहुँचाता है, रोग उत्पन्न करता है और शरीर नष्ट कर देता है, इसलिए बड़े यत्न से सुवर्ण को फूँकना चाहिए। १३।

चाँदी की परख

गुरु स्निग्धं मृदु श्वेतं दाहच्छेदघनक्षमम् ।
वर्णाढ्यं चन्द्रवत्स्वच्छं तारं नवगुणं शुभम् ॥ १४ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अब भस्म बनाने योग्य चाँदी की परख बतलाते हैं। जो चाँदी भारी, चिकनी, कोमल, सफ़ेद, तपाने और काटने में लोहे के समान हो, जिसका रंग सुंदर हो और जो चन्द्रमा के समान स्वच्छ हो, वह चाँदी श्रेष्ठ होती है। १४।

चाँदी की भस्म के गुण

सितया हन्ति दाहाद्यं वातपित्तं फलत्रिकैः।
त्रिसुगन्धैः प्रमेहादि रजतं हन्त्यसंशयम् ॥ १५ ॥

चाँदी की भस्म मिश्री के साथ देने से दाह आदि रोगों को, त्रिफला के साथ देने से वात और पित्त को, इलायची, दालचीनी और तेजपात के साथ देने से प्रमेह आदि रोगों को निस्सन्देह नष्ट करती है। १५।

विड्वीर्ययोर्बन्धनं च वृष्यं संक्षयजित्परम्।
कृशत्वं रोगसङ्घातं कुरुते तदशोधितम् ॥ १६ ॥

चाँदी की भस्म मल और वीर्य को बाँधती है, शरीर को पुष्ट करती है और राजयक्ष्मा रोग को नष्ट करती है। अच्छे प्रकार से शुद्ध न की हुई चाँदी शरीर को दुर्बल कर देती है और अनेक रोग उत्पन्न करती है। १६।

श्रेष्ठ ताँबा की परख

जपाकुसुमसङ्काशं स्निग्धं मृदुघनक्षमम्।
लोहनागोज्झितं ताम्रं मारणाय प्रशस्यते ॥ १७ ॥

अब भस्म बनाने योग्य ताँबे की परख बतलाते हैं। जो ताँबा गुड़हर के फूल के समान लाल हो, जो चिकना, कोमल और घन की चोट सहनेवाला हो, जिसमें लोहा या सीसा का मेल न हो, वह ताँबा फूँकने योग्य होता है। १७।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ताँबा की भस्म के गुण

दुग्धसन्नायखण्डैर्यस्ताम्रं रक्तिद्वयोन्मितम् ।
पिबेत्तस्य विरेकेण प्राणास्ते निर्ययुर्गदाः ॥ १८ ॥

दो रत्ती ताँबा की भस्म दूध, सनाय और मिश्री के साथ खाने से विरेक (दस्त) से उत्पन्न रोग नष्ट हो जाते हैं । १८ ।

कुष्ठकासश्वासपित्तं हरेच्छ्लेष्मोदरामयान् ।
ज्वराम्लपित्तपाण्ड्वर्शः शूलशोथकृमीनपि ॥ १९ ॥

ताँबा की भस्म कोढ़, खाँसी, श्वास, पित्त, कफ, पेट के रोग, ज्वर, अम्लपित्त, पाण्डु, बवासीर, शूल, शोथ और कृमि का नाश कर देती है । १९ ।

एको दोषो विषे ताम्रे त्वसम्यङ्मारिते पुनः ।
दाहः स्वेदोऽरुचिर्मूर्च्छा क्लेदो रेको वमिर्भ्रमः ॥२०॥

विष में तो एक ही दोष है; किन्तु अच्छे प्रकार से न मारा हुआ ताँबा खा लेने से दाह, स्वेद, अरुचि, मूर्च्छा, क्लेद, विरेक, वमन और भ्रम, इतने दोष उत्पन्न हो जाते हैं । २० ।

श्रेष्ठ राँगा की परख

शीघ्रद्रावि सशब्दं वा स्फुटनं चन्द्रसन्निभम् ।
तथैव मलहीनं यद्गालितं वङ्गमुत्तमम् ॥ २१ ॥

अब श्रेष्ठ राँगा की परख बतलाते हैं । जो राँगा शीघ्र पिघलता है, जिसके ताड़ने पर आवाज़ आती है, जो गलाने पर चन्द्रमा के समान चमकता है और जिसमें मैल नहीं होता, वह श्रेष्ठ राँगा भस्म बनाने योग्य होता है । २१ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

राँगा की भस्म के गुण

सर्वमेहान्सितादुग्धैः सतालं यच्च मारितम्।
हन्त्यष्टादश कुष्ठानि रजनीक्वाथसंयुतम् ॥ २२ ॥

हरताल के साथ भस्म किया हुआ राँगा दूध और मिश्री के साथ सेवन करने से बीस प्रकार के प्रमेह तथा हल्दी के काढ़े के साथ सेवन करने से अठारह प्रकार के कोढ़ नष्ट करता है। २२।

अशुद्धवङ्गं कुरुते शूलं गुल्मं त्वचाङ्घ्रिजम्।
वातशोथं प्रमेहं च पाण्डुरोगं भगन्दरम् ॥ २३ ॥

अशुद्ध राँगा के खा लेने से शूल, गुल्म, त्वचा और पैरों में वातशोथ, प्रमेह, पाण्डुरोग और भगन्दर रोग उत्पन्न हो जाते हैं। २३।

श्रेष्ठ जस्ता की परख

यसदं दर्पणाभासं घनच्छायं सितप्रभम्।
निकषे यद्रजतवद्दाहे छेदे च तालवत् ॥ २४ ॥

अब श्रेष्ठ जस्ता की परख बतलाते हैं। जो जस्ता दर्पण के समान निर्मल, घनी छायावाला, सफ़ेद, कसने में चाँदी के समान, तपाने और काटने में हरताल के समान होता है, वह जस्ता श्रेष्ठ है। २४।

जस्ता की भस्म के गुण

प्राचीनगोघृतैर्नेत्र्यं ताम्बूलेन प्रमेहजित्।
अग्निमन्थेनाग्निकारि त्रिसुगन्धैस्त्रिदोषजित् २५॥

गाय के पुराने घी के साथ जस्ता की भस्म का सेवन करने से आँखों को लाभ होता है। पान के साथ सेवन करने से प्रमेह नष्ट हो जाता है। अरणी के साथ सेवन करने से जठराग्नि बढ़ती है

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

और त्रिसुगन्ध (इलायची, दालचीनी, तेजपात) के साथ सेवन करने से वात, पित्त और कफ दूर हो जाते हैं। २५।

अशुद्धं यसदं कुर्याद्रक्तपित्तं च शीतलम्।
मन्दतां जठराग्नेश्च धातुनाशं ज्वरादिकम्॥२६॥

अशुद्ध जस्ता खाने से रक्तपित्त रोग उत्पन्न हो जाता है, जठराग्नि मन्द हो जाती है, और ज्वरादि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। अशुद्ध जस्ता शीतल और धातुनाशक है। २६।

श्रेष्ठ सीसा की परख

विकीर्णं दृश्यते श्वेतं गलितं गगनोपमम्।
दर्शने नागवत्तच्च सन्नागं शमिवत्कषे॥ २७॥

अब सीसा की परख बतलाते हैं। जो सीसा काटने पर सफ़ेद देख पड़े, गलाने पर आकाश के समान नीला हो जाय और जो देखने में साँप के समान और कसने में शमी काष्ठ के रंग का हो, वह सीसा उत्तम होता है। २७।

सीसा की भस्म के गुण

नागस्तु नागशततुल्यबलं ददाति
व्याधिं विनाशयति जीवनमातनोति।
वह्निं प्रदीपयति कामबलं करोति
मृत्युं च नाशयति सन्ततसेवितः सः॥ २८॥

सीसा की भस्म सेवन करने से सौ हाथी के समान बल हो जाता है, रोग नष्ट हो जाते हैं और आयु बढ़ती है। इसका नित्य सेवन करने से जठराग्नि और कामबल बढ़ता है तथा मृत्यु का भय नहीं रहता। २८।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मन्दाग्निमामशूलं च कुष्ठमेहादिरुग्व्रजम् ।
अशुद्धनागः कुरुते प्राणानपि निहन्ति च ॥ २९ ॥

अच्छे प्रकार से न शोधा हुआ सीसा मंदाग्नि, आमशूल, कोढ़ और प्रमेह आदि अनेक रोग उत्पन्न करता तथा प्राणों को हर लेता है । २९ ।

लोहसार

क्ष्माभृच्छिखराकाराण्यङ्गान्यम्लेन लेपिते ।
लोहे स्युर्यत्र सूक्ष्माणि तत्सारमभिधीयते ॥ ३० ॥

जिस लोहे में खटाई का लेप करने से उसका सूक्ष्म भाग पर्वत के शिखर के समान देख पड़े, वह लोहसार कहलाता है । ३० ।

लोहभस्म बनाने की विधि

शुद्धलोहभवं चूर्णं पातालगरुडीरसैः ।
मर्दयित्वा पुटेद्वह्नौ दद्यादेवं पुटत्रयम् ॥ ३१ ॥

शुद्ध लोहे के चूर्ण को पातालगरुड़ी के रस में घोटकर तीन बार पुटपाक करे । ३१ ।

पुटत्रयं कुमार्याश्च कुठारच्छिन्निकारसैः ।
पुटषट्कं ततो दद्यादेवं तीक्ष्णमृतिर्भवेत् ॥ ३२ ॥

फिर घीकुआर के रस में घोटकर तीन बार पुटपाक करे । उसके बाद कुरैया के रस में घोटकर छः बार पुटपाक करे । इस प्रकार से लोहा भस्म हो जाता है । ३२ ।

क्षिपेद्द्वादशमांशेन दरदं तीक्ष्णचूर्णतः ।
मर्दयेत्कन्यकाद्रावैर्यामयुग्मं ततः पुटेत् ।
एवं सप्तपुटैर्मृत्युं लोहचूर्णमवाप्नुयात् ॥ ३३ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अब दूसरी विधि बतलाते हैं। लोहचूर्ण में उसका बारहवाँ हिस्सा शिंगरफ मिलाकर घीकुआर के रस में दो पहर तक घोटे। फिर पुटपाक करे। इस तरह सात बार पुटपाक करने से लोहा भस्म हो जाता है। ३३।

शुण्ठी वाते सिता पित्ते कफे कृष्णात्रिजातकम्।
सन्धिरोगे बला पाण्डौ प्रोक्तं लोहानुपानकम् ३४॥
त्वक्कण्टकं च हृद्रोगशूलहृल्लासमश्मरीम्।
नानारोगान् प्रकुरुते चूर्णं लोहमशोधितम् ॥ ३५ ॥

यह लोहसार वात रोग में सोंठ के साथ, पित्त रोग में मिश्री के साथ, कफरोग में पिप्पली के साथ, सन्धिरोग में इलायची, दालचीनी और तेजपात के साथ, पाण्डुरोग में बरियारा के साथ खाना चाहिए। अच्छे प्रकार से न शोधा हुआ लोहसार चर्मरोग, हृदयरोग, शूल, हृल्लास (उबकाई आना), पथरी और अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करता है। ३४-३५।

उपधातुओं के शोधन और मारण की विधि

पादांशं सैन्धवं दत्त्वा उपधातून्विमर्दयेत्।
दशधा चाम्लवर्गेण कटाहे लोहसम्भवे ॥ ३६ ॥
घर्षयेल्लोहदण्डेन प्रत्येकं च मुहूर्त्तकम्।
यथा सिन्दूरवर्णत्वं धातूनां सम्प्रजायते ॥ ३७ ॥

अब उपधातुओं के भस्म करने की विधि कहते हैं। उपधातुओं को चौथाई सेंधानमक मिलाकर दस बार खटाई में घोटे। फिर लोहे के कड़ाह में लोहे के डंडे से दो घड़ी तक घोटना चाहिए। जब

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उसका रंग सिन्दूर की तरह लाल हो जाय, तब उसे समझ ले कि भस्म हो गया । ३६–३७ ।

अथवा दोषशान्त्यर्थं त्रिकट्वर्कबलार्कके ।
विभावयेद् द्वादशधा ततस्तान् पुटतः पचेत् ॥३८॥

अथवा दोषों की शान्ति के लिए सोंठ, मिर्च, पीपल या बरियारा के अर्क में दस बार भावना देकर पुटपाक करे । ३८ ।

कपोतोत्वोर्विष्ठया वा लिप्त्वा तांस्तु विनिक्षिपेत् ।
अजामूत्रेऽथ ततांस्तान् क्वाथे कौलत्थजे तथा॥३९॥
मधुनाऽभ्यज्य तैलेन मर्दयित्वा पृथक् पृथक् ।
दशांशं टङ्कणं दत्त्वा पचेल्लघुपुटे ततः ॥ ४० ॥
दत्त्वा वह्निं दृढतरमुपधातून् सुधीः पचेत् ।
अभावे मुख्यधातूनां प्रयोज्या उपधातवः ॥ ४१ ॥

अथवा कबूतर या बिलार की बीट से लपेटकर बकरी के मत में या कुलथी के काढ़े में डाल दे । फ़िर उनमें शहद लगाकर, तेल से रगड़कर, दसवाँ हिस्सा सुहागा मिलाकर लघु पुट में पाक करे । बुद्धिमान् वैद्य इस प्रकार तेज आँच से उपधातुओं की भस्म बनावे। धातुओं के अभाव में उपधातुओं का प्रयोग करना चाहिए । ३९–४१ ।

सिन्दूर के शोधन की विधि ।

न कुर्वन्ति गुणांस्तेऽपि प्रायः कुत्सितशोधिताः ।
कुर्वन्ति दोषान्भुक्तास्ते सिन्दूरं यदि भक्षयेत् ।
अशुद्धं वाथ शुद्धं वा विनामन्त्रगुरूक्तिभिः ॥४२॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विना तेन भवेच्छीघ्रं स्वरभङ्गो मृतिस्तथा ।
राक्षसीमस्तके लग्नं दृष्ट्वा शप्तो हनूमता ॥ ४३ ॥

वे भी प्रायः अच्छे प्रकार से शुद्ध न किये जाने पर गुण के बदले दोष उत्पन्न करते हैं। शुद्ध या अशुद्ध सिन्दूर मन्त्र और गुरु की आज्ञा के बिना खाने से स्वरभंग करता है और मार डालता है। सिन्दूर को राक्षसी के मस्तक पर लगा हुआ देखकर हनुमान्जी ने शाप दिया है। ४२–४३।

आदिवाराहकल्पे तु कृता तस्य च निष्कृतिः ।
तेनैव वानरेन्द्रेण शृणु मन्त्रं यथोदितम् ॥ ४४ ॥

आदिवाराहकल्प में इसकी निष्कृति भी बतलाई गई है। वानर-श्रेष्ठ हनुमान्जी ने जो मन्त्र कहा है, वह सुनो। ४४।

तारसिन्दूरपायेतिसिस्थाने सम्प्रयोजयेत् ।
सिन्दूरं हलको देव चालयेति पदं वदेत् ॥ ४५ ॥
रीतुप्रोक्ता खलभलीजी तथा कलबलीति च ।
मन्त्रः शाबरमन्त्राणां शिखामणिरयं स्मृतः ॥ ४६ ॥

"ओं तार सिन्दूर पाय खलबली जीव कलबली कालभैरव सिन्दूरम् हलको देव चालय" यह मन्त्र साबर मन्त्रों में सर्वश्रेष्ठ है। ४६।

गुरुतो वेश्वरोपास्याद् गृहीत्वा मन्त्रमुत्तमम् ।
तं जपित्वा सहस्रं तद्दशांशं तु होमयेत् ॥ ४७ ॥

गुरु से अथवा शिवजी के उपासक से इस उत्तम मन्त्र को सीख-कर हज़ार बार जपे और इसके दशांश से होम करे। ४७।

सिन्दूरं तैलवटकैः पूजयेत्करवीरकैः ।
दूर्वाभिर्मार्जनं कार्यं पायसैर्ब्रह्मभोजनम् ॥ ४८ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तेल के बड़े और कनेर के फूलों से सिन्दूर की पूजा करे। फिर दूब से माँजे। ब्राह्मणों को खीर खिलावे। ४८।

ततः सिद्धो भवेन्मन्त्रः शम्बरासुरभाषितः।
अनेनामन्त्र्य सिन्दूरं षण्मासं यस्तु भक्षयेत् ॥४६॥
विमुक्तः क्रोधलोभाभ्यां तृष्णापाशात्तथैव च।
युक्तस्सनियमैश्शान्त्यादिभिश्चापि जितेन्द्रियः ५०

ऐसा करने पर शम्बरासुर का कहा हुआ यह मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित किया हुआ सिन्दूर जो मनुष्य छः महीने तक खाता है वह क्रोध और लोभ से मुक्त, तृष्णारूप पाश से रहित और शम, दम आदि नियमों से युक्त होकर जितेन्द्रिय हो जाता है। ४९–५०।

ब्रह्मचर्यपरस्यास्य बिन्दुरूर्ध्वं प्रजायते।
महारात्रौ तु यो नग्नो जपेन्मन्त्रमनुत्तमम् ॥५१॥
क्रियते येन सुधिया जपता मन्त्रमुत्तमम्।
वानराणां च सप्तानां प्रसरं तिलकाह्वयम् ॥ ५२ ॥
मोहयेत्सकलं विश्वं रणे जयति निश्चितम्।
ललाटे तिलकं यावत्तावदीशः स एव हि ॥ ५३ ॥

ब्रह्मचर्य से रहकर इसका सेवन करने से मनुष्य ऊर्ध्वरेता हो जाता है। जो बुद्धिमान् मनुष्य दिवाली की रात में नंगा होकर पूर्वोक्त मन्त्र जपता हुआ सात बन्दरों के माथे में सिन्दूर का तिलक करता है, वह संपूर्ण जगत् को वश में कर लेता है और संग्राम में विजयी होता है। जब तक उसके मस्तक में तिलक रहता है तब तक वह संसार में प्रभु होकर रहता है। ५१–५३।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पारा शुद्ध करने की विधि

उन्मत्तविजयार्के वा काञ्जिके सूतधावने।
हालाहलेन तुल्येन दरदोत्थं विमर्दयेत् ॥ ५४ ॥

अब पारा के शोधन की विधि कहते हैं। धतूरा या भाँग के अर्क में अथवा काँजी में, शिगरफ से निकले हुए पारे को धोकर उसकी बराबर हलाहल विष मिलाकर खूब घोटे। ५४।

नष्टपिष्टं रसं कृत्वा भावयेत्पद्मिनीदलैः।
गोधूमराशौ संस्थाप्य मासमेकं ततः पुनः ॥५५॥

फिर उसे कमलिनी के पत्तों के अर्क में भावना देकर गेहूँ की राशि में एक महीने गाड़ रक्खे। ५५।

निष्काश्य क्षालयित्वा तु अहिफेनेन मर्दयेत्।
कुर्याच्च पूर्ववत्पश्चान्नवसारेण मर्दयेत् ॥ ५६ ॥

उसके बाद निकालकर पानी से धो डाले और अफीम के साथ फिर घोटे। उसके बाद पहले की तरह एक महीने गेहूँ में रखकर नौसादर के साथ घोटे। ५६।

कमलस्य रसेनापि कृष्णोन्मत्तरसेन च।
हिंगुना गन्धपाषाणसत्त्वेनाथ विमृद्य च ॥ ५७ ॥
षण्मासांस्तु ततः स्थाप्यस्सूरणस्योदरे रसः।
एवं वर्षेण शुद्धः स्याद्रसराट् चेति निश्चितम् ॥५८॥

फिर कमल के रस में, काले धतूरे के रस में, हींग में और गन्धक के सत में घोटकर छः महीना तक सूरन में गाड़ रक्खे। इस प्रकार एक वर्ष में यह रसराज पारा शुद्ध होता है। ५७-५८।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दृश्यते चूर्णसङ्काशो जीवनाख्यो रसोत्तमः ।
एकगुञ्जो द्विगुञ्जो वा दृष्ट्वा दोषबलाबलम् ॥ ५६ ॥
दृष्ट्वौषधगुणं चापि देयश्चासौ रसोत्तमः ।
सेवनात्स्वस्थता न स्यात् तं ब्रह्मापि न जीवयेत् ६०

शुद्ध होने पर चूना की तरह सफ़ेद हो जाता है। जीवन-स्वरूप इस उत्तम रस को दोष का बलाबल देखकर एक रत्ती या दो रत्ती देना चाहिए। यदि इसका सेवन करने से किसी मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक न हो, तो उसे ब्रह्मा भी नहीं जिला सकते। ५९–६०।

शिंगरफ शुद्ध करने की विधि

चणकाभानि खण्डानि दरदस्य तु कारयेत् ।
ताम्रजे वायसे पात्रे स्थापयित्वा धमेद्दृढम् ॥६१॥
जातायामुष्णतायां च तदा तस्मिन्विनिक्षिपेत् ।
तत्तुल्यं तु द्रवद्रव्यमेषा स्याद्वह्निभावना ॥ ६२ ॥

अब शिंगरफ शुद्ध करने की विधि कहते हैं। चने के बराबर शिंगरफ के टुकड़े करके ताँबे या लोहे के बर्तन में रखकर आग में खूब तपावे। फिर उसी की बराबर द्रवद्रव्य छोड़े। यह वह्निभावना है। ६१–६२।

मेषीक्षीरेण दशधा दशधा क्षीरिजार्ककैः ।
दीप्तिवर्गेण दशधा विरेचयकेण पञ्चधा ॥ ६३ ॥
पञ्चधा दुग्धवर्गेण दशधाम्लस्य भावना ।
पञ्चाशद्भावितो म्लेच्छो नानारोगविनाशनः ॥६४॥

अब द्रवद्रव्य बतलाते हैं। दस बार भेड़ के दूध में, दस बार दूध-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वाले वृक्षों के अर्क में, दस बार दीपन औषधों के अर्क में, पाँच बार रेचन औषधों के अर्क में, फिर पाँच बार पूर्वोक्त दूधों में और दस बार खटाई में, इस प्रकार पचास बार भावना देने से शिंगरफ शुद्ध होता है। वह शुद्ध शिंगरफ अनेक रोगों को नष्ट करता है। ६३–६४।

नेत्र्यः क्षुन्मदकृच्चैव दरदः कथ्यते बुधैः।

शुद्ध शिंगरफ आँखों के लिए लाभदायक है और भूख तथा उत्तेजना बढ़ाता है।

गंधक शुद्ध करने की विधि

गन्धकं भूमिलवणं सममेकत्र चूर्णयेत् ॥ ६५ ॥
अनातपे मसूरस्य तोयैः पात्रे विनिक्षिपेत्।
निष्काश्य तज्जलं प्रातः सममम्लेन मर्दयेत् ॥ ६६ ॥
पुनर्दत्त्वा जलं क्षिप्त्वा शतवारं समाचरेत्।
जायते गन्धको दिव्यः श्वेतो गन्धविवर्जितः ॥ ६७ ॥

गंधक के बराबर खारी नमक मिलाकर दोनों को एक में कूट ले। फिर उसे मसूर के पानी में डालकर किसी बरतन में रख दे। उसमें धूप न लगने पावे। दूसरे दिन सबेरे उस पानी से निकालकर खटाई के साथ कूटे। इस प्रकार सौ बार मसूर के पानी में भिगोकर खटाई के साथ कूटने से गन्धक की दुर्गन्ध जाती रहती है और उसका रंग सफ़ेद हो जाता है। ६५–६७।

शतधा भावयेत्तं तु कदलीकाण्डजैर्जलैः।
दीप्तो न जायते वह्निस्तत्संयोगात्कदाचन ॥ ६८ ॥

केला के पानी में सौ बार भावना दिये हुए गन्धक के खाने से जठराग्नि की वृद्धि नहीं होती। ६८।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सुगन्धार्केण भाव्योऽसौ नखवारं प्रयत्नतः ।
को वा तस्य गुणान्वक्तुं भुवि शक्तो हि मानवः ६९
हन्ति कुष्ठादिकान् रोगान् पामादीनां तु का कथा ।

कुलिंजन के अर्क में बीस बार भावना दिये हुए गन्धक के गुणों की पृथ्वी में कौन मनुष्य प्रशंसा कर सकता है ? । ६९ । वह गन्धक कुष्ठ आदि महारोगों को नष्ट करता है, खुजली आदि रोगों के लिए तो कहना ही क्या है ।

अभ्रक शुद्ध करने की विधि

यदभ्रकं गजपुटे यत्नतश्च पुटीकृतम् ॥ ७० ॥
सहस्राभ्रं तदाख्यातं वयसः स्थापनं परम् ।
त्रिदोषं हरते कुष्ठमेहप्लीहव्रणक्रमीन् ॥ ७१ ॥

अब अभ्रक शुद्ध करने की विधि कहते हैं । जो अभ्रक विधिपूर्वक गजपुट के द्वारा पाक किया गया हो उसे सहस्राभ्रक कहते हैं । उसका सेवन करने से आयु की वृद्धि होती है और वात, पित्त, कफ, कुष्ठ, प्रमेह, प्लीहा तथा घाव के कीड़े नष्ट हो जाते हैं । ७०–७१ ।

हरताल शुद्ध करने की विधि

हरितालं द्विधा प्रोक्तं पत्राख्यं पिण्डसंज्ञकम् ।
तदभावे तु पत्राख्यं तस्य पत्राणि कारयेत् ॥७२॥
यामं यामं तु तन्मर्द्यं द्रव्येषु नवसु क्रमात् ।
तिलतैले बलाक्काथे चूर्णतोये कुलत्थजे ॥ ७३ ॥
काञ्जिके कदलीतोये दुग्धे कूष्माण्डजद्रवे ।
अजादुग्धे च तत्तालं संशुद्धं दोषवर्जितम् ॥ ७४ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अशीतिकर्षं चिञ्चाया ग्राह्यं पत्रं सुशोधितम् ।
त्रिंशत्कर्षं हरिडकायां दृढायां तन्निवेशयेत् ॥७५॥
आस्तीर्य्य तालपत्राणि कर्षद्वयमितानि च ।
त्रिंशत्कर्षं पुनः पत्रं स्थापयेत्तालकोपरि ॥ ७६ ॥
सम्पूज्य भैरवादींश्च हण्डीं चुल्ल्यां निवेशयेत् ।
यामं यामं क्रमादग्निं संकुर्यात्पञ्च यामकम् ॥७७॥
पश्येत्तदैकचित्तस्तु कुत्र धूमोऽस्य गच्छति ।
गच्छन्तं धूममालोक्य भस्मना चावरोधयेत् ॥७८॥
एवं तु पञ्चभिर्यामैस्तत्तालं तु मृतं भवेत् ।
पत्रोपरिस्थं युक्त्या च गृह्णीयाद्रविसन्निभम् ॥७९॥
तस्मिन्भाण्डे तु चूर्णानि पत्राण्यन्यानि निक्षिपेत् ।
पुटं दद्यात्पूर्ववच्च एवं चार्कदिनावधि ॥ ८० ॥
तत्तालं जायते दिव्यं सर्वरोगनिकृन्तनम् ।
रक्तिकायाः सप्तमात्रा तालकस्य सुसंमितिः ॥८१॥

हरताल दो प्रकार का होता है। एक तबकिया, दूसरा गोबरिया। तबकिया हरताल के पत्ते बनवाकर एक-एक पहर तक उन पत्तों को क्रम से तिल के तेल में, बरियारा के काढ़ा में, चूना के पानी में, कुलथी के पानी में, काँजी और केले के पानी में, दूध में, कुम्हड़ा के पानी में और बकरी के दूध में घोटे। इस प्रकार शुद्ध किया हुआ हरताल निर्दोष हो जाता है। ७२–७४। अस्सी कर्ष (बीस पल) इमली की पत्ती लेकर उसमें से ३० कर्ष पत्ती मजबूत हाँडी में बिछाकर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उस पर दो कर्ष हरताल के पत्र बिछावे। उन पत्रों के ऊपर तीस कर्ष और पत्ती बिछा दे। उसके बाद भैरव आदि देवताओं की पूजा करके वह हाँडी चूल्हे पर चढ़ावे और क्रम से एक-एक पहर खूब तेज पाँच प्रकार की अग्नि से आँच दे। ७५–७७। उस समय सावधानी से देखता रहे कि उसका धुआँ किसी तरफ़ निकल तो नहीं रहा है। यदि किसी तरफ़ से धुआँ निकलता हो तो उसे राख से ढक दे। ७८। इस प्रकार पाँच पहर तक आँच देने से हरताल भस्म हो जाता है। पत्र के ऊपर स्थित, सूर्य के समान चमकता हुआ हरताल युक्ति से उठा ले। ७९। फिर उस हाँडी में बाकी हरताल के पत्र और इमली के पत्ते का चूर्ण रखकर पहले की तरह पुट दे। इस प्रकार बारह दिन में वह हरताल शुद्ध होकर सब रोगों का नाश करता है। उस हरताल की एक रत्ती में सात मात्रा होनी चाहिए। ८०–८१।

हरताल के अनुपान की विधि

प्रिये ऽधुनैव वक्ष्येहं तालकस्यानुपानकम्।
हरिताले तु संसिद्धे हरिणा किं प्रयोजनम्॥ ८२॥
सर्वरक्तविकारेषु देयमाम्रहरिद्रया।
अल्पक्ष्वेडाजाजिकाभ्यामपस्मारविनाशनम्॥८३॥
समुद्रफलयोगेन जलोदरविनाशनम्।
देवदार्वीरसैर्युक्तं भगन्दरहरं स्मृतम्॥ ८४॥

अब हरताल का अनुपान कहते हैं। इस प्रकार हरताल के सिद्ध हो जाने पर हरि से क्या प्रयोजन है?। ८२। सब प्रकार के रुधिर-विकार में आमाहल्दी के साथ हरताल देना चाहिए। थोड़े विष और जीरा के साथ देने से मृगी रोग नष्ट हो जाता है। ८३।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

समुद्रफल के साथ देने से जलोदर, देवदारु और हल्दी के साथ देने से भगन्दर रोग नष्ट हो जाता है। ८४।

मैनसिल शुद्ध करने की विधि

पचेत्त्र्यहमजामूत्रे दोलायन्त्रे मनःशिलाम्।
भावयेत्सप्तधा पित्तैरजायाः सा विशुद्धयति ॥८५॥
घृतयुक्ता व्रणं हन्ति मलं च त्रिफलायुता।
वंशानुपानाद्धरते कफं चापि मनःशिला ॥ ८६ ॥

मैनसिल को तीन दिन तक बकरी के मूत्र में, दोलायन्त्र में पकाकर बकरी के पित्ते से सात बार भावना दे, तो वह शुद्ध हो जाता है। ८५। घी के साथ शुद्ध मैनसिल देने से घाव शीघ्र भर जाता है। त्रिफला के साथ सेवन करने से मल और वंशलोचन के साथ सेवन करने से कफ का नाश हो जाता है। ८६।

खपरिया शुद्ध करने की विधि

दोलायन्त्रेण सप्ताहं मूत्रवर्गे रसं पचेत्।
तच्छुद्धं नेत्ररोगाणां नाशकं त्रिफलायुतम् ॥ ८७ ॥

अब खपरिया शुद्ध करने की विधि बतलाते हैं। मनुष्य अथवा गाय के मूत्र में सात दिन तक दोलायन्त्र में पकाने से खपरिया शुद्ध हो जाती है। त्रिफला के साथ इसका सेवन करने से आँखों के सब रोग नष्ट हो जाते हैं। ८७।

उपरस शुद्ध करने की विधि

त्रिक्षारैर्लवणैर्भाव्या अम्लवर्गैस्ततः पचेत्।
दिनं तूपरसाः शुद्धा जायन्ते दोषवर्जिताः ॥ ८८ ॥
रसाभावे प्रदातव्या उक्ता उपरसा इमे।
सेविता बहुकालं ते सर्वतः कुर्वते गुणम् ॥ ८९ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सज्जी, सुहागा, जवाखार, सेंधानमक और अम्लवर्ग के साथ एक दिन भावना देकर एक दिन दोलायन्त्र में पकाने से सब उपरस शुद्ध और निर्दोष हो जाते हैं। ८८। रसों के अभाव में उपरसों का प्रयोग करना चाहिए। अधिक दिनों तक सेवन करने से उपरस भी बहुत गुण करते हैं। ८९।

रत्नों की मारण-विधि

हिङ्गुसैन्धवसंयुक्ते क्षिपेत्क्वाथे कुलत्थजे।
तप्ततप्तं पुनर्वज्रं भवेद्भस्म त्रिसप्तधा॥ ९०॥
श्रेष्ठं वज्रं ततो हीनगुणमन्यच्च कीर्त्तितम्।
सेवितं सर्वरोगघ्नं बलपुष्टिविवर्द्धनम्॥ ९१॥

अब रत्नों की मारण-विधि कहते हैं। हीरा को बारम्बार तपाकर हींग और सेंधानमक के साथ कुलथी के काढ़ा में इक्कीस बार बुझाने से हीरा भस्म हो जाता है। इसी विधि से दूसरे रत्नों की भी भस्म बनाई जाती है। ९०। रत्नों की भस्म में सबसे बढ़कर हीरा की भस्म है। अन्य दूसरे रत्नों की भस्म इसकी अपेक्षा कम गुणदायक है। हीरा की भस्म सेवन करने से सब रोग नष्ट हो जाते हैं, शरीर पुष्ट होता है और बल बढ़ता है। ९१।

विषों के शुद्ध करने की विधि

गोमूत्रे त्रिदिनं स्थाप्यं विषं तेन विशुद्ध्यति।
रक्तसर्षपतैलाक्ते तथा धार्यं च वाससि॥ ९२॥
ये गुणा गरले प्रोक्तास्ते स्युर्हीना विशोधनात्।
तस्माद्विषं प्रयोगेषु शोधयित्वा प्रयोजयेत्॥ ९३॥

अब विषों के शुद्ध करने की विधि कहते हैं। विषों को तीन दिन तक गोमूत्र में भिगोकर लाल सरसों के तेल से भीगे हुए कपड़े

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

में लपेट कर रख दे। इस प्रकार तीन दिन रखने से विषों के दोष कम हो जाते हैं। इसलिए विषों को शुद्ध करके काम में लाना चाहिए। ९२–९३।

उपविषों के शुद्ध करने की विधि

पञ्चगव्येषु संशुद्धदोषाण्युपविषाणि च।
विषाभावे प्रयोज्यानि विषकार्यकराणि च ॥९४॥
न विषं विषमित्याहुर्जयपालो विषमुच्यते।
शोधितोऽयं विरेकेषु चमत्कृतिकरः परः ॥ ९५ ॥

पंचगव्य द्वारा शुद्ध किये हुए उपविषों को विषों के अभाव में देना चाहिए। ये भी शुद्ध विष के समान गुणदायक हैं। विषों को विष न समझो, क्योंकि अशुद्ध जमालगोटा विष है, किन्तु शुद्ध करने पर वही जमालगोटा दस्त लाने में अपना चमत्कार दिखाता है। ९४–९५।

पञ्चगव्येषु संशोध्य दूरीकुर्याच्च वल्कलम्।
ततोऽम्लवर्गे दशधा क्षारवर्गे त्रिधा पुनः ॥ ९६ ॥
कन्याद्रवे चाम्लभस्मजले चैवं विशोधयेत्।
एवं शुद्धस्तु जयपालो वान्तिदाहविवर्जितः ॥९७॥

उसका छिलका उतारकर पंचगव्य में शोधकर अम्लवर्ग में दस बार, सज्जी, सुहागा और जवाखार में तीन बार और घीकुवार के रस में तथा इमली के चूर्ण के जल में तीन-तीन बार शुद्ध करे, इस प्रकार से शुद्ध किया हुआ जमालगोटा वमन और दाह के दोषों से निर्दोष होकर लाभदायक होता है। ९६–९७।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मन्दोदरि तवाख्यातं यन्मया शिवतः श्रुतम् ।
एतज्ज्ञात्वा वल्लभया त्वया यत्नो विधीयताम् ॥९८॥
एवमुक्त्वा तु भैषज्यरहस्यं स दशाननः ।
सायं सन्ध्याविधिं कर्त्तुमुत्थितो मन्दिरं ययौ ॥९९॥
सुयोग्यं निजगेहस्य सुखकार्यं कुरु प्रिये ।
अहं सन्ध्याविधानार्थं त्वथ यामि नदीतटम् १००

रावण ने कहा—मन्दोदरि, मैंने शिवजी के मुँह से जो सुना था वह तुमको बतला दिया । अब तुम यथोचित उपाय करो । ९८ । इस प्रकार रावण मन्दोदरी से वैद्यक शास्त्र की गुप्त बातें कहकर सायंकाल की संध्या करने के लिए मन्दिर को चला गया । ९९ । चलते समय उसने मन्दोदरी से फिर कहा—हे प्रिये, मैं संध्या करने के लिए नदी के किनारे जाता हूँ और तुम गृहसम्बन्धी सुख-साधन काम करो । १०० ।

इति

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

टीका की समाप्ति

युग्मयुगाङ्कशशाङ्कमिताब्दे
स्वङ्कतिथौ च मृगाङ्कसुवारे ।
कार्त्तिकशुक्लदले विशदार्थः
शुक्लकृतः परिपूर्तिमगाद्वै ॥ १ ॥

पुस्तकत्रयमाहृत्य ग्रन्थस्य बहुयत्नतः ।
शुद्धिः कृता यथाशक्ति बहुग्रन्थान्विलोक्य च ॥ २ ॥
भवेदेवापि चेदत्र मच्चापल्यं पदे क्वचित् ।
तथापि शोधनीयं तत्क्षमासारा हि वै बुधाः ॥ ३ ॥
विस्मृतिर्मे न द्रष्टव्या द्रष्टव्यश्च परिश्रमः ।
दोषत्यागो गुणादानं महतां लक्षणं मतम् ।
अतः कृत्वा कृपां सर्वे बुधा मां क्षन्तुमर्हथ ॥ ४ ॥
श्रीगणेशं शिवं साम्बं नत्वा देवांश्च सर्वशः ।
अहं तु वैद्यवर्याणां पूजार्थं योगरोचनम् ।
आरोग्यदीप्तिकृद्वैद्यास्तिलकं कर्तुमुद्यतः ॥ ५ ॥

शुक्ल देवीसहाय.

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वैद्यक शास्त्र की उत्तमोत्तम पुस्तकें

नाम पुस्तक	मूल्य
[भाषाटीकासहित]	
अगदतन्त्रप्रकाश ...	=)॥
अर्कप्रकाश (उर्दू हिन्दी)	।≡)
भावप्रकाश तीसरा खंड छप रहा है	
भैषज्य-रत्नावली ...	५)
माधवनिदान सजिल्द ...	२)
वंगसेनसंहिता	६)
बृहत्पाकावली	॥)
वैद्यजीवन	।-)॥
स्वस्थ पुरुष	=)॥
हंसराजनिदान	१)
शार्ङ्गधर	२॥)
अर्कप्रकाश	॥।)
चरकसंहिता ...	७॥)
[केवल भाषा में]	
अमृतसागर (सजिल्द)	२॥)

नाम पुस्तक	मूल्य
इलाजुलगुरबा	१)
औषध-रत्न-माला ...	।)॥
औषध-पीयूष	१॥)
कवि-तरंग	।≡)
गद-तिमिर-भास्कर ...	६)
चिकित्सोपदेशिका ...	१)
दिल्लगनचिकित्सा ...	।-)
देहात की सफ़ाई ...	)॥
निघंटु-रत्नाकर	६॥)
निघंटु मदनपाल ...	॥।≡)
रसविनोद	१)
वैद्य-प्रिया	१)
वैद्य-मनोत्सव	-)॥
औषध-संग्रह-कल्पवल्ली ...	≡)॥
हयशालहोत्र	।)
मानवशरीररहस्य (दोनों भाग)	५)

मिलने का पता—

मैनेजर—बुकडिपो, नवलकिशोर प्रेस,

हज़रतगंज लखनऊ.